

अतिक्रमण

(मैथिली कथा संग्रह)

तारानन्द वियोगी

प्रकाशक

मित्रम् प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ATIKRAMAN

(MAITHILI STORIES)

BY

DR TARANAND VIYOGI

Price - [illegible]

प्राक्-चर्चा

ई प्राक्-कथन नहि, प्राक्-चर्चा थिक, किएक तँ एहिमे मैथिलीक मर्मस्पर्शी कथाकार श्री अशोक आ मर्मवेधी आलोचक श्री मोहन भारद्वाजक सङ समय-समय पर चलल चर्चा-परिचर्चाक किछु बात सेहो समाविष्ट अछि ।

आजुक मैथिली कथा आजुक हाल-चाल कहैत अछि, आजुक समाचार सुनबैत अछि । समाचार एकेटा अछि—युधिष्ठिर मारल गेलाह आ दु:शासन दुर्योधन राज कए रहल अछि । मोहन भारद्वाज आजुक कथाकेँ आजुक स्थिति पर कएल गेल टिप्पणी कहैत छथि । बात ठीके, परन्तु 'टिप्पणी' कहब कथाकेँ हलुक कए बूझब होएत । हरिमोहन झाक फुलाएल कथाकेँ टिप्पणी कहि सकैत छिअनि, तारानन्द वियोगीक फड़ल कथाकेँ से कहब समीचीन नहि होएत । एहि अतिव्याप्ति दोषकेँ दूर करक हेतु ओ आगाँ जोड़ैत छथि—मूल प्रश्न कथाक विषय वस्तुक नहि अछि; कथानक मे विविधता आएब सेहो मुख्य बात नहि थिक; मुख्य बात थिक आजुक जीवनक विद्रूपता आ विसंगतिकेँ कथाक माध्यमे देखार करब । श्री अशोकजीक कहब छनि

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मर्यादा, आदर्श, लक्ष्य-सभक अतिक्रमण भए गेल अछि । लोक मध्य विकट अनरमारि बजरल अछि । तकरे रनिङ कमेण्टरी थिक वियोगीजीक ई अतिक्रमण ।

परन्तु केवल 'आँखों देखा हाल' सुनाए देने कथा-कारक दायित्व समाप्त नहि भए जाइत छैक । कथाकार एक मनुख सेहो होइत अछि आ मनुखजातिक एहि कुकुरकटाउझ वा अन्हरमारि मे निश्चय ओहो एकटा पार्टी नहि तँ सहभागी अवश्य होइत अछि । वियोगीजी एहि सहभागिता सँ वियुक्त नहि भए सकैत छथि । वियुक्त होएबौक नहि चाहिअनि हुनका एहि विकट संकटक सामना सेहो करबाक छनि । **अतिक्रमण** मे आक्रमण-प्रत्याक्रमणे टा नहि अछि । एहिमे कथाकार क चेतना आ विवेक सेहो कतहु-कतहु उषाक लाली जेकाँ चमकैत अछि जे पाठकक दृष्टिकेँ अवश्य आकृष्ट करत । अतिक्रमणक विविध चरित्र सभ मे आस्था अछि, आशा-विश्वास अछि, संघर्षक उद्दाम चेतना अछि, विषमता-विसंगति मेटाए समरस समाज स्थापित करबाक दूर दृष्टि अछि, जीवनक प्रति ममता अछि, प्रबल जिजीविषा अछि । इएह सभ गुण चरित्रसभकेँ स्मरणीय बनबैत अछि । 'हमर सीताराम' क सन्तजी, 'अन्तर' क सर, 'उद्दीपन' क ढोढ़ाइ, 'इजोरिया मे सिङरहारक' राजवंशी जी, 'झंझटि' क नायिका, 'आवागमन' क टेंगर मंडल सभ एकसँ एक जीवन्त लगैत अछि । अधिकतर चरित्र अपन अस्मिता मे जीबैत अछि, सभक अपन-अपन अभिज्ञान छैक, एहन क्षमता छैक जे ओकरा केओ मारि नहि सकैत अछि । एहने चरित्रसभक माध्यमें संकटक सामना आ आक्रमण प्रत्याक्रम सम्भव अछि से बात वियोगी जी नीक जकाँ जनैत छथि । एहने चरित्रसभक प्रति कथाकारकेँ आत्मीयता आ सहानुभूति छनि सेहो बात स्पष्ट भए जाइत अछि ।

जाहि क्षण मे हमरा लोकनि जीबैत छी आ जाहि क्षण मे अतिक्रमणक कथा सभ लिखल गेल तकर एकटा विचित्र विशेषता छैक, विशेष कए देशक किछु भाग मे। जँ अहाँकेँ कोनो व्यक्तिक मतामत वा मानसिकता जनबाक हो तँ ओहि व्यक्तिक धर्म आ जाति पूछि लिऔक, अहाँकेँ बहुत प्रश्नक उत्तर ओहीमे भेटि जाएत । ततबे नहि, अहाँक कोनहु कृतिक आलोचना मे अहाँक जाति-धर्मकेँ आधार बनाए लेल जाएत। उदाहरण हम अपनहु छी । हमर कृतिक किछु समीक्षा मे हमर 'सोति होएब' सेहो एकटा फैक्टर भेल अछि । ई बड़ प्रसन्नताक बात थिक जे **अतिक्रमणक** कथाकार गन्दगी केँ गीजैत-मथैत रहितहुँ ओहि गन्दगी सँ कतहु लिप्त नहि भेलाह अछि—ठीक ओहिना जेना पानि मे रहितहु पुरैनिक पात भीजैत नहि अछि। हिनक एहि गुण पर भारविक एक श्लोक मन पड़ैत अछि—**विकार हेतौ सति विक्रियन्ते** येषां न चेतांसि त एंव धीराः । अर्थात् विकृत परिवेशहुमे जकर चित्त विकृत नहि हो से धीर (स्थित धी) थिक ।

ओझराएल वा गोंगिआएल कथा हम दू-दू तीन-तीन बेर पढ़ने बुझैत छिऐक । वियोगीजीक कथा हमरो सन लोककेँ दू बेर नहि पढ़ए पड़ैतैक । एके बेर पढ़ने ओ तेहने छाप दए देत जे झट दए मेटाएत नहि । हिनक लेखनी सुखप्रसवा अछि, ओ

कोनो तथ्य वा भावकेँ बेसी काल गर्भमे छेकिकेँ नहि रखैत अछि, तोतराइत नहि अछि। हिनक बोल मे प्रसंगानु रूप ऊष्मा आ ऊर्जा छनि । सम्मुख युद्ध लेल चुनौती देबा मे हिनक बोल बेस मारूख आ महुराएल तीर छोड़ैत अछि । प्रयोजन अछि जे तीर समधानिकेँ छोड़ल जाए, लक्ष्यवेध कए सकए, एकोटा निशान चूकए नहि; ऊर्जाक वृथा व्यय नहि हो ।

भाषाक विषय मे हमर विचार बड़ संकुचित अछि । अपनहु बूझि पड़ैत अछि जे हम उनटा धार बहएबाक प्रयास की करब, छुच्छे कामना करैत छी । हमर कसौटी पर आङुर पर गनल लोक सए नम्बर पाबि सकैत छथि । तैओ वियोगीजीकेँ, हम पास मार्क अवश्य देबनि । विश्वास अछि जे हमरा छोडि आर सभ पाठक भाषा पर हिनका नीक नम्बर देतनि--शब्दक चयन मे, वर्ग-भाषाक अनुकृति मे आ प्रांजल वाक्य-विन्यास मे । वियोगजी संस्कृत भाषा नीक जकाँ जनैत छथि आ ताहिसँ मसाला लए, अपन भाषामे बङला, असमिया आ ओड़िआक लेखक जकाँ, चमत्कारक पुट दए सकैत छथि । ओना कालक प्रवृत्ति निम्नगामिनी छैक, तें मूर्खक भाषा अनुकरणीय भए गेल अछि आ पण्डितक भाषा निन्दनीय । बङला मे ई हाल नहि छैक । अस्तु!

अतिक्रमण वियोजीक पहिल कथा-संग्रह थिक । सगर राति दीप जरए मे हिनक कथा हिनका मुहें सुनैत रही । ओहिमे दू चमत्कार भेटए—एक पढ़बाक चमत्कार आ दोसर स्वयं कथाक चमत्कार । **श्वेतपत्र** क सम्पादक रूपमे सेहो हिनका देखल । हिनक किछु गजल आ लघु कथा सेहो आकर्षक लागल । मुदा प्रस्तुत संग्रह मे हिनक बहुत-रास कथा एक ठाम एक तोड़ मे पढ़ला पर हिनक कथाकार सम्पूर्ण छवि आँखिक समक्ष आएल । एतय हिनक एहि कथा-संग्रहक आलोचना वा समीक्षा करब अभीष्ट नहि अछि । एखनहि ई कहि देब खूब समीचीन नहि होएत जे वियोगीजी अपन पहिले कथा-संग्रह मे अपन जीवनक अनुभव केँ पर्याप्त निरपेक्षता आओर निर्वैयक्तिकताक संग उपस्थित कए देलनि अछि तथा व्यापक यथार्थ केँ मर्मवेधी दृष्टिसँ पकड़ि कलात्मक सौष्ठवक संग अभिव्यक्त कए सकलाह अछि । वास्तव मे वियोगी जी एखन एहि दिस डेगे उठओलनि अछि । तथापि हिनक आरम्भ ई विश्वास अवश्य दैत अछि जे ई लक्ष्य दिस बढ़ैत रहताह । मैथिली कथाक एक जीवन्त परम्परा हिनका एहि कथा-यात्रा मे संग दए रहल छनि आ तकर बोध सँ ई उद्भासित छथि । परम्परा-बोध आ अपन जीवन अनुभव दुनू मिलि हिनका आबि तुलाएल संकट सँ लड़बाक ऊर्जा दैत अछि । हमर कामना अछि जे ई अति उत्साह मे आबि अपन मूल्यवान् ऊर्जाक अपव्यय नहि करथि आओर मनुक्खक निरन्तर चलैत संघर्षमे आहुति दैत, प्रतिरोध आ प्रत्याक्रमण सङोर करैत लोककेँ संघर्षक बाट देखबैत आगाँ बढ़ैत रहथि । जहिआ लोक वर्तमान संकटक अतिक्रमण कए जाएत तहिए **अतिक्रमण** क कथाकार सफल बूझल जएताह ।

5 अप्रैल 1997

गोविन्द झा

अनुरोध

'**अतिक्रमण**' हमर कथा सभक पहिल संग्रह थिक । एहि मे एगारह गोट कथा प्रकाशित भ' रहल अछि । एहि संग्रहक लेल ई नाम मान्य कवि-कथाकार-संपादक श्री अशोक चुनलनि अछि, जे कि हमर कथा सभक एक अनुरागी श्रोता-पाठक होइत रहलाह अछि । अशोक जी मानैत छथि जे हम अपन प्रत्येक कथा मे स्थापित मानदण्ड आ स्वयं अपनहि सांस्कारिक पड़ाव सभक अतिक्रमण करैत छी । आगाँ हम आरो मुखर अतिक्रमण करब, सेहो हुनका लगैत छनि । अशोक जी बेजाय नहि कहैत छथि।

'सगर राति दी जरय' नामक कथा-गोष्ठी-अभियान हमरा कथाकार बनौलक । गोष्ठी सभ मे जखन-जखन कथाक पाठ कयल गेल, आलोचक आ कथाकार लोकनिक मध्य कोनो तुमुल कोलाहल मचैत रहल अछि, से मोन पड़ैत अछि । तखन, अशोक जीक बात बेसी प्रासंगिक बुझाइत अछि ।

अपन समाज केँ बुझबाक छटपटी आ परिवर्त्तन केँ गुनबाक आत्मीय चेष्ठा सँ अधिकतर हम कथा लिखैत रहल छी । तें, कलाकृति-निर्माणक लेल अपेक्षित सौन्दर्यपूर्ण रहस्यमयताक अभाव भेटब स्वतः संभावित अछि । अभाव ओहि चतुर सामाजिक-दृष्टिकोणक सेहो भेटि सकैत अछि, जे कि प्रायः मैथिल बुद्धिजीवी लोकनि मे पाओल जाइत छनि । मैथिली प्रेमी बन्धु जनक लेल काम्य भाषा लिखब सेहो हमरा बुते पार नहि लगैत अछि ।

समकालीन मैथिल समाज आइ जाहि परिवर्त्तन आ आत्मसंघर्षक दौर मे अछि, डेग-डेग पर कखनहु हारब आ कखनहु जीतब एकदम्म स्वाभाविक छैक । हमरा लोकनि देखि रहल छी जे 'खन्दानी रईस' लोकनि बेर-बेर हारि रहलाह अछि आ हुनका लोकनिक जीवन-शक्ति निरन्तर कमजोर पड़ल जाइत छनि । नव धनिक वर्ग जे अछि मिथिलाक, सेहो लोकनि परिवर्त्तनक संघर्ष मे अधिक काल हारिये रहल छथि, मुदा ई हारब हुनका लोकनिक जीवनी-शक्ति केँ कमजोर नहि करैत अछि, अपितु एहि वर्ग मे वैज्ञानिक बुद्धिक जागरण करैत अछि । ई वर्ग आइ द्वन्द्व आ दुविधाक स्थिति मे जीबि रहल अछि, कारण ओकर व्यक्तित्वक बुनाबटि मे अप्राकृतिक तत्व, बनाबटीपना आ छदम् मुख्य कारक बनि क' जमल छैक । हँ, जाहि हिसाब सँ वैज्ञानिक बुद्धिक उदय मिथिलाक एहि वर्ग मे भ' रहलैक अछि, हमरा लोकनि आशा क' सकैत छी जे आइ एकर हारब-जीवन मे, अपन भरपूर जीवन जीबा मे हारब-जतेक दारूण अछि, आ आइ एकर जीवन जतेक लयहीन आ उस्सर अछि, काल्हि ततेक नहि रहतैक। भविष्यो मे ई वर्ग हारत, मुदा तहिया एकर हारब एतेक दारूण नहि होयतैक ।

लयपूर्ण आ भरपूर जीवनक आहटि मिथिला-समाज मे आइ जतय सर्वाधिक पाओल जा रहल अछि, ओ मिथिलाक निम्नवर्ग, गरीब समाज अछि, जे नहुएँ-नहुएँ परिवर्त्तनक दौर मे शामिल भ' रहल अछि । तन्त्र आ व्यवस्था एहि वर्गक शत्रु छैक। धर्म सँ ल' क' प्रथा धरि एकरा करबाक कतरब्यौंत छोड़लक नहि अछि । मुदा, साँच थिक जे जीवन जीबाक लालसा आ जीवनी-शक्तिक प्रबन्धन, दुनू वस्तु हमरा लोकनि केँ एहीठाम आबि देखबाक लेल आ सिखबाक लेल भेंटैत अछि । हम देखैत छी जे डेग-डेग पर हारि खयबाक एहि जटिल समय मे मिथिलाक गरीब वर्ग बहुत कम हारि रहल अछि । बहुत छोट-छोट लड़ाइ ओ अपना हाथ मे लैत अछि (प्रबन्धन-कौशल देखू) आ जितैत जाइत अछि । एकर आत्मविश्वास– जीवन केँ जीवनी शक्ति सँ कुंडाबोर क' जीबाक एकर आत्मविश्वास दिनानुदिन बढ़ल जा रहल अछि । लयपूर्ण, उल्लासपूर्ण भरपूर जीवनक संभावना जँ भविष्य मे छैक, तँ से एही वर्गक आस पर छैक । तें, हमरा लगैत अछि जे मिथिलाक जँ कोनहु भविष्य छैक तँ से एही वर्ग केँ मुख्यधारा मे शामिल होयबा पर निर्भर छैक ।

मुदा, दोसर दिस ईहो देखि रहल छी जे एहि वर्गक जे भाग नवधनिक वर्ग मे शामिल होइत जाइत अछि, व्यक्तित्वक ओही बनाबटीपना आ छदम् सँ ग्रस्त भेल जाइत अछि । यैह भूमंडलीकरण, उपभोक्तावाद आ धार्मिक पुररुत्थानवाद क खतरा छिऐक ।

कहब आवश्यक नहि जे समाज केँ बुझबाक हमर छटपटी मे आ परिवर्त्तन केँ गुनबाक हमर चेष्टा मे ई प्रश्न सभ अफरा-तफरी मचबैत रहल अछि । समाधान ताकबाक माथापच्चीक तुलनामे स्थितिक प्रति सजगता बेसी उचित थिक, खास क' एहि जटिल समय मे आ ताहू मे खास क' कथाकारक लेल ।

प्रसंगवश, एहि संग्रह मे संकलित कथा सभ मौलिक रूप सँ कल्पित अछि आ कोनहु व्यक्ति वा संस्था केँ हानि पहुँचेबाक वा बदनाम करबाक मंशा सँ नहि लिखल गेल अछि । कथा सभ मे जँ किनको अपन नाम, गाम, विचार अथवा जीवनक कोनहु घटनाक साम्य बूझि पड़नि तँ तकरा संयोग-मात्र मानबाक चाही । हँ, कोनहु कथा जँ संवेदनाक स्तर पर किनको अपन कथा जकाँ लागनि तँ से लेखकक लेल सन्तोषक बात होयत ।

अन्त मे, एहि पोथीक लोकार्पण महिषी–कथागोष्ठी 'सगर राति दीप जरय' क अवसर पर भ' रहल अछि । यैह एहि रचना-कर्मक कारण अछि आ यैह एकर लोकार्पणक मंच । से, कथा-गोष्ठी अभियानक समस्त रचनाकार लोकनि,जनिका प्रयास सँ मैथिली कथा-साहित्य मे व्याप्त शून्य आ विचार-हीनता घटल अछि, केँ हमअपन ई पोथी सविनय-ससम्मान समर्पित करैत छियनि ।

तारानन्द वियोगी

साहेबगंज, 11.3.97

अनुक्रम

❒

हमर सीताराम

जँ बैलून-सन कोनो लुजगुज पदार्थ होइत तँ एतेक लोकक कसमकसमे फूलि क' कुप्पा भ' गेल रहैत । मुदा, जीप नामक एहि निजीव यन्त्रकेँ कोनो दुख, कीनो तकलीफ नहि छल । दुख छलैक जीपमे बैसल लोककेँ, केयो हिलियो-डोलि नहि सकैत छल। टाङ सरियेबाक लेल केयो आफन तोड़ि रहल छल । ककरो पीठ निश्चेष्ट भेल जा रहल छलैक । केयो मूड़ी सोझ करबाक लेल बगल बलासँ नेहोरा क' रहल छल। जीपमे जे एक महिला बैसलि छलि, ओकर पिहुआ नेना झौहरि क' रहल छलैक ।

एकटा पढ़ल-लिखल नौजवान अपन आक्रोश व्यक्त करैत बाजल, 'साला ई बिहार सब दिन बिहारे रैह गया ।' एकटा सेठ-टाइप बबुआन अपन विचार देलक, 'ई सब इस लाइने का महिमा है । साला करें भी तो क्या करें ?' गाड़ीमे बैसल एकटा बंगाली बाबू अपन मोनक बात व्यक्त कयलनि, 'ई सब चीज अगर हमारा एस्टेटमे होता तो भीषोण हो जाता, भीषोण ।' जीपहिमे एक दिस नुड़िआयल-मोचरायल बैसल छलाह एकटा सन्तजी । सभक बात चुपचाप सुनि क' ओ बजलाह-सीताराम सीताराम !!

सन्तजी बहुत विपन्न स्थितिमे छलाह । हुनका देह पर खद्धर केर एकटा पुरान, ठाम-ठाम चिरकल कुरता छलनि, आ ऊपरसँ चिक्कट मैल एकटा फटलका ओढ़ना ओढ़ने छलाह । मौसम बहुत सर्द रहैक । तीन दिनसँ सुरुज नहि उगल छलाह । कलेजा चीरि दैबला ठंढा बसात बहि रहल छलैक । आ' कुहेसक कारण रस्ता नहि सुझैत रहैक ।

सन्तजी बजलाह, 'सीताराम-सीताराम ।' हमर ध्यान हुनका दिस गेल । हुनका बयस पचास-पचपनक रहल होयतनि । अधिकांश केश पाकि गेल रहनि । दाढ़ी बढ़ल रहनि । ललाट पर बेस भरिगर चानन-टीका धारण कयने आ आँखिमे निर्लिप्त-निरपेक्ष दृष्टि राखने सन्तजी पहिले नजरिमे हमरा किछु खास बुझयलाह ।

सन्तजी फेर बजलाह, 'सीताराम-सीताराम ।' एहि बेर हम चौकलहुँ । ई तँ 'जय श्रीराम' केर जबाना थिक । हमरा मजाक फुरल । भेल जे पुछिअनि, 'की हौ बाबा, मस्जिद नहि ढाहबाक छह जे सीताराम-सीताराम रटै छह ? सीताकेँ संग राखि क' जँ रामजी मियाँ मार' बहरैताह, तखन तँ भेटि गेलनि विजय !'

सन्तजीकेँ हम पुछलियनि नहि । इच्छा भेल रहय जे पुछियनि । मुदा, हुनका स्वरमे अथाह दर्द भरल रहनि । 'सी' सँ ल' क' 'म' धरि एक दारुण पीड़ाक जीवन्त महाकाव्य-सन ओ हमरा बुझयलाह । सन्तजीक सूखल मुह, जाड़ें कठुआयल देह आ उदास आँखि ओहि पीड़ाकेँ मूर्त्तिमान क' रहल छलैक ।

एक गोटे चिकरल, 'हो मरदे ड्राइबर सहैब, आबो गाड़ी खोलबहक की नै ? हम्में सब बेमौत मरि रहल छी ।'

जवाबमे ड्राइबर एकटा मुस्टंड नौजवानकेँ कहलकै, 'रे मुसना, चल बुक कर ।'

मुसना बेरा-बेरी सभ पसिंजरसँ मासूल तसील' लागल आ बाजल,'सब कोय खुदरा पैसा निकालकर दीजिये ।'

हम हिटलरक अबाज नहि सुनने छी । मुदा जानल अछि जे ओ बड़ उजड्ड भाषामे, अपन शरीर-बलसँ दशगुण शक्ति अपन वाणीमे भरि क' आदेश दैत छल। मुसनाक अबाज एन-मेन तहिना लागल । हम सोचलहुँ जे अपन-अपन गाड़ीक खलासीगीरी करैत सभ केयो कतहु-ने-कतहु हिटलरे होइत अछि ।

आब, ई तँ संभव छलैक नहि जे सभ कियो खुदरे दितिऐक । मुसना बमकल। लोक सकदम्म ।

लोक सीदित छल । मासूल निकालबाक क्रममे जे उकस-पाकस शुरू भेलैक, ताहिसँ आओर तकलीफ बढ़ि गेलैक । मुदा लोक नचार । हर हालतमे लोककेँ एही गाड़ीसँ अथवा एही परिस्थितिमे कोनहु आन गाड़ीसँ जेबाक बाध्यता छलैक ।

बिहार पुलिसक एकटा सिपाही मुसना दिस ही-ही क' कठहँसी हँसैत बाजल, 'हौं भैबा, पइसा तँ हमर भितरका बटुआमे छह । चल' आगू देबह । कोय दिकतो ?'

'नै हजूर, काय दिक्कत नै ।' मुसनो हँस' लागल । मुसनाक ओहि हँसीकेँ देखि क' बंगाली बाबू आँखि मिचमिचब' लगलाह । धोधिबला बबुआन कोनहु बहन्नें दोसर दिस ताक' लगलाह । जीन्सबला नौजवान क्रोधित भेल तँ अपने थूककेँ अपनहि घोंट' लागल । सन्तजी बजलाह, 'सीताराम-सीताराम ।'

मुसनाक ओही हँसीक प्रभाव रहल होयत जे महिलाक कोरमे चुपचाप पड़ल पिहुआ नेना आफन तोड़' लागल । ततेक जोरसँ कानल पिहुआ जे सभक ध्यान ओकरे दिस चलि गेलैक । ड्राइबर दिस तकैत मुसना बाजल, 'कहि दै छियह गुरूजी, बच्चाबाली औरतिया सबकेँ गाड़ीमे नै चढ़ायल करहो ।'

दहिना बगलक सीट पर एक अथबल बूढ़ा बैसल छलाह । बड़ी कालसँ ओ सुकुर-पुकुर क' रहल छलाह । तकर अर्थ लागल तखन जखन मुसना हुनकासँ पाइ मँगलकनि आ ओ अत्यन्त दीनतापूर्वक एकटा पचटकही बहार क' मुसना दिस बढ़बैत बजलाह, 'हौ बाबू, हमर पकेटमारी भए गेलह । एतबे पैसा छह । ल' लैह ।'

मुसना गरजल, 'हम्मे की खराँत बाँटै छियै हो बूढ़ा ! पकेटमारी भए गेलह तँ गाड़ी पर शानसँ आबि कए बैठलहो किए ? बापक गाड़ी छियह ?'

अथबल वृद्ध अवश्शे दुर्दिनक मारल रहल हेताह । सभ देखलक जे मुसनाक सुभाषित सुनि क' ओ कान' लगलाह । हुनक दुनू आँखि डबडबा गेल आ बुन्ने-बुन्न नोर चुब' लागल ।

मुसना अनघोल कर' लागल, 'काँदने-पादने किच्छ नै होइबला छह । पैसा नै छह तँ गाड़ी खाली करह ।'

ड्राइबर बहरायल आ थोस-थाम्ह कयलक । निर्णयानुसार अथबल वृद्धकेँ सीट खाली कर' पड़लनि आ ओहि अकादारुन जड़कालामे हुनका जीपक छत पर बैसा देल गेलनि ।

एकाध गोटेसँ मासूल तसीलब एखनहु बाँकी रहल होयत कि पाछाँ सँ कियो सोर पाड़लैक, 'रे मुसना, दौड़ि कए आ रे । माल खतम भेलौ ।'

मुसना मलकि क' ओम्हर पड़ायल । लोक काहि कटैत रहल । महिलाक कोरक पिहुआ आब चुप भ' गेल छल, आ एम्हर सन्तजी मूड़ी निहुरा क' किछु सोचा-विचारी क' रहल छलाह । हुनक सोचमे जरूरे सीताराम रहल हेताह ।

गाँजाक दम मारि क' मुसना घुरल तँ बड़ प्रसन्न छल । बाँकी बचल लोकसँ ओ बिनु एक शब्द बाजने, हाथ पसारि क' पाइ माँगलक । एक गोटे पाइ देलकैक। सन्तजीक पार अयलनि । सन्तजी बजलाह, 'हो सीताराम, चलह आगू । हमहूँ सिपाहिये सहैबकेँ जरें पैसा देबह ।'

मुसना निश्चिन्त भ' गेल आ बाजल--'चलह गुरूजी, इस्टाट मारह ।'

पाँच-सात मुस्टंड खलासी सभक धक्कासँ गाड़ी खुजि गेलैक आ टुघर' लागल।

मुसना गाड़ीक पाछूमे लटकि गेल आ चिकरि क' बाजल-जय श्रीराम ।

नहुएँ-नहुएँ ससरैत गाड़ी अपन गन्तव्य दिस विदा भेल । लोक दम्म साधने बैसल भव-सागर-पारक मधुर कल्पनामे अपन तकलीफकेँ बिसरबाक प्रयास करैत रहल ।

पाछाँमे लटकल मुसना हरेक पाँच-सात मिनट पर एक बेर चिकरय-जय श्रीराम। कखनहु कोनो गाड़ीकेँ अबैत-जाइत देखि क' चिकरय, कखनहु कोनहु स्त्रीकेँ देखिक' चिकरय । ओ उच्चारण करय जय श्रीराम, मुदा ओकरा मुह पर भाव एहन जेना स्त्री-गुप्तांगक वर्णन भाखि रहल हो ।

दसेक किलोमीटर गाड़ी बढ़ि चुकल होयत कि अचानक मुसनाकेँ मोन पड़लैक-एक पसिंजर साला पैसे नै दिया है ! ठाढ़े-ठाढ़ झुकि क' ओ सन्तजीक दिस हाथ बढ़ौलक आ बाजल, 'बूढ़ा, पैसा बढ़ाबह ।'

सन्तजी मासूलक पाइ अपन हाथेमे राखने छलाह । बड़ संकोच आ दीनताक संग ओ एकटा पचटकही मुसना दिस बढ़ा देलनि । मुसना बाजल, 'दू गो टका आउर निकालह ।'

सन्तजी बजलाह, 'हो सीताराम, आब तँ हमरा पैसा नै छह ।'

मुसना बाजल, 'नै छह तँ गाड़ी पर चढ़लह किए ?'

सन्तजी चुप रहलाह ।

मुसना सेहो कनेकाल चुप रहल । फेर जेना एक्कहि बेर ओकरा पित्तगिया उछलल होइक, बताह जकाँ कर' लागल, 'ऐ दढ़ियल, पैसा निकालो ।'

सन्तजी फेर बजलाह, 'हो सीताराम, आब जे करह, पैसा तँ हमरा नै छह ।'

मुसना बमकल, 'मादरचोद बुढ़बा, हमको सिखाता है ? पैसा निकालेगा कि नहीं?'

आ, ओ सन्तजीक गट्टा ध' लेलक ।

सन्तजी हाथ छोड़ेबाक चेष्टा कयलनि तँ मुसना आरो उग्र भ' गेल । ओ सन्तजीक दाढ़ी ध' लेलक आ नोच' लागल । तखन ओ सन्तजीक कान पकड़लक आ तीर' लागल । सन्तजी फेर प्रतिवाद कयलनि तँ ओ थापड़े-थापड़ सन्तजीकेँ मार' लागल।

हमरा लेल आब हद्द भ' गेल छल । हमरा लागल जे आत्मबलिदानक उचित अवसर इयैह थिक । एहि ठाम अवश्य किछु कयल जयबाक चाही । हमरा लेल ई बात भयनाक दुखद छल जे गाड़ीमे बैसल लोक सभ टुकुर-टुकुर ताकि रहल छल आ चुप छल ।

अपन सक्कत हाथसँ हम मुसनाक गट्टा ध' लेलहुँ आ ओकरा उनटाब' लागलिऐक । मुसना बाप-बाप कर' लागल । हमर मुहसँ धाराप्रवाह गारि बहराय लागल। मुसना चिकरल, 'हौ बाप, हौ गुरूजी, गाड़ी रोकह ।'

एक झटकाक संग गाड़ी रुकि गेलैक आ ड्राइवर पुछलकै, 'की बात छियै रे' ? आ मुसना तकर किछु जबाब दैक, ताहिसँ पहिनहि हम एकदम्म धुरझार बाजब

सुरूह क' देलहुँ, 'ई कोन तरीका छियै हौ जी ! पसिंजरकेँ पैसा नै छै तँ तूँ बरू ओकरा उतारि दहक । लेकिन, तूँ ओकरा मारबहक ? जुलुम करै छह तूँ सब । देखहक तँ । अइ बेचारा बबाजीकेँ तोहर खलासी ओध-बाध कए देलकह हें । जुलुम करै जाइ छह तूँसभ ।'

हमरा एकदम्मसँ लागि रहल छल जे ड्राइबर आ खलासी दुनू हमरा पर एक्के बेर व्रार करत आ ततारि देत । हमरा जखन ई सभ मार' लागत तँ केयो काज नहि देत । संभवतः एही भयसँ हमर स्वर ऊँच भेल जा रहल छल । हमरा ओ रॉड मोन पड़ि रहल छल, जकर उपयोग ई सभ खून-खराबामे कयल करैत अछि । संभवतः इयैह भय हमरा शक्ति द' रहल छल ।

'तूँही कहक ड्राइवर सहैब, ई कोन तरीक भेलै ? हमरो तोरो तँ कोइ माय-बाप छह ने हौ ? एना नै ने होना चाही', हमर बाजब एखन धरि समाप्त नहि भ' रहल छल । ड्राइबर एक बेर हमरा दिस ताकलक । एक बेर सन्तजी दिस ताकलक, जे आतुर दृष्टिसँ ड्राइबरे दिस ताकि रहल छलाह । ड्राइबर एक बेर मुसना दिस सेहो ताकलक । ओकर ताकबामे सर्वशक्तिमान नियन्ताक गौरव रहैक ।

सभ दिस ताकलक ड्राइबर आ ओकरा कतय की भेटलै कहि नहि । ओ बाजल,'पाँच टका देलकौ ने ? भए गेलै । छोड़ि दही ।'

आ, एहि झंझटिक असंभावित निपटारा भ' गेलैक । सन्तजी प्रसन्न भेलाह आ सीताराम-सीताराम रट' लगलाह ।

प्रायः एक घंटाक बाद गाड़ी अपन गन्तव्य पर पहुँचलैक । सभ केयो उतरल।

हम सन्तजी लग गेलहुँ । ओ अपन फटलाही चद्दरिकेँ सरिया क' ओढ़ि रहल छलाह ।

हम पुछलियनि, 'बाबा, कतय जेबहक ?'

ओ बजलाह, 'यैह लगेमे जेबै–बासदेबपुर ।'

हम कहलियनि, 'बाबा, तोहर तँ बड़ गज्जन केलकह । पैसा नै रहह तँ पहिनहि ड्राइबरकेँ किए नै कहि देलहक रहय ?'

ओ बजलाह, 'नै हो सीताराम, पैसा कम नै रहय । सात गो टका पुरल रहय । लेकिन, हमरा मोनमे एगो लोभ पैसि गेलै ।'

हमरा उत्सुकता भेल जे ई कोन लोभ भ' सकैए ! सन्तजी बजलाह, ' कचहरीमे आइ तारीक रहय । भिनसरमे चलय लागलियै तँ पोता बड़ कानय लागलै । कहलकैं जे बजारसँ सिलेठ नेने आबियह । पढ़ै बला भए गेलैहें । बड़ा चंसगर छै । से हो सीताराम, सोचलियै जे दूगो टका बचि जेतै तँ छौड़ाकेँ सिलेठ भए जेतै .....

आ सन्तजीक मुहेठ पर विजय केर इजोत पसर' लागल । हम एम्हर छगुन्तामे रही जे एत्तेक मारि खा क' हमर सीताराम कतेक आत्मतुष्ट छथि । ☐

अन्तर

बहुत शालीनतापूर्वक ओ युवक हमरा कोठलीमे आयल आ बहुत आदरपूर्वक हमरा प्रणाम कयलक । हम ओकर अभिवादनक उत्तर देलिऐक आ ओकरा मुह दिस ध्यानसँ ताकलहुँ ।

ओ युवक एकटा पुष्ट मुस्की मुस्किआयल आ पुछलक, 'हमरा चिन्हलहुँ, सर ?'

हम ध्यानसँ ओकर मुखमण्डल दिस तकलहुँ । ओकरा हम खूब नीक जकाँ चीन्हि नहि सकलिऐक । मुदा, सहज अभ्यासवश कहि देलिऐक, 'हँ-हँ, । किएक नहि चीन्हब? अहाँ तँ मोहल्लाक कर्मठ युवक छी आ अप्पन लोक छी ।'

मुदा ने जानि किएक युवक हँस' लागल । ओकर हँसी हमरा बड़ अनकट्ठल बुझना गेल । ओकर एहन हँसीसँ हम किंचित् अस्वाभाविको भेलहुँ ।

हमरा आग्रहपर युवक कुरसी पर बैसि गेल छल आ पैक कयल गेल सामान सभक मोआयना कर' लागल छल ।

हम चुप्प रही । थोड़ेक कालक बाद वैह पुछलक, 'सुनल अहाँक ट्रान्सफर भए गेल । कहिया जाए रहल छी ?'

'काल्हि गाड़ी पकड़ब ।'

फेर किछु काल चुप्पी पसरल रहल । हमरा अजगुत लागि रहल छल आ ओ युवक जानि नहि किएक हमरा पर हाबी भेल चलि जा रहल छल । हम अपना दिस सँ किछु पूछि नहि पाबि रहल छी । हमरा अनुभव भेल जे हम मशीन बनि गेल छी आ ई युवक अपना इच्छें हमरा चला रहल अछि ।

थोड़ेक कालक बाद फेर वैह बाजल, 'हम अहाँक बहुत आदर करै छी सर । अहाँ विद्वान् आदमी छी आ क्रान्तिकारी सेहो छी । अहाँ-सन लोककेँ हम प्रेरणा-केन्द्र मानैछी ।'

अपन प्रशंसा सुनि हम थोड़ेक आर विनम्र भ' गेलहुँ । मुदा, हमरा विचित्र लागि रहल छल । हम अनुमान नहि क' सकलहुँ जे ई युवक किएक आयल अछि आ हमरासँ की चाहैए । स्थिति एहन बनि गेल छल जे हमरासँ पुछितो नहि बनि रहल छल ।

फेर वैह बाजल, 'अहाँ तँ आब एहि शहरसँ चलि जाएब, फेर शायद अहाँसँ कहियो भेंट होअए नै हुअए । हम किच्छु प्रश्न पूछए चाहैछी आ एकटा रहस्यक गप कहए चाहैछी ।'

उत्सुक होइत हम कहलिऐक, 'पुछू ।'

ओ युवक पुछलक, 'अहाँ सर, भगवान् पर विश्वास करैछी ?'

हमरा लेल ई बहुत स्पष्ट प्रश्न छल, जकरा मादे हम निर्विवाद विचार रखैत छी। हम कहलिऐक, 'नहि । भगवान् पर हमरा विश्वास नहि अछि आ हम मानै छी जे दुनिआमे जतेक विकृति छैक तकर अधिकांश भगवानेक अवधारणाक देन थिक ।'

हमर उत्तरसँ ओ कनिञो विचलित नहि भेल । जेना ओ पहिनहिसँ जनैत छल जे हमर उत्तर इयैह होयत ।

आब ओकर दोसर प्रश्न छलैक, 'आ, भाग्य पर अहाँकेँ विश्वास अछि ?'

'नहि, भाग्य पर किन्नहु नहि, हमरा मात्र पुरुषार्थ आ परिश्रम पर विश्वास अछि। मुदा, ईसभ बात अहाँ किए पूछि रहल छी ?'—आब एहि रहस्यमय युवकक प्रति हमर धैर्य जबाब देब' लागल छल ।

हमर प्रश्न सुनि ओ युवक फेर मुस्किआयल आ निर्धोख बाजल, 'किए पुछैछी, तकर जबाब तँ हम बादमे देब, लेकिन पहिने हम ई प्रार्थना करए चाहब जे पहिने भनें अहाँ जे करैत होइ, आब अहाँकेँ विश्वास करबाक चाही ।'

हम उत्तेजित भ' गेलहुँ 'मुदा किए ? किए हमरा भगवान्पर आ भाग्य पर विश्वास करबाक चाही ? हम सभटा धर्मग्रन्थ पढ़ि चुकल छी, बाउ । पैघ-पैघ ईश्वरवादीलोकनिक तर्क हमरा सहमत नहि क' सकल । आ आब मात्र अहींक कहने हम विश्वास करए लागी ?'

'प्लीज सर ! बहस नहि करू । हमर गप सुनबाक कृपा करू । हँ, एकटा बात आरो । कृपया ई कहू जे अहाँ विश्वास कथी-कथी पर करैछी ?'

'हम बहुत चीज पर विश्वास करैछी । कतेक कहू ? हमरा एहि भौतिक जीव-जगत् पर विश्वास अछि । विज्ञान पर विश्वास अछि । जन-शक्तिपर विश्वास अछि । हम प्रजातंत्र आ व्यवस्था पर विश्वास करैछी । हमरा शब्दक शक्ति पर विश्वास अछि। कतेक कहू, संक्षेपमे इयेह बूझि लिय' जे भगवान्, भाग्य, अन्ध-प्रवृत्ति, छद्म चिन्तन आदिकेँ छोड़ि हम सभकथू पर विश्वास करैछी ।'

हमर गप सुनि क' ओ युवक हँस' लागल । हमरा क्रोध भेल । हम ओकरा

बुझेलिऐक, 'अहाँ खूब पढ़ल-लिखल आ होनहार युवक बुझाइत छी । एना शिष्टाचारकेँ जुनि बोहाउ । हँसू नहि आ हमरा कहू जे ईसभ गप अहाँ किए पूछि रहल छी ?'

ओ युवक कनेक अप्रतिभ भेल आ हाथ जोड़ि लेलक, 'पहिनहि कहलहुँ सर जे हम अहाँक बहुत आदर करैछी । अहाँक प्रति अशिष्ट हम नहि भए सकैछी । मुदा, एकेटा प्रार्थना अछि जे अहाँ आर कथू पर करू नै करू, भाग्य पर अवश्य विश्वास करू ।'

'मुदा, किएक ?'

युवक बाजल, 'हँ कहैछी ।' आ चुप्प भ' गेल । करीब डेढ़ मिनट धरि ओ चुप्प रहल होयत । एहि मध्य हमर मस्तिष्क अजीब खौंझ अनुभव करैत रहल ।

ओ युवक परम आश्वस्त होइत मुह खोललक आ फेर प्रश्ने कर' लागल, 'आठ मास पहिने अहाँक डेरामे डकैती भेल छल ने सर !

'हँ ।' हमरा अचंभा भेल जे ई पुछबाक सम्बन्ध ओहि बातसँ की भ' सकैछ—ई युवक बताहो तँ नहि लगैए ।'

—डकैत की-की सामान ल' गेल ?

—टेप-रिकार्डर, रेडियो,कैमरा, घड़ी आ सात सय टाका ल' गेल । मुदा, ई बात अहाँ किऐ' पुछैछी ? कोन सम्बन्ध ?

—कृपया धैर्य राखू सर, हम सभ बात कहब । अच्छा, ई कहू जे ओ डकैतसभ अहाँकेँ मारबो-पिटबो कयलक ?

—नहि, कोनोटा अभद्र व्यवहार नहि कयलक ।

—कय गोटे छलै ?

—तीन गोटे ।

—सभक हाथमे हथियार रहै ?

—हँ, रिबॉलवर रहै ।

—ओ सभ बाहरेसँ हथियार तानने आएल छल ?

—नहि, ओ सभ आरामसँ आयल । जेना अहाँ आयल छी । बैसल । किछु काल गप-सप कयलक आ तखन हथियार निकालि क' कहलक जे जतेक किमती सामान अछि, से सभ हम दए दिऐक । हम दए देलियै ।

युवक फेर थोड़ेक काल चुप रहल । एम्हर, हमर अन्तःकरण खौलि रहल छल। विचित्र रहस्यमयता हमरा गछाड़ि लेने रहय । हम जेना एकटा अज्ञेय भयसँ आक्रान्त भेल जाय लगलहुँ । डकैतीक राति हमरा भय नहि भेल छल, मुदा जानि नहि किएक एखन होअए लागल छल । ई रहस्यमय युवक आखिर की चाहैए ? किए एतेक गप पूछि रहल अछि ? के थिक ई ? मुदा, हम तँ जेना सम्मोहित भ' गेल रही । हमर

स्वभावो एहन जे घोर अपरिचितोमे मित्रवत् व्यवहार करैत छी । मुदा एखन......

चुप्पीक बाद युवक एक बेर फेर मुस्किआयल आ एक-एक शब्द तौलि-तौलि क' बाज' लागल, 'अहाँ जतेक गप कहलहुँ, हम सभ बात पहिनहिसँ जनैछी सर। ओहि युवकसभकेँ हम चिन्हैछी जे डकैती कयने छल ।'

फेर चुप्पी ।

'मुदा, एकटा बात अहाँ नहि कहलहुँ । डकैत सभ जखन अहाँक कोठलीमे आयल तँ ओहिमे सँ एक गोटे पुछने छल कि ने जे अहाँ ओकरा चिन्हैछिऐ ?'

हमरा ई बात मोन छल । कहलिऐक, 'हँ । पुछने छल ।'

'अहाँ जवाब की देलिऐ ?'

हम अपन मस्तिष्क पर थोड़ेक बल देलहुँ आ निश्चित होइत कहलहुँ, ' हम अपसोच करैत कहने रहिऐक जे नहि चिन्हैत छी ।'

'हूँ । आब कहू सर, अपन स्वभावक प्रतिकूल अहाँ एहन उत्तर किए देलिऐ ? अहाँ तँ घोर अपरिचितो व्यक्तिकेँ चिन्हार करार दैछिऐ । सत्यता भने जे होउक, जँ कियो पूछय जे चिन्है छी तँ अहाँक जबाब होइए–हँ, खूब चिन्हैछी । होइए की नहि?'

'हँ औ बाउ, से तँ होइए ।'

'मुदा ओहि युवकसभकेँ, जे कि भलमानुसक भेसमे छल आ कोनहु तरहेँ डकैत सन नहि लगैत छल, अहाँ एहन उनटा जवाब किए देलिऐ ?'

एहि विचित्र प्रश्नक कोनो टा उत्तर हमरा नहि फुराएल, 'की कहू ? एकर तँ कोनो जवाब हमरा लग नहि अछि ।'

ओ युवक फेर थोड़ेक कालक लेल चुप भ' गेल ।

'आब सुनू सर !' युवक बाजल, 'ओ डकैत सभ एही मोहल्लाक दिशाहारा युवकसभ छल, जे आब अपराधी बनि गेल अछि । अहाँक संग घटल घटनासँ पहिने ओसभ डकैती तँ कैक बेर कए चुकल छल, मुदा हत्या धरि एको टा नहि कएने रहय। ओसभ आब हत्याक श्रीगणेश करय चाहैछल आ अपन पहिल शिकारक रूपमे अहाँकेँ चुनने छल । कारण आर कोनो नहि, बस, एतबे जे अहाँक हत्या करब ओकरा सभक लेल आसान आ निरापद छल ।'

युवक क्षणिक विराम लेलक । हमर वाक् हरण भ' गेल छल आ हम टक-टक ओकर मुह ताकि रहल छलहुँ ।

ओ आगाँ बाजल, 'आ सुनू सर, ओ जे पुछलक जे हमरा चिन्हैत छी, तकर जवाब जँ अहाँ 'हँ' मे देने रहितिऐ तँ आइ अहाँ अइ दुनिआमे नहि रहितहुँ ।'

'मुदा, किऐक ? हमरा मुहसँ हठात् बहरायल ।

'देखू सर, जखन ओ सभ अन्तिम निर्णय लए लेलक जे हत्याक आरम्भ अहीं सँ करत तँ ओहि जेरक एक युवक अहाँक पक्ष लए लेलक । ओकर कहनाइ रहै जे प्रोफेसर नीक लोक अछि, ककरो किछु बिगाड़ैत नहि अछि, शुद्धा प्रकृतिक अछि, तें ओकरासँ शुरूआत नहि हो । मुदा, आन-आन युवकसभ ओकर बातसँ सहमत नहि भेलै । तखन ओहि युवकक सन्तोषक लेल गैंगकेर मुखिया एकटा उपाय कयलक। आ जनैछी सर, अहाँक जानक बाजी लगाओल गेल । तय भेल जे रूममे प्रवेशक बाद सरदार पूछत, चिन्हैत छी? जँ अहाँ कहलहुँ 'हँ' तँ मारि देत । जँ कहलहुँ 'नहि' तँ छोड़ि देत । अहाँक स्वभावसँ ओ सभकेयो परिचित छल आ तय छल जे अहाँ 'हँ' कहबै आ अहाँक हत्या हएत । एही दुआरें ओ युवक, जे अहाँक पक्ष लेने छल, डकैतीमे नहि आयल । मुदा, सभ गोटे दंग रहि गेल, जखन अहाँ 'नहि' कहि देलिऐ। हमरा लगैए सर, ओहिसँ पहिने शायद अहाँ ककरो कहियो 'नहि' नहि कहने हेबै। आब कहू सर, एतेक बात सुनि लेलाक बाद कहू जे ओहि दिन अहाँ 'नहि' किए कहने रहिऐ ?'

हमरा लग कोनो उत्तर नहि छल । हम चुप रहलहुँ । तखन, वैह बाजल, 'हम जनैछी सर जे अहाँ लग कोनो जबाब नहि अछि । आ तें अहाँसँ प्रार्थना करैछी जे आर कथूपर नहि तँ भाग्य पर अवश्य विश्वास कयल करू ।'

युवक सेहो चुप भ' गेल । कोठलीमे जबदाह शान्ति कि बताह आतंक पसरल रहलैक ।

थोड़ेक काल बाद वैह मुह खोललक, 'हमहूँ उग्र भाग्य-विरोधी लोक छी सर! भगवान पर विश्वास नहि करैछी । मुदा, हमर दुर्भाग्य देखू जे अहाँकेँ विश्वास करबाक लेल कहि रहल छी ।'

हम साफ देखलहुँ, युवक कननमुह भ' गेल छल । आ चुप । अजगुज आ बिहाड़ि-भरल चुप्पी ।

हम गुम्म रही । बघजरबला गुम्मी ।

युवक दीर्घ निःश्वास छोड़लक । गँहीर नजरिसँ हमरा ताकलक आ बाजल, 'जाहि देशमे हम-अहाँ रहैछी सर, आ जाहि व्यवस्थामे जिबैछी, सैह जखन भाग्य आ भगवानक भरोसे चलि रहल अछि, अहीं कहू जे एहि देशक कोनो प्रजाकेँ कोना ई अधिकार रहतै जे ओ चाहय तँ भगवानपर विश्वास करय, नहि चाहय तँ नहि करय ।'

हम टुकुर-टुकुर ओकर मुह ताकि रहल छलहुँ । युवक चुप नहि भेल, 'हमर मुह नहि ताकू सर ! हमरा जबाब दिय' । जँ आइ अहाँ जीवित छी तँ से सरकार आ व्यवस्थाक कारण नहि, बाजी जीति गेलाक कारण । चुट्टी-पिपरीमे आ अहाँमे की अन्तर अछि सर ? की अन्तर अछि ?'

अन्तर तँ अछि । मुदा, तखनं ओकरा हम कहि नहि सकलिऐक जे की अन्तर अछि !

कायाकल्प

राति आठ बजेक लगाति अगहनू आङन आयल । भगवती थानमे कतहु कोनो कोन दबने बैसल रहल होयत । बैसल रहत आ' चिलम चढ़बैत रहत । भोरुका पहर मालिकक खेतमे हर जोत' गेल छल । तकर थाकनि एखन धरि नहि उतरलैक अछि।

आङन अन्हार छलैक । ओसरा पर कनिया चूल्हि पर बैसलि छलैक ।

– मर, आङनमे अन्हार किए छै ?, अगहनू पुछलकै ।

– रहतै ने ? ई को कोनो नल आनि क' देलकैहैं ? डिबिया छुच्छ छैक । आन्न कल्हियो न कोनो उपाय करबै ।

– धानसम कल दरौ छै ?

– भए गलै । खदीक गलैहैं ।

– कथीक तीमन बनैछै ?

– कौंकाड़ आनलियैरहय । छौड़ा सबक कौंकाड़ खेनाइ बड़ दिन भए गलै रहय।

– आउर ?

– भात आनिलियैहैं हवेलीसँ । मालिकनी आइ कनी बेसिये कए देलखिन्हैं ।

अगहनू चुप भ 'गल आ भोजन तैयार होयबाक प्रतीक्षा कर' लागल । फेर ओकरा किछु मोन पड़लै । भारी चिन्ता ओकरा माथ पर झलकि अयलैक । ओ पत्नीसँ पुछलक, आइयो कोइ एलै रहय ?'

पत्नी कहलकैक, 'हँ एलै रहय नइँ ? राजिन एलै रहय ।'

– की कहलकै ?

– कहतै की ? वैह पुरनके बात । हवेली जनाइ छोड़ । स किए नैं जातिकेँ कलंक लागैछै । चूल्हिमे झोंकी एहन जातिकेँ ।

अगहनू चुप रहि गेल । पत्नीक बातक विरोध करबाक कोनो कारण ओकरा नहि बुझयलैक ।

एम्हर किछु दिनसँ बड़ झंझटि भ' गेल छै । जतियारी कमेटी बनि गलैए । सभ लोक जागि गेल अछि जे जातिक सुधार होयबाक चाही । जतेक प्रकारक कुरीति आ कुसंस्कार अछि तकरा छोड़ल जाय । स्वजाति सभ आब अपनाकेँ धानुक नहि कहय, कुर्मी कहय, आदि-आदि ।

एहि जातिमे बड़ कुसंस्कार छैक । खवासी करैए । जनी–जाति हवेली जाइत छैक । किछु गोटे अइँठ-कुइँठ खाइछैक । सुधार बड़ जरूरी छैक । हवेली जाइ पर एकदम रोक । खवासी करब बन्न । ई निर्णय भेलै । जतियारी कमेटी सक्रिय भ' गेल अछि ।

बाभनलोकनि खौंझायल रहैत छथि । कोनो धरानियेँ कमेटीकेँ तोड़ि देब' चाहैत छथि । कोनो -ने-कोनो बहन्नेँ कमेटी-मेम्मरकेँ पीटि देल करैत छथि ।

मुदा अगहनूक पत्नी चामावालीक चिन्ता दोसर छैक । ओ हवेली नहि जायत तँ दिन कोना जेतै ? घरवालाक हालति देखिते छियै । दुटा धियापुता छै । कमतै ने त खेतै की ?

बाभनलोकनि एहि कमेटी पर खौंझायल रहैत छथि । मुदा बिगाड़ि धरि किछु नहि पाबि रहल छथि । गाम-गाममे जातीय कमेटी बनि गेल अछि । जिला स्तर पर

सेहो कमेटी छैक । कलक्टर एस.पी. धरि पहुँच छैक । सरकार कहैछै जे एकरा सभकेँ उन्नति करबाक मोका देबाक चाही ।

एहि गामक जे कमेटी बनलैक, तकर अध्यक्ष थिकाह चुल्हाइ मंडल । ओ स्कूल मे चपरासी छथि । बूढ़-बुजुर्ग छथि । पहिने ओहो खबासी करैत छलाह । पहिने हुनको बहु-बेटी हबेली जाइत छलनि । आब चुल्हाइ मंडल बड़ उन्नति क' गेलाह अछि। अपने चपरासी छथि । जेठ बेटा किसान । माझिल पियून आ छोट मास्टर । थोड़ दिन पहिने रिटायर्ड भ' गेलाह । घर-परिवारसँ निश्चिन्त छथि तँ आब सामाजिक सुधारमे रुचि बढ़लनि अछि ।

कमेटीक सेक्रेटरी अछि राजिन । पन्द्रह-सोलह बरसक तरुण । पढ़ै-लिखैमे बड़ चन्सगर । सामाजिक काजसभ मे बड़ रुचि । ओकरा तन-मनमे एकटा विराट आदर्श व्याप्त छैक । एहन होअय, ओहन होअय समाज । ओ ओहि दिनुका कल्पनामे व्यस्त रहैत अछि जहिया कुर्मी जाति बड़ उन्नति क' जयतै । कोनो प्रकारक कुसंस्कार एहि जातिमे नहि रहतै । सभ कमायत-खटायत आ सुखसँ रहत । आ' ओ एहि कल्पनाक पाछाँ अपन खूब समय दैत अछि ।

चुल्हाइ मंडल पुछलखिन, 'हौ राजिन, अगहनुआँसँ भेंट नहि केलहक ?'

राजिन कहलकै, 'सतरह बेर भेंट कयने हेबै । बड़ा प्रेमसँ समझौलियै जे हौ कका, आबहु ने सुधरबह तँ कहिया सुधरबह । हमर सब बातमे 'हँ-हँ' कहैए । लेकिन फेर वैह बात-ओकर कनियाँ हबेली जेनाइ छोड़िते नै छै ।'

चुल्हाइ पुछलथिन, ' चामाबाली की कहैछहु ?'

– कहैछै जे बाबू हम बड़ गरीब छी । घरबला कैहेन कमासुत छै से देखिते छिऐ दूटा धिया-पुता छै–ओकर जिनगीकेँ नै देखबै, से हेतै ?

चुल्हाइ मंडल तमसा गेलाह, 'ओना ई छिनरी मौगी नहि सुधरतहु । मिटिंगमे एकर फैसला हेतै ।'

हरेक शनिकेँ कमेटीक मिटिंग होइछै । कहियो एहि दरबज्जा पर, कहियो ओहि दरबज्जा पर । सभ घरक लोक एहिमे जुटैछै । मिटिंगमे जातीय सुधार सभक निर्णय कयल जाइत छैक ।

अगिला मिटिंगमे अगहनूकेँ बजोओल गेल । सुरुज मंडल पुछलखिन, 'हौ अगहनू, की विचार छहु ? हबेली नहि छोड़बहक ?'

अगहनू चिलमक निसाँमे डक्क छल । ओकरा नहि फुरलैक जे की जबाब देल जाय । ओ कान' लागल । दहो-बहो नोर चूब' लगलैक ।

एक गोटे बजलाह, 'कानने-पादने किच्छु नै हेतह । जबाब दहक । ?'

दोसर गोटेक विचार छलैक, 'भारी मोशिकल कने अछि ई मरदबा-गोटी । सौंसे गाम सुधरि गेल आ ई छिनरीक भाइ ठामक ठामे अछि । आइ जरूर फैसला होना

चाही ।'

तेसर गोटे किछु आओर बाजल । चारिम किछु आओर बाजल । अगहनू मुदा ओहिना मूड़ी निहुरौने सुनैत रहल ।

चुल्हाइ मंडल पुछलथिन, 'कहह अगहनू, की कहैछह ?'

अगहनू बाजल, 'तूँ सब की करै ले' कहै छह ?'

चुल्हाइ बजलाह, 'हम सब इयैह कहै छियहु जे घरबालीकेँ हबेली पठेनाइ बन्द करह ।'

अगहनूकेँ हठात् अपन घरबालीक तर्क मोन पड़ि गेलैक, 'बन्द करबै तँ हमर गुजर कोना चलत ?'

एतबा कहैत देरी मीटिंगमे झौहरि मचि गेलै । सभ केयो ओकरा लूलू-थूथू कर' लगलैक ।

– एहन जिनगीसँ मरि जाह ।

– माहुर खाए कए मरि नै जाए होइ छहु ?

– इह,बहु कमेतनि आ अपने खेताह ।

– छिनरीक भाइ, बड़-बड़ निरलज देखलौं दुनियाँमे । मुदा ई तँ सबकेँ टपि गेल।

सुरुज मंडल कहलखिन, 'हौ अगहनू, देखहक; हमहूँ बड़ गरीब छी । दुनू साँझ अन्न जे भेटैये सेहो बड़ कठिनसँ । तँ की हम ककरो अइँठ खाएब ? अपन बहु-बेटीक इज्जति बाभनक हाथ दए देबै ? गरीब सब होइए, लेकिन ''परतिष्ठा'' सँ जीयब । भूखल रहैछी तँ भुखल रहैछी । कोइ दरबज्जा चढ़ि कए गरियाबए तँ नै ने आबैए ?

आ अगहनू मानि गेलै । निर्णय भेलै जे काल्हिसँ ओ अपन घरबालीकेँ हबेली नहि पठाओत । ओ मोनमे ठानलक जे काल्हिसँ ओ अपनो रोजगारमे लागत । चिलम-तिलम पिनाइ बन्द । इमनदारीसँ काज करत । ठीके कहलकै सुरुज भाइ जे परतिष्ठासँ जीबह ।

मीटिंग समाप्त भेल । पंचलोकनि निर्णय कयलनि जे चामाबालीक क्रियाकलाप पर ध्यान राखल जाय । अगहनू आँगन घुरल । चामाबली ओकरे प्रतीक्षामे बैसलि छलैक । आइ हबेलीसँ मासु आयल रहैक । थोड़बे रहैक, मुदा छौड़ासभकेँ मासु खा' क' अलौकिक आनन्द भेटलैक । जेठका छौड़ा चौथामे पढ़ैछै । छोटका सेहो आब पढ़' लागलैए । चामाबली चिन्तित रहैए जे पढ़ैमे बड़ मगज खपैछै । नीक-निकूत्त खेनाइ चाही । कापी-किताब तँ जेना-तेना कीनि देलकैए । कपड़ा-लत्ताक सेहो दिक्कति नहि रहैछै । मालिकक धियापुताक पुरान-धुरान भेटि जाइछै । मुदा भोजन? भोजने टा समस्या । हबेलीसँ रोज भोजन थोड़े भेटैछै सभक लेल? एक देह खटैछै

तँ एक पेटक खेनाइ दैछै । जेठका बेटा मालिकक गाय चरबैछै, तकरो दरमाहा आ खेनाइ मालिक दैछै ।

चामाबाली पुछलकै, 'की भेलै मिटिनमे ?'

अगहनू तनावमे छल । उत्तेजनामे बाजल, 'हेतै की सुथनी ? तूँ हमर नाक कटा देलेँ । अइ ठाम रहनाइ मस्किल भए गेलहँ ।

चामाबाली अपनाकेँ सम्हारि नहि सकलि । ओ बाजलि, 'खबरदार आब एक्को सबद निकालतै तँ बेजाय बात भए जेतै । बड़ा नाम बला भेलाहें ।'

अगहनू चुप्प रहि गेल ।

थोड़बे कालमे चामाबाली मृदुल भ' गेलै, 'से नै, हमरा की कोनो सख लागल छै जे हबेली दौगल जाइ ? मुदा नै जेबै तँ काज केना चलतै ? आ हम की कोनो नजायज काज करैछियै ? चुल्हा-चौका कए दै छियै । पानि भरि दै छियै । मेहनति-मजुरी नै करबै से हेतै ?'

फेर ओ अपन घरबलाकेँ पोट' लागलि, 'हम हबेली छोड़ै ले तैयार छियै । ई काल्हिसँ रोजगारमे लागौ । खेती-पथारी करौ । हमरो बुते जते पार लागत, करबै । हमरा की लोकक बोल सुननाइ नीक लगैए ? मुदा लोकक बोल देखबै कि बाल-बच्चाक जिनगी ।'

ओहि राति निर्णय क' क' सुतल अगहनू जे काल्हिसँ रोजगारमे लागत । पीचरोड जे बनि रहल छै, बलुआहामे, ओहीमे मजूरी करत । काल्हिसँ चामाबाली हबेली नै जेतै ।

मुदा भोरे फेर वैह बात । सूति क' उठल अगहनू तँ देहक पोर-पोर दरद करैत रहैक । ओ तमाकू पर तामकू खाइत रहल । ' के देह चुरबए जाय?' अगहनू सोचलक आ फेर सूति रहल ।

चामाबाली एखन धरि हबेली नहि गेलि छलि । ओकरा उमेद रहै जे परात घरबला कमाबय बहरायत तँ हमहूँ ठानि लेब जे हबेली नहि जायब । मुदा घरबला नहि उठलै। ओम्हर, हबेलीसँ बजाहटि पर बजाहिट आब' लागलै । आब की उपाय ? चामाबाली चुपचाप हबेली बिदा भ' गेलि ।

एहिना समय चलैत रहलैक ।

जातीय कमेटीकेँ पता लागलैक जे चामाबाली हबेली जेनाइ नहि छोड़लक अछि । मेम्मर सभक खून खौलैत रहलैक । अगिला शनिकेँ फेर मीटिंग भेलैक । अगहनू बजाओल गेल । अगहनू भगवती थानमे चिलम पिबैत छल । कहि देलैक,। 'हम नै जेबह । जे ई करम करैछह, तेकरे लए जाह । हम थाकि गेलहुँ कहैत-कहैत। मौगिया हमर बाते ने सुनैए ।

चुल्हाइ मंडल आदेश देलखिन, चामाबालीकेँ बजाबह । दूटा नौजवान ओकरा आङन गेल । ओहि दुनूमे एक राजिन सेहो छल ।

राजिन चामाबालीकेँ कहलकैक, 'पंचैतीमे चलियौ ।'

चामाबाली बाजलि, 'हम नै जायब ।'

नौजबान सभ अड़ि गेल, 'अहाँकेँ जाय पड़त ।' कहासुनी भेलै । डाँट-फटकार भेलै । गारि-फज्झति भेलै । आ तामसमे आबि क' राजिन तीन-चारि चप्पल धराइयो देलकै । चामाबाली घीचि क' मीटिंगमे आनलि गेलि । चामाबाली कन-कन करैत रहलि। ओकरा आँखिमे नोर नहि रहैक, आगिक चमक रहैक ।

चुल्हाइ मंडल पुछलखिन, 'हबेली जेनाइ छोड़ैछै की नै ?'

चामाबाली साफ जबाब देलकै, 'नै ।'

लोक थुथुआब' लगलै ।

सुरुज मंडल पुछलखिन, 'किए नै छोड़बै ?'

– छोड़ि देबै तँ हमर धियापुता भूखे मरि जायत ।

– एते जनीजाति जे हबेली नै कमाइ छै तँ की ओकर धियापुता मरि जाइछै ? अहाँ दोसर काज करू ।

– दोसर काज हमरा पार नै लागैए । जहियासँ अपरेसन भेल,देह कमजोर भए गेलहें । रौद-बसातमे काज करब पार नै लागैए ।

– अगहनूकेँ किए ने कहैछियै जे काज करत ?

– कहैत-कहैत थाकि गेलियै । की करबै ? हमर करमक दोख ।

चुल्हाइ मंडल धधकि उठलाह, 'से जे हुअहु, हबेली तोरा छोड़ैए पड़तहु ।'

चामाबाली ठाहि-प-ठाहि जबाब देलक, 'अहाँ सब हमरा काज-रोजगार दिअ,हबेली हम छोड़ि देबै ।'

– रोजगार की अइठाँ फड़ैछै ? जीबह कि मरह । मगर हबेली नै जाए सकैछह । गेलह तँ खबरदार ।

चामाबाली सरपट उठि क' बिदा भ' गेलि । ओकरा आँखिसँ ज्वाला फुटैत रहैक। उठैत-उठैत बाजलि, 'जेकरा जे करना होइ करौ गए । हम अपना बाल-बच्चाक मुह नै जाबि सकैछी ।'

आ अन्तत: बहुत विचार-विमर्शक बाद निर्णय भेलैक जे अगहनूकेँ जातिसँ बारि देल जाय ।

X X X

जाति-बहिष्कृत जीवन अगहनूकेँ बड़ महग पड़लैक । ओकरा लोक बड़ बात कहैक।

ओकर केयो मोजर नहि दैक । जेह कतहु बाट-घाट भेटैक, सैह ओकरा उकटि दैक। ओ लोकसँ नुकाब' लागल ।

चिलमची सभक गिरोह ओकर आत्मीय बन्धु छलैक । ओही ठाम ओकरा मोन कैं शान्ति भेटैत छलैक । मुदा, ओहू ठामक स्थिति बदलि गेलैक । खूब निसाँमे अयलाक बाद चिलमची सभ ओकरा फज्झति कर' लागय, 'जकर बहुए ने रहतै सम्हारमे, से जीबि कए की करत ? चामाबाली की अगहनू के बहु छियौ रौ; ऊ तँ हबेली के पतुरिया छियै ।'

अगहनूक मोन हरदम औनाइत रहैक । ओ आङन आबय तँ चामाबाली कोनो-ने कोनो काजमे हरदम बाझले रहय । ककरो दालि दरड़ि दैक । ककरो चाउर कूटि दैक । ककरो नूआ खीचि दैक । चामाबालीक आमदनी बढ़ि गेल रहैक । आ आब ओ अपन बेटासभकेँ टिउसन पढ़बाब' लागलि छलि । चामाबालीकेँ देखि क' अगहनू अप्रतिभ भ' जाय । की क' सकैए ओ ? पहिने अगहनू थोड़-बहुत रोजगार क' लैत छल् । आब सेहो छूटि गेलै । बड़ भेल तँ जहाँ-तहाँ सँ जारनि आनि क' जमा क' दैत छैक । सौंसे गाममे प्रसिद्ध छैक जे अगहनू ''धिप्पल कोढ़ि'' अछि ।

चामाबाली बुझैत रहैक जे अगहनूक मोन व्याकुल रहैत छैक । ओ घरबलाकेँ आओर बेसी मान' लागलि । कखनो दुनू बेकतिमे झगड़ा नै होइ । एकाध बेर लोकक बोल पर अगहनू चामाबाली पर हाथो छोड़ि देलकैक । मुदा चामाबाली ले' धनि-सन। ओ सहि-सहि जाय । जानि नहि, कोन भविष्य ओ देखैत छलि, जकरा लेल एहि सभकेँ सम्हारि क' ओ बढ़ि रहलि छलि ।

X X X

आब थोड़ेक राजिनक विषयमे । बड़ा कल्पनाशील नौजवान रहय । चन्सगर आ होनहार। गामक कुर्मी समाज ओकरा अपन गौरव बुझैक । बाप नोकरिहारा रहैक, तें पढ़ै-लिखैक मोका भेटैत गेलै । मैट्रिक फर्स्ट डिवीजनसँ पास केलक । ओ आगाँ पढै ले' बहिनोइ लग चलि गेल । बहिनोइ जमशेदपुरमे रहैछै । टाटा कम्पनीमे नोकरी करैछै ।

राजिन टाटा गेल तँ गाम साफ छुटि गेलै । पहिने तँ ओ सालमे तीन-चारि बेर गाम आबय । घर-घर जा' क' लोकसभसँ भेंट-घाँट करय । तखन ई भेलै जे सालमे एक बेर आब' लागल । गाम आबय तँ अपना अङनेमे रहय । घुमैयो-फिरय बहराबय तँ बाभनक धिया-पुताक संगे । ओकर संस्कार बदलि गेलै । पढ़ले-लिखले लोकसँ ओकर संगितारय होअय लगलैक । मूर्ख अनपढ़ लोकसँ ओ दूर रहय लागल । आ,आब तँ सेहो नहि । पँच-पँच साल बीति जाइछै गाम अयनाइ ।

एवं प्रकारें बारह बरस बीति गेलै । एहि बीच की- की ने भेल ? राजिन अपन जीवन-संघर्षमे लागल रहल आ चामाबाली अपन संघर्षमे ।

गामक लोक एक दिन सुनलकै जे राजिन आब अपसर भ' गेल अछि-बड़का

मजिस्ट्रेट । ओकर माय घरपर मिठाइ बाँटने रहैक ।

आ' एकरे थोड़े दिनक बाद राजिन गाम आयल छल । दसमीक समय रहैक। सोहाओन दिन ओ भरल-पुरल साँझ । आ एम्हर-ओम्हर खूब घूमल-फिरल करय। पुरनका दोस सभसँ भेंट-घाँट होइक । बड़ आत्मीय लागैक गाम ।

रोज साँझ क' राजिन अपन माय लग बैसय । माय सर-समाजक हालचाल, खिस्सा-कहानी सुनाबै। माय अधिकतर बाभन सभक खिस्सा कहैक, जानि नहि एहिमे ओकर की मनोविज्ञान रहैक ।

--बाबू रे, बुझलिही ? असरफी बाबू बेटासँ भिन्न भए गेलाह ।

– से किए ?

– आहि रौबा ! एहन कपूत भगवान ककरहु नहि देथुन । के जानैत रहय जे ओतनो पैघ घरक ई हाल हौते ।

– की भेलै ?

– रे बाबू कुल-खुटमे एक्केटा तँ बेटा, आ से एहन जे बाप पर फरसा चलाए देलैक ।

खिस्सा कहैत माय आंतकित भ' गेलि छलि । ओ कल जोड़ि मूड़ी निहुरा भगवतीकेँ गोड़ लाग' लागलि रहय ।

थोड़बे कालक बाद माय दोसर खिस्सा उठा देने रहय, 'बुझलें बाउ, गोबरधन बाबूके बेटा डकैतीमे पकड़ल गेलै । अखनो जहलेमे छै । बुझही तँ हुनका कथीक कमी रहनि ?'

राजिन कोनो गँहीर जिज्ञासा करय, तकर अवकाश माय नहि दैत छलै । मायकेँ जेना एके दिनमे सभ वृत्तान्त सुना देबाक अहलदिली होइक ।

– किसुन बाबूके बेटा चपरासीमे भरती भए गेलै ।

– बूचन जे रहौ बौआ, जोगा बाबूके बेटा, से बुझलिही ? अपनेसँ हर जोतैछै। कहैछै जे बरू अपना काजमे लाज कथी के ?

– लेकिन हँ, बच्चा बाबूक बेटा नै सुधरलै । भाँग खा कए पड़ल रहैछै, सगरो दिन ।

यैह सभ खिस्सा सुनैत राजिनकेँ एक दिन छक्क द' चामाबाली मोन पड़लि छलैक ।

– माय गे, चामाबालीक की हाल-चाल ?

– ओहि, नै बुझलिही ? अच्छा, काल्हि हम भेंट करा देबौ ।

दोसर दिन ठीके चामाबाली राजिनक भेंट करय-आयलि । माय कहलकैक, 'बौआ रे, चामाबाली काकीकेँ गोड़ लागही ।'

राजिनकेँ ई प्रस्ताव विचित्र लागलैक । विचित्र ओ असंभव । ओकरा चामाबालीक सभ किरदानी मोन रहैक । ओ नहि बिसरल छल जे एही चामाबालीकेँ ओ चप्पल खोलि क' मारने रहय ।

चामाबाली बाजलि, 'आहि ! की कहैछथिन, बहिन । बौआ हमरा कथी ले गोड़ लागता ? जेठक सन्तान छथीन । खूब असिरबाद दै छियनि । जुग-जुग जीबथु ।'

राजिन पुछलकैक, 'की हालचाल छै ?'

– बड़ निम्मन छै, बौआ । अहाँ सभके माय-बापके पयरक असिरबाद छै ।

– आ हवेलीक हालचाल ?

राजिन सीधे अपन असली प्रश्न पर चलि आयल । चामाबाली मुदा एक्को रत्ती थकमकायलि नहि । बाजलि, 'हबेली हम कहाँ जाइ छियै, बौआ । आब तँ छ' बरख भए गेल ।'

राजिनकेँ आश्चर्य लगलैक, 'से किए ?'

– अहाँ सभके माय-बापक दयासँ आब कोनो खगता नै अइ, बौआ । किए अइँठ-कुइठ पर मरड़ायब ?

–से की ?

– दुनू टा बचबा आब समर्थ भेलै ने । छ' बरखसँ डिल्ली कमाइछै । एक भाइ "जुइस" के दोकान खोलने छइ । एक भाइ बिजली- समानक कारबार करैछै । एगारह बिगहा जमीन किनलियैह', बौआ । अहाँक कका ओहीमे मेहनति करैछथि।

– बाह, एतेक बात भए गेलै । हमरा तँ किंछु बुझले नै रहय । बाह,बड़ा बढ़ियाँ ।

– अहाँ गाम एलहुँ कहिया जे बुझितियै ?

थोड़े कालक बाद फेर चामाबाली बाजलि, 'हबेलीक हालत की कहब, बौआ । जहियासँ बूढ़ा मालिक मुइलखिन , सब नंड-भंड भए गेलै । आब तँ अपने ऊसब खाइ ल' कलहन्न करैत रहैए । हिन्दू बाबू तँ हमरे ओतय पैंच-उधार माँग' आबैछथि ।

गप-सप होइते रहैक कि माय चाह लेने आयलि, एक कप राजिन ले, एक कप चामाबाली काकी ले । राजिनकेँ अकस्मात् से नीक नहि लगलैक । मायक ई व्यवहार-पटुता राजिनकेँ नीक नहि लगलैक । चामाबालीक ई सत्कार राजिनकेँ एकदम नीक नहि लगलैक । ❐

इजोरियामे सिङरहार

स्टेशन पर अयलहुँ तँ विशाल भीड़ देखल । अतमा काँपि गेल । गाड़ी तीन घंटा लेट रहैक ।

रातुक डेढ़ बाजि रहल छल । मुदा, गाड़ी अयबाक लच्छन एखनहु नहि बनल रहैक ।

सहुँ दिस लोक-लोक । एतेक लोककेँ एक ठाम देखि मनपनक एक अवधारणा मोन पड़ि गेल । बहुत छोट उमेरमे, हमर गुरुजी जनसंख्या-विस्फोटक मादे बतौने छलाह । केक केक बात भरि हमरा भ्रम बनल रहल जे जनसंख्या विस्फोट एक

बिमारीक नाम थिक । जनसंख्या जखन बहुत बढ़ि जाइत छैक, लोककें धरती पर ठाढ़ो होयबाक जगह नहि रहि जाइछै, तँ एक दिन अचानक लोकसभक पेट फाटि जाइत छैक, आ लोक मरि जाइत अछि ।

नेनपनक इहो अवधारणा प्राय: उत्तरदायी अछि जें भीड़ हमरा आतंकित करैत अछि ।

नेनपनक बात मोन पड़ल तँ मुस्कियेबाक इच्छा भेल । पहिने, एहन बात सभ मोन पड़य तँ खूब मुस्कियाइत रही ।

चाहक दोकान पर जा क' पानि पीलहुँ आ जेम्हर भीड़ नहि छल, ओम्हर चलि निकललहुँ । ओम्हर आर.एम.एस. क ऑफिस छलैक आ ओतहिसँ बाहर निकलबाक बाट सेहो रहैक । डेगाडेगी टहलैत रहलहुँ ।

राति भयाओन नहि रहैक । पृथ्वीक मुहेठ पर यत्र-तत्र इजोरिया छीटल रहैक। बहुत रहस्यमय दृश्य, मुदा भयाओन किन्नहु नहि । किन्तु, शान्ति नहि भेटल । अकस्मात् लागल जेना ई स्थल हमरे प्रतीक्षामे छल । हम आब आबि गेल छी तँ किछुओ टा आब ठीक-ठाक नहि चलत आ राति भयाओन भ' जयतैक ।

एक बरख भेल होयत, मोन बहुत व्याकुल रहैत अछि । बारह बरखक पोसल सपना टूटि गेल । आर हम पोसनहि की रही ? ने एकटा गाय, ने एकटा बकरी । एकटा परबो धरि नहि । पोसैत रहलहुँ सभ दिन सपना । तन-मनसँ जकरा प्रति समर्पित रही, सैह छौंड़ी जबाब द' गेलि । किदन तँ कहने रहय, 'अहाँ जे चाहैछी, से एहि जनममे नहि भ' सकैत अछि ।' हमरा अजूबा लागल जे किएक नहि भ' सकैत अछि ! हम एतबे बुझैत आयल रही जे साँच मोनसँ लोक जँ किछु चाहय, आ तकरा लेल निरन्तर प्रयास करय, तँ से अवश्शे भ' सकैत अछि । आ, हम चाहिते की रही? एक कमासुत युवक अपना पायर पर ठाढ़ि एक युवतीसँ बियाह कर' चाहैत छल ।

ओही बीच, गाम गेल रही तँ पितासँ विवाद भ' गेल । पिता चाहैत रहथि जे हम अपन मुसलमान लंगोटिया मित्रक संग छोड़ि दी । लोक हुनका नीक नहि कहैत छनि । नीक लोकक घरमे मुसलमानक आबाजाही पिताकेँ गड़' लागल रहनि । पिता राममन्दिर चाहैत रहथि, हम बाबरी मस्जिदकेँ ढाह' नहि चाहैत रही । पिताकेँ ई पूरा प्रसंग अधलाह लाग' लगलनि, से किएक तँ लोकक दुआरे । हमरा सैह पसिन्न नहि। बेस विवाद भ' गेल । पिता हमर मनस्वी लोक आ बड़ नीक पिता । हुनका संग झगड़ा भेल, से हमरा दुखद लागि रहल छल ।

एही बीच एक आर वज्रपात भेल । बहिनि हमर मरि गेलीह । अल्सर भ' गेल रहनि । ई बड़की बहिनि हमर प्राण-सन । सिनेहसँ हुनका हम 'माँ' कहियनि । हुनक बिमारी हमरा बहुत आतंकित कयने रहल, मृत्यु तँ आरो-आरो ।

बहुत कारण अछि जे एक बरखसँ, तन-मनसँ अस्त-व्यस्त आ व्याकुल रहैत छी।

आर. एम. एस. क चहुँदिस प्राय: शान्ति रहैक । ओही ठाम टहलैत रहलहुँ । लोक ओम्हर कम रहय ।

अचानक एक युवक पर नजरि गेल । ओ आफिसक भीतर हुलुकि रहल छल, आ चुकुर-भुकुर क' रहल छल । ओकर हावभाव एहन रहैक जे सन्देह उत्पन्न करैत छल ।

हम मुदा, निश्चिन्त भेल टहलैत रहलहुँ ।

थोड़ेक कालक बाद ओ युवक एक्शनमे आयल । डाकक बोरासभ ट्रेनमे चढ़ाबक प्रयोजनसँ दू-तीन टा ठेलागाड़ी ओतय लागल रहैक । चहुँदिससँ निश्चिन्त भ' ओ युवक एकटा ठेलागाड़ीकेँ पकड़लक आ ओकरा घीचैत बाहर निकलबाक बाट दिस बिदा भ' गेल । हम ओकरा देखैत रहलिऐक । क्षण भरिमे युवक स्टेशनसँ बाहर भ' गेल ।

एकदम्म स्पष्ट छल जे ई चोरिक मामला थिक । मुदा, प्रतिकारमे हम किछु क' सकैत छी, विचारो धरि नहि आयल । हम पूर्ववत् टहलैत रहलहुँ ।

एहि दुनिआक लोक तँ ककरो भविष्य चोरा लैत अछि । सपना चोरा लैत अछि। आ कोकनल ढेंग-सन जिनगीकेँ छोड़ि दैछ । बुझैत रहू जे चोर की सभ चोरा सकैत अछि !!

मुदा 'जानि नहि किएक, हमर डेग यंत्रवत् आर. एम. एस. ऑफिस दिस बढ़ि गेल । भीतर हुलकी देलहुँ । एक सज्जन टेबुल पर ओछाओन लगा क' सूतल छलाह, एक दोसर व्यक्ति, जे चपरासी रहल होयत, कुरसी पर ओंगठल ओंघा' रहल छल। हम केबाड़ खटखटाब' लगलहुँ ।

चपरासी केबाड़ खोललक । हम कहलिऐक, 'देखह, हम एकटा चोरिक खबरि देबय आयल छियहु । तों साहेबकेँ उठाबह ।

हम कहलिऐक, साहेबकेँ उठाबह आ हमरा ओ पूरा प्रकरण मोन पड़ि गेल । हमर बहिनि रातिकेँ मुइल छलि । हम सूतल रही । पिता जागल रहथिन । भिनुसरबामे दर्दसँ व्याकुल बहिनि चीत्कार कयलक, 'कका, हम आब मरि जेबह । कनी बौआकेँ उठाबह ।, हमरा उठाओल गेल । आ, सरिपहुँ बहिनि मरि गेलि । आखरी शब्द बाजलि 'बौआ, राम-लछुमनकेँ देखियहक ।'

राम-लछुमन माने हमर दूटा अबोध भागिन ।

साहेब उठलाह । मुदा, ताधरि हमर सभटा उत्साह मिझाए गेल रहय । हम लुद द' एक कुरसी पर बैसि रहलहुँ । पुछला पर हम साहेबकेँ कहलियनि जे अहाँक एक ठेला क्यो बाहर ल' गेल अछि ।

साहेब आ चपरासी, दुनू बहरयलाह । जेम्हर ठेला ल' गेल छल, हमरहु चलय कहलनि ।

हम भारी मोनसँ हुनका लोकनिक संग बिदा भेलहुँ । हमरा बेचैनी होअय लागल। एहिना कहियो अधरतियामे थाना गेल रही । ओहि छौंड़ीक घरमे डकैती भ' गेल रहैक। डकैत चारि घंटा धरि भिड़ल रहल आ सभटा सम्पत्ति खँहारि लेलक । आर जे भेलैक से भेलैक । ओ डकैतसभ बलात्कार सेहो कयने रहय । हमरा छक् ल' गेल । लागल जेना माथ पर एकटा मुकुट रहय,जकरा केयो छीनि ल' गेल। मुदा हम अपनाकेँ सम्हारलहुँ। ओ छौंड़ी हमरा पयर पर लोटि रहलि छलि । हम ओकरा बेर-बेर सान्त्वना देलिऐक जे किछुओ तँ नहि भेल अछि । ओ हमरा लेल जे छलि, सैह अछि, सैह रहत । एहिमे ओकर की दोख ? आ, ओकर पिताक संग रिपोर्ट लिखाबय हमहूँ थाना गेल रही ।

साहेब बजलाह, 'एखन धरि तँ चो निपत्ता भए गेल हएत । कतय ताकबहक ?'

चपरासी बाजल, 'थोड़ेक दूर धरि देखि लेल जाय ।'

हमसभ स्टेशनसँ बहरयलहुँ । बाहर ठीके ठेला लागल रहैक । ओहि पर बहुत रास सामान सभ लादल छल, आ एक व्यक्ति उकड़ू भेल बैसल छल ।

तीनू गोटे पहुँचलहुँ । ओहि ठाम स्ट्रीट लाइटक इजोत छलैक । हम साफ-साफ चीन्हि गेलहुं जे ठेला पर बैसल व्यक्ति के छथि । ओ राजवंशी जी छलाह । पटनामे रहैत रही तँ हुनकासँ परिचय भेल छल । हमर इलाकाक लोक छलाह । आर.पी. एफ. मे सब-इन्सपेक्टर रहथि । संगीतशास्त्रमे हुनका बेस अवगति रहनि । मुदा, हुनक सभसँ पैघ गुण जे हमरा मोहित करय, सदति काल हुनक प्रसन्न रहनाइ । बात-बात पर हँसथि । हँसबाक जँ बहन्ना नहि भेटनि तँ तकरा जनमाबथि । हँसबाक लेल जँ सुख उपलब्ध नहि होइनि, तँ दुख पर हँसथि । हमरा सभसँ आश्चर्यजनक ई लगैत छल जे ओ अपन अवगुण ताकि-ताकि निकालथि, आ, ताहि पर हँसथि । ताहि दिन हमरा ई बात अद्‌भुत आ विलक्षण लागय ।

हुनका लग सटैत हम कहलियनि, 'भाइ, गोड़ लगै छी । हमरा चिन्हलहुँ ? हम छी महेन्दर ।'

जतबा आह्लाद हुनक स्वरमे व्यक्त भ' सकलनि, ताहिसँ बहुत-बहुत बेसी हुनका आकृति पर नाचि उठलनि, 'अरे, महेन्दर जी ? अहाँ छी औ ? हमरा बिसरि गेलहुँ? की हालचाल छै ? कने लग आउ, लग आउ ।'

हम कहलियनि, 'हँ, नीकेँ छी भाइ । अहाँ तँ प्रसन्न छी कीने ?'

ओ हँसय लगलाह । एनमेन वैह हँसी । वैह आरोह-अवरोह । ओ बजलाह, 'हँ-हँ। एकदम्म प्रसन्न छी ! खूब प्रसन्न छी !!

हमर बहिनिकेँ यैह हिस्सक रहनि । अपना जनैत पिता सम्पन्न घरमे बियाह करौने रहथिन । मुदा, बहिनोइ हमर पुरान नशेरी बहरयलाह । सभ सम्पत्ति फूकि देलनि ।

बहिनि बड्ड कष्टमे रहैत छलीह । सुनल अछि जे कैक-कैक साँझ ओ बिनु भानसक काटने छलीह । मुदा, जहिया-कहियो हमर पिता पुछलखिन, आ चेतन भेला पर हम पुछलियनि, ओ मुस्किया क' कहथि, 'हँ बौआ, एकदम्म प्रसन्न छी ! खूब प्रसन्न छी !!' जँ भारतीय आत्मवाद सत्य थिक तँ बहिनि आइयो कतहु प्रसन्ने हेतीह। हमर निष्ठुर बहिनि !!

मोन कचक' लागल ।

राजवंशी जी बजलाह, 'कने लग आउ । महेन्दर जी ! कने गला मिलू । हम तँ ठाढ़ नहि भए सकैछी । अहिना मिलू ।'

समान सभक बीचमे उकड़ू बैसल राजवंशी जीक टाङ दिस आब हम ताकलहुँ। हुनक दुनू टाङ निपत्ता छल-'अरे, अहाँक टाङमे की भए गेल भाइ ?' हमर आँखि उनट' लागल ।

राजवंशी जी मुस्कियेलाह, 'टाङ हमर कटि गेल । मुदा, अहाँ आउ ने एम्हर !'

बाप रे ! राजवंशी जी सन लोक आ तिनका संग एहन दुर्घटना ! हमरा लागल जे ओ छौंड़ी, हमर प्रेमिका, हमर सभ हित-अपेक्षितकेँ बजबा क' बीच चौक पर ठाढ़ क' क' हमरा पचास चप्पल मारलक अछि ।

हमर आँखि डबडबा अयल ।

राजवंशी जी से लक्ष्य कयलनि आ मुस्कियाइत बजलाह, 'औ महेन्दर जी, जे चीज रहैछै, सैह ने एक दिन हेराइतो छै । आ कुल्लम एक्केटा चीज ने हेरा गेल, आर बहुत-रास वस्तु तँ एखनहु अछिये । देखू हमर हाथ, आँखि, कान, गरदनि । सभसँ बढ़िकए ई दिल आ ई दिमाग । कटल की तँ खाली दूटा पयर । ई कोन भारी बात भेल ?'

आ फेर वैह हँसी । हमरा लागल जे एहि गुमारमे वर्षाक रिमझिम फुहार पड़' लागलैक ।

वर्षाक ई फुहार हमर मुसलमान मित्र मकबूलकेँ बहुत पसिन्न छैक । ओकरा बहुत चीज पसिन्न छैक । भौतिक विज्ञान । कोसी कातक संस्कृति । इकबालक गजल। मधुबनी पेन्टिंग । हमर पिताकेँ अपन सम्पूर्णतामे मकबूले पसिन्न नहि छनि । हमर पिता हमरा कहने रहथि, ' तों निकलि जो हमरा घरसँ । हम बूझि लेब जे निपुत्रे छी, मुदा मुसलमान हमरा घर नहि आबि सकैत अछि ।'

नेनपनमे हमरा एक बेर हैजा भ' गेल रहय । राति-दिन एक कए ई मकबूल हमरा जिनगीक लेल संघर्ष कयने रहय । तहिया हमर यैह पिता बाजल रहथि, 'हौ मकबूल, हमरा दूटा बेटा अछि हौ, आ जेठ बेठा तोंही छियह ।' मुदा, तहिया रामजीक सोइरी घरक मामला नहि उठाओल गेल रहैक ।

बहुत दुख आ संकोचसँ हम राजवंशी जीसँ गराजोरी क' सकलहुँ ।

ओ पुछलनि, 'ई भाइसाहेब के थिकाह ?' तखन, हम हुनका ठेलागाड़ीक खिस्सा सुनौलियनि । राजवंशी जी खेद व्यक्त कयलनि । ओ युवक बजलाह जे सूतल स्टाफकेँ जगौनाइ हुनका उचित नहि बुझना गेलनि तेँ ओ बिन मँगनहि ठेला ल' अयलाह ।

पोस्ट मास्टर साहेबकेँ हम राजवंशी जीक पूरा परिचय देलियनि । ओ प्रभावित भेलाह। ठेलाकेँ घीचि क' हमरालोकनि राजवंशी जीकेँ स्टेशन पर ल' अनलियनि ।

एहिना कहियो अपन ओहि छौंड़ीकेँ हम उजड्ड आ जबदाह परिवेशसँ घीचि क' अपना जनैत, एक चमकैत शिखर पर ल' आयल रही । ओ हमरा पर जान दैत रहय । सभ किछु तँ तय रहैक । जानि नहि कतेक साँझ ओ हमरा कोरमे बितौने रहय। मुदा, नहुएँ-नहुएँ ओकरा आ ओकरा पिताकेँ हम नापसिन्न होइत गेलियै ।

हम अव्यवस्थित लोक छी । कैरियरक लड़ाइमे लागल रहैछी । तरीकाक घरो धरि नहि अछि । अपनासँ बेसी दुनिञाक भलाइमे लागल रहैछी आ अपस्याँत रहै छी । ओकरा पिताकेँ से नहि पसिन्न । ओ हमरा बदलबाक चेष्टा कयलक । आदति जँ हमर संस्कार नहि बनि गेल रहैत तँ हम बदलि सकैत रही । हम नहि बदललहुँ तँ वैहलोकनि बदल' लगलाह । पिता अपन पुत्रीपर विकराल शासन कयलनि । बेटी आज्ञाकारी बहरायलि आ एक दिन हमरा दृढ़ आत्मविश्वासक संग कहलक, 'अहाँ जे चाहैछी से एहि जनम नहि भ' सकैत अछि ।' हम चुप्प रहलहुँ । आर हम कइये की सकैत रही ?

चुप्प हम एखनहु छी । राजवंशी जीसँ आगाँ हम किछु पूछि सकियनि, एकदम्मसँ हिम्मति नहि अछि ।

ओ युवक चाह ल' अयलाह । हमरा लोकनि चाह पिबैत रहलहुँ ।

राजवंशी जी हमरासँ भेंट भेने खूब उन्मुक्त आ प्रसन्न छलाह आ मुस्किया-मुस्किया क' हँसि-हँसि क' कोनो-ने-कोनो प्रसंग बीचमे ल' अनैत छलाह।

थोड़ेक दिन तँ भेल अछि । यैह उन्मुक्तता, यैह हँसी हमरहु तन-मनमे व्याप्त रहैत छल । ओहि छौंड़ीक संग जहिया-जहिया हम बैसी, जानि नहि कोन-कोन जनमक हर्ष हमरा रोम-रोममे उबडुब करय लागय । हम ओकरा कहिऐक, 'जँ हमरा संग रहबह तँ एहि दुनिञाक कोनहु टा लक्ष्य हमरा लेल असंभव नहि।' ओ उतारा देअय, 'आ जँ हमरा संग नहि रहि सकबह तँ हम एहि दुनिञहिमे नहि रहब ।'

पोस्ट मास्टर साहेब राजवंशी जीकेँ पुछलकनि, 'ई दुर्घटना कोना भ' गेल ,'

राजवंशी जी पूरा वृत्तान्त सुनौलनि जे गाड़ीं लुटबाक मनें एक बेर किछु डकैत गाड़ी पकड़य स्टेशन आयल । हुनका कोनहु सूत्रसँ पता लागि गेलनि । सिपाहीसभक संग ओ छापा मारलनि । गोली चार्जमे दूटा डकैत मारल गेल मुदा जीवित ककरहु नहि पकड़ि सकलाह । डकैतसभकेँ खेहाड़ि क' घुरि रहल छलाह । सिपाहीसभ अलग दल बना क' बढ़ि गेल । ओ लाइन क्रॉस क' रहल छलाह । अजगुत कही जे दूटा डकैत ओहीठाम कतहु नुकायल छल । ओ दुनू अकस्मात् बहरायल आ एकदम्म ओही

कनालमे राजवंशी जीकेँ पाछाँसँ धक्का मारलकनि जखन पुलिस मालगाड़ी लाइन पर चढ़बा लेल रहथ । ओ सम्हारि नहि सकलाह । जान तँ बाँचि गेलनि मुदा दुनू टाङ........।

राजवंशी जी हँस' लगलाह, 'एक बात मुदा अछि मास्टर साहेब । अहाँ कतबो सहोर क' क' आउ, हमरासँ छीनि ओतबे सकब, जतबा हमरा लग छिनागल जयबा लेल रहत......।'

बड़ मोश्किलसँ हम पुछलियनि, 'कतेक दिन भेल अइ घटनाकेँ ?'

ओ कहलनि, 'दू साल । एखनो थोड़ेक कष्ट अछिये । रीढ़क हड्डीमे अजार आगल छल, तकर इलाज चलिये रहल अछि ।'

राजवंशी जी पान अनबाक संकेत कयलनि । ओ युवक सभ गोटे ले' पान ल' अनलाह ।

राजवंशी जी जनौलनि जे सब-इन्सपेक्टरक नोकरी हुनका छोड़' पड़लनि आ आब ओ टेलीफोन ऑपरेटर छथि । ओ कहैत रहलाह जे हुनका जीवनमे कोनोटा कष्ट, कोनोटा पीड़ा नहि छनि । ओ कहैत रहलाह जे कष्ट भौतिक नहि, शत-प्रतिशत मानसिक अवस्था थिक । ओ जनौलनि जे हुनक बहुत रास शुभचिन्तक छथिन । बहुत-बहुत रास आत्मीय जन । ओ सुतली राति धरिमे कौखन एकाकी आ असंलग्न नहि रहैत छथि ।

हम पुछलियनि, 'भाइ यौ, भौजीक की हाल चाल ?'

राजवंशी जी खिलखिला क' हँसि पड़लाह । हुनक मुखमण्डलपर हर्ष आ सन्तुष्टिक उन्मुक्त भाव भरि इच्छे खेलाय लागल । हमहूँ सहसा मुस्किया उठलहुँ। हम बहुत स्पष्ट रूपें बूझि गेलहुँ जे एहू कठिन परिस्थितिमे जँ किछु हुनका प्रसन्न आ उन्मुक्त राखने छनि तँ से भौजिए थिकीह । हमरा नीक लागल ।

पटनामे जखन राजवंशी जी रहैत छलाह, तखनहि हम ओहि लड़िकीकेँ देखने छलहुँ । राजवंशी जी ताधरि बियाह नहि कयने रहथि, मुदा सभ किछु सुनिश्चित रहैक। नाम रहैक ओकर मौसमी । बहुत बुझनुक, व्यवहारकुशल, हँसमुख, उदार । समाजशास्त्रमे एम.ए. क' रहलि छलि । ओ दूनू गोटा एक दोसराक प्रति जी-जानसँ समर्पित छलाह ।

राजवंशी जी हँसैत रहलाह तँ जानि नहि किएक, हम अपनाकेँ सुरक्षित अनुभव कयलहुँ । हमरा लागल जे भिनुसरबा रातिक इजोरियामे सिङरहारक फूल झरझरा क' खसि रहल अछि, आ सभटा सुगन्धि, सभटा रूप-रस हमही भोगि रहल छी ।

मुदा, हँसी खतम केलाक बाद ओ बजलाह, 'औ महेन्दर जी, हम लूल्ह-अपंग लोक भेलहुँ । हमरासँ कोन लड़िकी बियाह करत ?'

हमरा लागल जेना ओ छौंड़ी चिकरि-चिकरि क' कहि रहलि अछि, 'अहाँ जे

चाहैछी से एहि जनम नहि भ' सकैए !'

–मुदा किएक ?

–किएक की ? सात मास धरि हम अस्पातलमे रहलहुँ । तकरा बाद, एक दिन मौसमीक पिता अयलाह आ हमरा कहलनि जे हम कन्याक जीवनक बात बुझिऐ । ओकर सख-सेहन्ता, ओकर बाहर-भीतर, ओकर सोच-विचार, ओकर हर्ष-विवाद । ओ हमरा बुझौलनि जे प्रेम अपना जगह पर ठीक अछि मुदा बियाहसँ पहिने बहुत किछु सोच' पड़ैत छैक । हम कहलियनि-बड़ बेस । आ, प्रसंग खतम भेल ।

–तकर बाद मौसमी कहियो भैट करय नहि आयलि ?

–हँ, एक बेर आयलि छलि । मुदा फेर ओ की लेबय अबितय ?

अपन वाक्य खतम कयलनि राजवंशी जी आ फेर हँस' लगलाह । ओहिना । अन्तर्नादसँ ।

हम मोन पाड़य लागलहुँ जे ओहि मनोरोगक की नाम छिऐक, जाहिमे जरूरतिसँ बड़ बेसी हँसी आबैत होइक । की ओहि रोगक नाम जिनगी छिऐक ?

मुदा, एतय तँ अपन हँसीक छौंकीसँ जेना हमरा पिटपिटा रहल छलाह ।

हम आजिज भ' गेलहुँ । सत्ते हमरा क्रोध भेल । कहलियनि, 'प्लीज भाइ, एत्तेक नहि हँसू । झुट्ठे बेबात पर ठिठियाइत छी । की अहाँकेँ एतबो होश नहि अछि जे कोन बात हँसबाक थिक, कोन कनबाक ?'

राजवंशी जी हमरासँ एहन बात सुनबाक उमेद नहि करैत छलाह । ओ थोड़ेक अप्रतिभ भेलाह । मुदा, तुरन्ते बजलाह, ' कानब अहाँ सभक बखरामे गेल अछि महेन्दर जी । जिनगी भरि मुह लटकौने रहू आ कानैत रहू । डेग-डेग पर बहन्ना ताकैत रहू आ कानैत रहू । आश्चर्य जे अहाँसभकेँ हँसबाक बहन्ना किएक नहि भेंटैत अछि !'

'मुदा छुच्छे बहन्नासँ की हेतै ? किछु तँ वस्तुस्थितियो हेबाक चाही !! ', हम पूर्ववत् रोषसँ कहलियनि ।

राजवंशी जी खुलि क' तँ नहि हँसि सकलाह, मुदा मुस्कियेलाह जरूर । कहलनि, 'महेन्दर जी, अहाँ की चाहैछी, हमर जे टाङ कटि गेल, हमर जे संगी छुटि गेल, हमर जे सम्बन्ध टूटि गेल, तकरा शोकमे हम कनैत रही ? आ जे अनेक अंग सभ एखनो हमरा लग बचल अछि, जे संगी पल-पल हमरा संग अछि, तकरा लेल हम नहि हँसी ? एहि युवककेँ देखियौन महेन्दर जी, अपरिचित लोक छलाह । आइये भोर हिनकासँ परिचय भेल । आ, जाहि तरहें आइ भरि दिन ई हमर सहयोग कयलनि अछि, अविस्मरणीय अछि, अविस्मरणीय । अपन हजार दुख बिसरियो क' हम हिनका लेल हँसब तँ अहाँ हमरा नहि रोकि सकब महेन्दर जी !'

ठेला घीचि क' आन'बला ओहि युवक दिस हम ताकलहुँ । ओहो मरदे मुस्किया रहल छल । ❐

झंझटि

बड़ झंझटि छै कथा लिख' मे । एक दिस ताकू तँ दोसर दिस चें-भों । ओम्हर ध्यान दियौ तँ एम्हर अनघोल । नायकक चरित्रकेँ गढ़' लागू तँ नायिका बिट्ट्र काट' लागत। कोम्हरोसँ सुन्दर-सुन्दर वाक्यसभ झड़ी लगौने दौगत, कोम्हरोसँ दृश्यावली सभ । ट्रैफिकक सिपाहीकेँ देखलिऐए ? एकटा गाड़ीकेँ एक दिस पास देलक कि दोसर दिससँ दोसर गाड़ी सबार । ओकरा हम देखैछियै तँ हमरा कथाकारलोकनि मोन पड़ि जाइत छथि । अहाँक बालक जँ खिस्सा लिख' लगलाह तँ बूझि जाउ जे ओ जन्म भरि अपस्याँत रहताह ।

एतेक बात किएक कहि गेलहुँ से बूझल ? बात ई छै जे हम चारि-पाँच दिनसँ एकटा कथा पर सोचि रहल छी । हमर रचना-प्रक्रिया एहि तरहक रहल अछि जे कथा हम अपना मोनमे लिखैत छी, आ लिखि लेलाक बाद ओकरा कागत पर उतारि देल करैत छिऐक । अधिकतर हमर नाम-नाम कथासभ सेहो एक्के सीटिंगमे खतम होइत अछि, एही दुआरे । हम तँ मोने-मोन गुड़-चाउर खाइत रही जे बस, आब कथा पूरं भेल बुझू । मुदा ले बलैया । एही बचीमे धक्का-मुक्की सुरूह भ' गेलैक । पहिल झंझटि सुरूह कयलक हमर नायिका । की तँ हमरा न्याय चाही, न्याय चाही । गे दाइ, न्याय तोरा कहियो भेटलौए जे आइ माँगैछै ? एकटा बूझल की ? लेखक जे होइए ने से राड़क बहु होइए । मने राड़क बहु, सभक भौजी । आब देखियौ । जे स्त्री अपन मायसँ, अपन बापसँ, अपन कुल-खूट,कुटुम-समाजसँ, अपन देश, अपन सरकारसँ न्याय नहि माँगि पबैत अछि, सेहो लेखककेँ लूलू-थूथू केने रहै छै-हमरा न्याय चाही, हमरा न्याय चाही ।

हँ, तँ नायिका जहिना झंझटि सुरूह केलक, हमर नायक रामपुरी चक्कू ओकरा छातीपर तानि देलकै-चोप ! हमर कथाक जे अन्यान्य पात्रसभ रहथि, समाजी-सत्संगीलोकनि, सेसभ हरो-हरो कए पड़लाह । पड़ौनीक अफरा-तफरीमे ककरो कान-कपार ढहलै, ककरो धोती खुजलै । घूर जे लागल रहै, जे सभ केयो तपैत रहय, ताहिमे पयर पड़लासँ बुझू जे कैक गोटे झड़कि कनलाह ।

बात भेलै ई जे जाड़क मास रहैक आ साँझक समय । दृश्य रहैक गामक । एही ठामसँ हमरा खिस्सा सुरूह करबाक रहय । गोड़ दसेक लोक घूरकेँ घेरने बैसल । ओइमे जे सभसँ वयोवृद्ध छलाह, मानि लिय' जे बूढ़ा बबा, हुनके डायलागसँ कथा सुरूह होयबाक रहैक । ओ बजताह, 'हौ बाबू, कहलखिन रहय गोसाँइजी–

रामचन्द्र कह गये सिया से ऐसा कलजुग आवेगा

बाभन होकर बेदो न जाने, छतरी होकर खड़ग न जाने

सुदरा राज चलावेगा, तिरिया सान देखावेगा ।'

एहि पहिले डायलागसँ अहाँकेँ अन्दाज लागि गेल होयत जे देशमे शूद्रसभक राज छै, आ ताहिसँ बूढ़ा बबा दुखी छथि । यैह अंदाज लागल की ने ? बाह जी बाह। अहूँ ओकरे जकाँ छी । ओकरे जकाँ माने हमर कथाक मध्यमवृद्ध समाजी जकाँ। ओ समाजी बूढ़ा बबाक बात पर कहतै, 'मुदा जे कहह कका, अपन नेता धरि अइ सुदरा राजकेँ पानि पिया देलकै ।'

आब कने अखियास करियौ । बूढ़ा बबा जे अपन उचिती कहलखिन, ताहिमे ओ सभकेँ समेटलखिन–बाभनोकेँ, छतरियोकेँ आ तकरा संग-संग तिरियाकेँ सेहो । माने कि एकदम सर्वनकारवादी । मुदा, मध्यमवृद्ध पकड़लखिन एकटाकेँ –सुदरा राज चलावेगा । यैह होइ छै । कहैबला सभ बात कहैछै । मुदा हम-अहाँ पकड़ैछी अपन मोनक बात, अपन सुविधाक बात । देखियौ ने, प्रकृति केहन-केहन बात कहै छै, आ मनुक्ख तकरा कोन-कोन रूपमे पकड़ैछै । नहि ?

खैर छोड़ू । मध्यम वृद्धक बात सुनि क' एकटा अधबेसू कहैछै–'बुझहलक कका, की, ओइ बेर जे पुलिससँ नेताकेँ बाझलै रहय । कहाँ दन दू सय रौण्ड गोली चललै। नेताकेँ किच्छो बिगड़लै ? डकैती के सबटा समान लेने-देने रम्मै गाछी पहुँचि गेलै। बाह रे बीर ।'

दोसर गोटे बातकेँ बेकछाबैछै, 'ओहो मुठभेड़ की होइतै थोड़ ? कते तँ डकैती केलक नेता । कहियो पकड़ल गेल ? ओइ बेर तँ ओकरे मेठ के एकटा हीरो एस. पी. सँ मिलि गेलै । आ से बुझबहक ? केहन अगरजानी रहै नेता जे बूझि गेलै मरदे। दोसरे दिन सार मारल गेलाह ।'

–एँ हौ भैया, ओइ बेर जे डाक्टरक बेटाक अपहरण केने रहय, नहिञे ने पता चलय देलकै ? एस. पी. जखन रेड़म बहेड़म करय लागल तँ मारिये ने देलकै छौंड़ाकेँ! लहासो कहाँ भेटय देलकै । बाह रे बहादुर, काज हुअय तँ एहन सफाइसँ ।

तेसर गोटे अपन विचार राखैए, 'आओर जे कहह भाइ, एकटा काज धरि नेता ठीक नहि करैत रहय । जनी-जातिके इज्जति लेनाइ नै ने ठीक हौ ? तहूमे कुमारि के.....'

बूढ़ा बबा फेर बजताह, 'हँ बाबू, कहलखिन रहय गोसाँई जी-समरथकेँ नै दोस गोसाँई ।'

एहि पर एक नौजवान तरङि उठत, 'समरथकेँ जँ दोस नै गोसाँइ, तँ नेता मारल किए गेलाह ? हौ बबा, अन्याय बेसी दिन नहि जीबैछै ।'

कि बस एही बात पर झौहरि मचि जायत । सभ केयो नौजवानकेँ लुलुआब'

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

कमान छियै की खेल छियै !

आ प्रथम दृश्यमे जे घूरक गप्प हम सुनौने रही, तकर तात्पर्य बुझलियै ? मने जे सगरो इलाकामे एखन यैह चरचाक विषय बनल छै–पट्ठा रहय तँ नेता रहय। बाह रे बीर, जियो रे बीर !

हम जनै छी। एतबा खिस्सा जखन हम लिखि चुकब तँ हमर कथा एक विभ्रम-बिन्दु पर पहुँचि जायत। मने, अविश्वसनीयताक संकट औतेक। दोसरक तँ बात छोड़ू, अहीं सबाल उठा देब जे एहनो कतहु भेलैए। चौक-चौराहा पर तँ महापुरुषक प्रतिमा लगाओल जाइछै, नेता रहय गुंडा, ओकर प्रतिमा कोना लागतै ? से एतबे नहि ने, आला कमान आबि रहल छथिन उद्घाटन करय ! आ, जे एस. पी. नेताकेँ खेहारने घुरय, से आइ नेताक प्रतिमा सजा रहल अछि। बाह जी बाह, ईहो कोनो मानैबाला बात भेल ?

बेस, नै मानब तँ नै मानू। आँखि मुनने पड़ल रहू आ सोचैत रहू जे सभ किछु ठीके भ' रहल छै। अहाँ सभ तँ औ महराज, चुट्टी-पिपरी जकाँ मारल जायब। कबतक खैर मनाएगी ? नै मानब तँ नै मानू। हमरा खिस्सामे तँ एहिना होयत।

आ नै किए हेतै औ जी ! जाहि दिशामे बढ़ि रहल अछि राजनीति, आ तै संगे देश, आ तै संगे समाज ! एना नै हेतै तँ केना हेतै ?

खैर छोड़ू। झुट्ठे बिगड़ि गेलहुँ अहाँ पर ! भेल की रहै जे नेता एकटा बड़ पैघ काज क' गेल रहय। देशक राजनीति केर थोड़बो हाल अहाँ जनैछी ? जँ जनैत हेबै तँ बुझैत हेबै जे सभ पार्टीक गहमे गुंडा छिटल छै। गुंडा, चोर, वधिक, बलात्कारी। नेता की कयलक जे सभ पार्टीमे सँ एहि गुंडासभकेँ बीछि-बीछि एक ठाम करय लागल। उठह जागह बीर सभ। तोरा बल पर ई गबरघिचोर सभ सुख किए भोगतह? उठह, अपन अरजल सुख अपनहि भोगै जाह। आ, नेताक एकटा पार्टी बनि गेलै। पार्टी बनि गेलै तहँ तँ ओकर नामं भेलै - नेता। से जखन, नेता मारल गेल तँ ओकर पार्टीक बीरसभ सौँसे देशमे हड़विरड़ो मचा देलक। कतेक लोक मुइल। कतेक बस जरल, पटरी टूटल। कतेक अगिलगी भेल, कतेक लूटि। आ भीषण बर्बादीक बाद आला कमान मानि गेलै जे नेताक प्रतिमा लागत। एहि प्रतिमाक अनावरण काल्हि थिक।

आब हमरा संग फेर संकट सुरूह होइत अछि। प्रतिमा-अनावरण-समारोहक दिन की-की भेलै आ कोना-कोना भेलै, तकर हमरा वर्णन करबाक अछि। ई कथाक मुख्य स्थल होयत। एही ठाम वातावरण तैयार हेतै। जेहन शानदार वातावरण बनत, तेहने नीक हमर कथा मानल जायत। उचितो थिकै। वातावरणेक गर्भसँ ने क्लाइमेक्स जनम लैछै।

तें, एहि ठाम खूब सूक्ष्मताक संग हमरा वर्णन करबाक अछि जे कोना ओइ दिन भोरेसँ मुलुक भरिक लोक नयानगरमे जमा होअए लागल रहै। जहाँ धरि नजरि जायत

[illegible]

वध-स्थल

विमल बाबू बैलून-सन स्वभावक व्यक्ति छलाह । कखनहु मूड चढ़ि जाइनि तँ अगियाबेताल भ' जाथि । आ, कखनहु फुस्स !! विद्यार्थी बदमासी क' रहल अछि, धनि सन । चेला-चेली सभ मखौल क' रहल छनि, कोनो फिकिर नहि ।

पैंसठि टा शिक्षकमे एक विमले बाबू एहन छलाह जनिका विद्यार्थीसभ चॉक मारनि । गणितक शिक्षक रहथि । अधिकतर ब्लैक-बोर्डक काज करथि । पाछाँसँ खट ! उनटि क' ताकथि तँ छौंड़ा-छौंड़ी हिहिया दैन । पहिने मोन कचकै छलनि। एकाध दिन खोजो-बीन कयने छलाह । केयो छौंड़ा गछबे नहि कयलक कि हम

मारलहुँ। ओहि दिनमे विद्यालायक शासन-व्यवस्था एहन रहैक नहि जे सामूहिक सजाय द' पाबितथि। अनठा देथि। कहियो-काल छौंड़ासभक ठहक्काक संग अपनहु मुस्किया दैथि आ नेहोरा करथि जे हौ बाबूलोकनि, भेलह, आब थोड़ेक पढ़ि लैह।

कि एही बीचमे नबका प्राचार्य अयलाह—ए.के. राय। रायसाहेब बड़ कड़ा दिमागक लोक छलाह। अनुशासनहीनता हुनका बर्दास नहि होइनि। स्कूल ढुलमुल चलि रहल छल, से हुनका अबितहि चुस्त भ' गेल।

पहिलुका प्राचार्य विद्यार्थीकेँ बेसी महत्व देथि, शिक्षककेँ कम। जानि नहि हुनका दिमागमे कोना ई बात पलथी मारि क' बैसल छलनि जे शिक्षक चोर, बइमान आ निमकहराम होइत अछि, आ विद्यार्थी निश्छल, ... आ इमन्दार। ओ विद्यार्थीपर बेसी विश्वास करथि, शिक्षकपर कम।

स्वाभाविक छल जे विद्यार्थी उन्मुक्त आ स्वच्छन्द रहैत छल आ कमोबेश स्कूलमे अनुशासनहीनता व्याप्त रहैत छलैक।

नवका प्राचार्य बड़ कड़ियल। छौंड़ा सभ नाम देने छैक-दैतराज। दैतराज एहू दुआरें जे हुनका अबिते पिद्दी मास्टर सब दैत-सन अगरमस्त भ' गेल अछि आ बात-बेबात पर विद्यार्थी सभकेँ दंड भेट' लगलैक अछि।

दंड देबाक विधान बड्ड भयानक। छौंड़ा-छौंड़ी सभ सोचिते काँपि जाइत अछि।

ई बड़का टा स्कूल अछि। बारह सय विद्यार्थी आ पैंसठि गोट शिक्षक। प्रार्थना-सभामे सभ एक ठाम जमा होइत छैक। वेदमंत्र। प्रार्थना। छात्र-प्रतिज्ञा। आजुक शुभविचार। समाचार। क्विज। अजुका विशेष आइटम। प्राचार्यक निर्देश। आ, सभक अन्तमे राष्ट्रगान। एही सभामे उँचका मंचपर कसूरबार छौंड़ा-छौंड़ीकेँ कान पकड़ा क' वा मुरगा बना क' ठाढ़ कयल जाइक। सार्वजनिक बेइज्जती। कान अमेठि क' चारि थापड़ मारैत छैक जूनियर क्लासक विद्यार्थी। महाग भयाओन।

उँचका किलासक विद्यार्थीसभ सजाइक ई रूप देखि क' आतंकित अछि आ स्वाभाविक थिक जे उद्दंडता आब घटि गेलैक अछि।

आ, ईहो स्वाभाविके थिक जे बैलून-सन व्यक्तित्वक विमल बाबूकेँ आब छौंड़ा सभ चॉक नहि मारैत छनि।

मुदा ओहि दिन किछु आने भवितव्य रहैक।

एगारहमा किलासमे जेनरल नॉलेजक घंटी रहैक। एहि घंटीमे साइन्स, आर्ट आ कामर्स—तीनू विषयक छात्र-छात्रा एक संग रहैत अछि, आ तें आवश्यक होइछ जे ई कक्षा हॉलमे होइत छैक। ई घंटी ओहि दिन विमले बाबूकेँ लेबाक रहैन।

बैलून-सन व्यक्तित्वक विमल बाबू, जहियासँ नबका प्राचार्य अयलाह, फूलल-फूलल-सन रहैत छथि। माने कि पावरमे। माने कि कड़ा रुख। माने कि ऐसा-वैसा मास्टर हमको नहीं समझो.....।

सभसँ पहिने विमल बाबू किछुएक सामयिक घटनासभ पर प्रकाश देलनि । तखन, ओ अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालयक मादे बतौलनि । आ, तखन चुप भ' क' सोच' लगलाह जे आब की बताबथि ।

कि एही बीचमे विज्ञानक एक छात्र गणितक एक सवाल पूछि देलकनि । विमल बाबू गणितक शिक्षक रहथि । गणित हुनकर सभसँ रुचिकर वस्तु छल, कमजोरीक हद धरि पहुँचल । प्राय: सही धुनिमे ओ ई बात बिसरि गेलाह जे एखन हॉलमे अन्यान्यो विषयक छात्र-छात्रा अछि आ तें सामान्य रुचिक काज हेबाक चाही । गणितक ओ सवाल एकदम्म विशिष्ट रुचिक वस्तु छल ।

ब्लैकबोर्ड पर विमल बाबू ओ हिसाब बनब' लगलाह । एक मिनट बीतल । दू, चारि आ गोट छबेक मिनट बीति गेल । जाहि छात्र-छात्राक जरूरतिक वस्तु ओ हिसाब नहि रहैक, सेसभ वार्त्तालाप करय लागल । आर्टक विद्यार्थी तँ बेस कोलाहल करय लागल ।

मुदा, विमल बाबू धुनिक पक्का आदमी छलाह । ओ हिसाब बनाइये क' दम लेब' चाहैत रहथि ।

कोलाहल करयबला विद्यार्थीसभक मनोदशा कें अनठबैत ओ धोपलनि, 'चुप रहो! पिन ड्रॉप साइलेन्स ।' आर्टक विद्यार्थीसभ चुप तँ भ' गेल मुदा मोन तँ अस्थिर रहिये गेलैक । किछु छात्र हुनक डाँटबाक कर्कशतासँ रिएक्ट भेल । एहीमे एक छल दीपक। दीपककेँ हंरलैक ने फुरलैक, ओ एक चॉक ताकलक । भावितव्य कहियौक जे चॉक ओकरा झट द' भेटियो गेलैक । ओ चॉक उठौलक, निशाना साधलक आ ठक्......

चॉक ठीक विमल बाबूक माथ पर खसलनि । बाघ-सनक फुरतीसँ ओ पाछाँ ताकलनि, जेना चॉक नहि मारल गेल होइनि, बिच्छू डंक मारि देने होइनि । पूरा हॉल भकोभन्न । चू शब्द नहि । सभ विद्यार्थीक मुद्रा चौकस आ आँखि एकाग्र । जेना कोनो विस्फोटक प्रतीक्षामे हॉलक एक-एक कण ।

खट-खट-खट । वाजिबसँ बेसी जूताक आबाज बहार करैत विमल बाबू तीन डेग आगाँ बढ़लाह–विद्यार्थीक दिस ।

एहन फिल्मी माहौल छल जे विमल बाबू अनचोक्के हीरो बनि गेलाह । बैलून फूलि गेल आ आरो फुलैत रहल ।

कहब मोश्किल अछि जे हुनका पाछाँ तकलापर जँ सभ विद्यार्थी ठिठिया क' हँसि देने रहैत तँ हुनक आत्मविश्वास कतय चलि जइतनि, जकरा बलें एखन ओ हीरो बनि रहल छथि ।

स्वरमे अतिरिक्त कर्कशता आ रोब भरैत ओ प्रश्न कयलनि, 'कौन मारा है चॉक ?

कोनो जबाब नहि ।

ओ फेर बमकलाह, 'मैं पूछता हूँ कोन मारा ? खाल खींच लूँगा मैं । मुझे पहचानते नहीं तुमलोग । चॉक मारनेवाला खड़ा हो जाओ ।'

मुदा, केयो ठाढ़ नहि भेल ।

विमल बाबू दोसर भाँज पकड़लनि–'विजय ! खड़े हो जाओ । चलो, आओ मेरे पास ।'

विजय साइन्सक विद्यार्थी थिक । बड़का बापक बेटा थिक । ओकर बाप केन्द्र सरकारक कोनो पैघ उपक्रमक डायरेक्टर छथिन । विजय बड़ तेज अछि । सन्तानबे प्रतिशत नंबर आनि क' मैट्रिक पास कयलक अछि । नीक लड़िकाक सभ गुण ओकरामे छैक । भरि स्कूलमे केयो ओकर मित्र नहि छैक । ककरहुसँ कोनो लेना-देना नहि। पढ़ैत अछि आ मात्र पढ़ैत अछि । दुनिञा-जहान, जनता-समाजसँ कोनो मतलब नहि। पिताक सिखाओल छैक-सत बजबाक चाही आ ओ सत बजैत अछि । ककरा पर की बीतत-ओकरा कोनो मतलब नहि । हिमालयक कन्दरामे रह'बला कोनो नपुंसक जोगी जकाँ ओ निरपेक्ष अछि । मुदा, पढ़ै धरि मे बड़ तेज अछि विजय!

'विजय, चलो, आओ मेरे पास !' विजय आयल । आ, पुछला पर ओ बता देलक जे चॉक दीपक मारलक अछि । एकदम्म निरपेक्ष भ' क' बतौलक । एकदम्म सौम्य आकृति । चेहरा पर दरेगक कोनो चित्र नहि । स्थिर आ संयत स्वर । ओहिना बता देलक ओ, जेना इयाद कयल कोनो टास्क सुना रहल होअय ।

सभ जनैत अछि जे विद्यार्थीसभमे बड़ एकता छैक । केयो नहि बताओत । धुनि दियौ तैयो नहि । एक विजैये बता सकैत छल । ओ बड़ तेज विद्यार्थी अछि आ ओकरा ककरोसँ किछु लेना-देना नहि छैक ।

विजय नाम बता देलक तँ हॉलमे कोलाहल मचि गेलैक । किछु गोटेक कहब रहैक जे नहि, गलत बात थिक, दीपक नहि मारलक अछि, आ किछु गोटेक उच्चरित मन्तव्य रहैक जे ई साला विजैया हद दरजाक हरामजादा अछि ।

सामान्य कदकाठी आ देहदशाक विद्यार्थी दीपककेँ ठाढ़ कयल गेल । घीचि क' ओकरा शिक्षकक आसन लग आनल गेल ।

विमल बाबू अपन शरीरक समस्त शक्ति अपन दहिना हाथकेँ देलनि, जेना कहियो सभ देवता मिलि क' अपन-अपन शक्ति दुर्गाकेँ देने रहैक । महिषासुर-वध करैक निमित्त अपन शक्तिमान हाथ विमल बाबू हवामे उठौलनि आ सटाक......दीपक केर गाल पर जोरदार चमेटा पड़ल । ओ तिलमिला गेल । दोसर गाल पर दोसर चमेटा। पहिल गाल पर तेसर चमेटा । दोसर गाल पर चारिम भयावह चमेटा ।

सभ विद्यार्थी सन्न आ हॉलमे पिन ड्रॉप साइलेन्स ।

दीपककेँ लागलैक जे आब जान नहि बाँचत । आब किछु करबाक चाही...।

आ जान बचयबाक जे उपाय ओकरा सभसँ सहज लागलै, ओ कयलक ।

आ चारिम अथवा पाँचम चमेटा खयलाक बाद दीपक विमल बाबूक हाथ पकड़ि लेलक आ प्रतिरोधमे तिलमिलाइत बाजल, 'सर, यू हैव नो राइट टु बीट मी....!'

आ, फिल्म आब अपन क्लाइमेक्स दिस बढ़' लागल । खलनायकक डायलॉग बड़ जोरदार छलैक । जबाब हीरोकेँ देबैए पड़त । विमल बाबू बौला भ' गेलाह । ओ भिलेन केर कालर पकड़लनि आ डायलॉग, 'अरे चोट्टे की औलाद ! तू मेरे को बोलेगा यू हैव नो राइट । ठहर मैं राइट दिखाता हूँ ।'

एके धक्कामे दीपक नीचाँ खसि पड़ल आ हकमय लागल । विमल बाबू अपन जूताक नोकसँ ओकरा मार' लगलाह जेना हीरो फुटबॉलक शॉटमे हो । आ डायलॉग-'कुत्ते लोग अपना पिल्ला यहाँ भेज देते हैं......हमरा दिमाग खाने.....चोट्टे, देश को रसातल पहुँचाएँगे । ....ले अब समझ राइट.....ले....।'

संक्षेपमे, दृश्य ई छल जेना सामन्तक कोनो पोसुआ दरोगा कोनो नक्सलवादीकेँ पीटि रहल होइक आ ओकरासँ ओकर साथीसभक पता माँगि रहल होइक ।

हॉलमे बैसल विद्यार्थीसभ भ्झौहरि कर' लागल, 'सर, अब छोड़ दीजिए सर । प्लीज सर, अब छोड़ दीजिए ।'

स्कूलक सभसँ तेज विद्यार्थी विजय, मुदा एकदम्म शान्तचित्त बैसल छल आ निरपेक्ष आ संयत दृष्टिसँ सभटा दृश्य देखि रहल छल । जेना उपनिषदक परमात्मा दुनियादारीक खेल टुकटुक मुदा निरपेक्ष देखैत रहैत छैक ।

झौहरिकेर असरि विमल बाबूपर ई पड़ल जे ओ फर्श पर पड़ल खलनायककेँ कालर पकड़ि ठाढ़ कयलनि आ घीचैत हॉलसँ बाहर भेलाह । विजय प्राचार्यक चेम्बरमे आनल गेल ।

प्राचार्य महोदय ई सुनितहि [illegible] साक अवत[illegible] भ' गेलाह जे ई एक बाकुटक जबान शिक्षककेँ चॉक मारलक अछि । ओ अपन [illegible] उठौलनि आ गर्दनिशान क' देलनि । दीपक बपहारि तोड़ैत रहल ।

सौंसे स्कूल अनघोल भ' गेलैक जे दीपक पकड़ल गेल अछि आ ओकर हालति खराब छैक ।

विद्यार्थीसभ अपना-अपना किलाससँ बहरा क' बरंडा आ करीडोरमे आबि गेल आ ओकरासभक चिन्ता आ भयक अभिव्यक्ति कोलाहल बनिक' सौंसे स्कूलकेँ व्याप्त क' लेलक । आन-आन शिक्षक सभ [illegible]गाह आ धोपि-डाँटि क' विद्यार्थीसभकेँ अपन-अपन अड़गरामे ढुकौलनि ।

दीपकक केस पर अनुश[illegible]सन [illegible] कालिह प्रार्थना-सभामे दीपककेँ सार्वजनि[illegible]

सीनियर क्लासक विद्यार्थीक लेल सभसँ भयंकर सजाय येह छल, आ दीपक कैँ सैह देब तय भेल । तत्काल ओकरा छोड़ि देल गेल । ओ हकमैत प्राचार्यक चैम्बरसँ बहरायल आ सीधे स्कूलसँ बहार भ' गेल । अपन बस्ता धरि ओ छोड़ि देलक आ कतहु चलि गेल । जयबा काल ओ कानि रहल छल आ काँपि रहल छल ।

बारहमा किलासक किछु विद्यार्थी प्राचार्यसँ भेंट करय आयल । ओकरासभक कहब रहैक जे दीपककेँ पर्याप्त सजाय भेटि चुकल अछि आ तेँ आब ओकरा माफ क' देल जयबाक चाही ।

पुलिस-अधीक्षकक रोबदार आवाजमे प्राचार्य गरजलाह–'तुमलोग नेतागिरी करने आए हो ? अपने-अपने क्लासमें जाओ ।'

जाइत-जाइत एक हिम्मतिगर विद्यार्थी बाजल, 'सर, यदि दीपक बहुत बदमास अछि तँ ओकरा टी.सी. द' दियौक, मुदा.....।'

मुदा, प्राचार्यक मन्तव्य रहनि जे टी.सी. देब विद्यार्थीक हितमे नहि हेतैक । ओकर पढ़ाइ मारल जेतैक । ओकर भविष्य खराब हेतैक । ओ जँ बदमास अछि तँ ओकरा सजाय द' क' सुधारल जायत आ योग्य नागरिक बनाओल जायत ।

विद्यार्थीसभ आपस घुरि गेल । मुदा, अंतिम वाक्य धरि बजैत-बजैत प्राचार्यक स्वर ततेक नरम आ विवेकशील भ' उठल रहैक जे विद्यार्थीसभकेँ लागलैक जे दीपक कैँ माफ क' देल जेतैक ।

कतय-कतय दन बौआइत दीपक साँझ खन अपन घर गेल । ककरहुसँ किछु नहि कहलक । ओकरा गुमसुम आ उदास देखि माय-बापकेँ चिन्ता भेलैक मुदा दीपक कहलकैक जे कोनो बात नहि, ओ थाकि गेल अछि आ सूति रहत तँ सभ ठीक भ' जयतैक ।

साँझ खन बारहमाक ओ विद्यार्थीसभ दीपकक घर पर गेल । दीपककेँ सान्त्वना देलकैक आ उमेद जगौलकैक जे काल्हि प्राय: किछु नहि होएत । दीपककेँ माफी भेटि जेतैक । सभ विद्यार्थीसँ दीपक आग्रह कयलक जे ओकर माता-पिताकेँ एहि घटनाक खबरि नहि होइक, नहि तँ एम्हरहु भयंकर होएत ।

ओहि सौंसे राति दीपककेँ निन्न नहि भेलैक । कखनहु ओ नेप चुआब' लागय–जानि नहि कोन बातक ओकरा सन्ताप रहैक । यद्यपि एहि बातक लेल ओ किन्नहु तैयार नहि छल जे ककरो पयर पकड़ि क' माफी माँगि लेल जाय । मुदा, तैयो ओ घंटो भरि कानैत रहल । प्राय: अपन अपमान पर कानल । प्राय: अपन अक्षमता पर कानल जे ओ कतेक शक्तिहीन अछि जे ओकरा एहि तरहेँ अपमानित कयल गेलैक। तखन ओकरा आब'बला काल्हुक संभावित दृश्य ध्यानमे आबि जाइक । ओ काँपि उठय ।

कखनहु जोशसँ ओकर छाती फूलि उठैक । साँस तेज भ' जाइक । ओ बदला लेत । एकदम्म लेत । एहि अपमानक बदला ओ लइये क' रहत ।

मुदा, फुस्स ! फेर ओ कान' लागय । ओकरा काल्हुक संभावित दृश्य ध्यानमे आबि जाइक ।

ओकरा मोन पड़ि जाइक—खुशबू, दसमा किलासक ओ पतरकी छौंड़ी ! ओकरासँ दीपक प्रेम करैत अछि । खुशबूकेँ दीपक पर गर्व छैक । प्रार्थना-सभामे खुशबू रहत। आ ततय ओकरा मुरगा बनाओल जयतैक आ कान पकड़ा क' प्रतिज्ञा....ओह....!ओही स्कूलमे पढ़ैत छैक एहि कॉलोनीक ढेरी विद्यार्थींसभ । ओकरासभक बाप दीपकक पिताक सब-ऑर्डिनेट छथिन । ओकरासभक बीच दीपक केर बेस इज्जति छैक..! तकर सभक समक्ष....! ओह.....! लडिकी सभ ओकरा अपमानित देखि क' कोना खिखियाएत ! कोना ठट्ठा करत...., ओकरासभक आँखिमे केहन मजाक !! ओ भलमानुस बन' चाहैत अछि, मुदा....छोटका किलासक विद्यार्थींसभ की सोचैत जाएत. ....दीपक भैया कहैत छैक सभ ओकरा , आ तकरा सभक सामने ...,ओह...!

मुदा,....ओकरा मोन पड़ैक अपन ओहि सीनियर सभक बात जे साँझखन एतय आयल रहैक । नहि, से सभ किछुओ नहि होयत । अपमानित होयबासँ ओ बाँचि जायत....।

स्कूल जायब की जरूरी अछि ? हँ ! एकदम्म ! नहि तँ पिता-लग शिकाइत चलि अयतनि आ तखन तँ दुनू दिससँ जायब ।

धुह.....! स्कूल ओ जायत । जे हेतै देखल जेतै । ओ बदला लेत । अपन अपमानक बदला । मुदा, बदला ककरासँ लेत ?

दोसर दिन भोरे ओ तैयार भेल । एकदम्म सहज आ निर्विकार । माता-पिताकेँ पता धरि नहि चललनि जे ओकर दिनचर्यामे कोनो फरको आयल अछि । बारहमाक ओ विद्यार्थींसभ ओकर बस्ता नुका क' ल' आयल रहैक । ओ बस्ता ठीक कयलक। आजुक रूटीनक किताब-कॉपी लेलक । टिफीन बॉक्स लेलक । आरामसँ भोजन कयलक । स्कूल जयबासँ पूर्व अपन रूममे गेल । केबाड़ बन्न क' क' किछु काल भीतर रहल आ निश्चिन्त भेल साइकिल दौगबैत स्कूल चलि देलक ।

एम्हर स्कूलो सहज रहैक ! ओकरा लागलैक जे नहि, आब कोनो खतरा नहि अछि । मुदा, तैयो ओ अपना तरहें तैयार रहल ।

घंटी बाजल । हाजिरी भेलैक । विद्यार्थीं सभ प्रार्थना-सभामे जमा भेल । माइक लागल । वेदमंत्र । प्रार्थना । छात्र-प्रतिज्ञा । समाचार । आजुक शुभ विचार । क्विज....।

सभ किछु सहज-सामान्य रूपें होइत गेल । बारह सय विद्यार्थी । पैंसठि गोट शिक्षक। सभ सहज छल । असहज छल मात्र दीपक । ओकर ध्यान, जे भ' रहल छलैक ताहि पर नहि छल, ओ जेना जान' चाहैत छल जे आगाँ की होयत.....।

आगाँ ई भेल—

गेम्स टीचर माइक पर एलाह । काल्हि विमल बाबूक किलासमे दीपक जे किछु

कयने छल, से विस्तारपूर्वक बताओल गेल । दीपकक नालायकीपर व्याख्यान भेल । कहल गेल जे एना करब कतेक भयंकर अपराध थिक, जकर सजाय कतबो देल जायत, कम होयत...।

दीपक किछु सुनि नहि रहल छल । भाँय.....भाँय......ओकर कानमे एक अजीब तरहक मारक स्वर गूँजि रहल छलैक । ओकर मगज सुन्न भेल जा रहल छलैक । आब ? हौ बाप आब ? ओकर माथ घूम' लगलैक । आँखिक आगू अन्हार पसर' लगलैक। ओ आब बेहोश भ' क' खसि पड़त । दीपक ! दीपक ! की भेलह दीपक! होश करह । हिम्मतिसँ काज लैह....घबराह जुनि... !

ओकरा भीतरसँ आवाज आबि रहल छलैक–दीपक, जागह; तोरा बदला लेबाक छहु.......।

मंचपर दीपक बजाओल गेल । दीपक सुनलक । आ, बताह जकाँ दौड़ि पड़ल।

बारहो सय विद्यार्थी साँस रोकि क' अगिला कार्यक्रम देखबाक प्रतीक्षा क' रहल छल ।

दीपक दौड़ल मुदा मंच पर नहि गेल । दौड़ि क' ओ अपन किलास दिस पड़ायल।

मंचपर उपस्थित प्राचार्यकेँ, अनुशासन-समितिक सदस्य-शिक्षककेँ आ आनो शिक्षककेँ ई बात बड़ बेजाय लगलैक । एकहि बेर सभ केयो दीपक पर क्रोध कयलक।

गेम्स टीचर आ आन-आन तीन शिक्षक आ चारि विद्यार्थीकेँ दीपकक पाछाँ दौड़ाओल गेल–ओकरा पकड़ि क' आनल जाय !

आन क्लास-रूमक मुह पर जा क' दीपक ठमकि गेल ।

सभ केयो साफ-साफ देखलक जे दीपकक हाथमे एकटा छूरा छैक । एकदम्म धरगर आ तेज ।

मुदा, पछोड़ धयल लोक आगाँ बढ़ल । विमले बाबू जकाँ दीपक अनल सौंसे देहक शक्ति दहिना हाथमें केन्द्रित कयलक आ अपना पेटमे छूरा मारलक–खट् !

नहि । छूरा बेल्टमे लागलैक । लोकसभ बुझलक जे विजय डेरा रहल अछि आ भेना करैत अछि ।

दीपक फेर हाथ उठौलक । पहिनहुसँ कदाचित् बेसी शक्ति-संचय कयलक आ खच्च्......। छूरा ओकर पेटमे भोकयलैक आ ओ खसि पड़ल ।

छूरा भोंकैत काल ओकरा मुहसँ एक छोट वाक्य बहरायल छलैक, 'लोस्साला!

प्रार्थना-सभा विसर्जित भेल । दीपक अस्पताल पठाओल गेल । स्कूलमे हड़कम्प मचि गेलैक । आधा घंटाक बाद टेलीफोन आयल, 'योर दीपक कुमार इज नो मोर......।'

मुदा तखन प्राचार्य अपन चेम्बरमे नहि छलाह । ओ एस.पी.सँ भेंट करय गेल छलाह........। ❒

धाह

मैथिली कन्याक प्रति इयैह हमर सभसँ पैघ शिकाइत अछि । हे दाइ, तों बी.ए.एम.ए. मे पढ़ैत छह, डाक्टरी-ओकालति पढ़ैत छह, अपना पयर पर ठाढ़ होअय चाहैत छह, तँ कने अपन आत्मबलो पर ठाढ़ होअह । मुदा, से नहि । घरसँ बहरयतीह तँ पुरुखक संग चाहियनि । की तँ एसकर कोना जायब ? इह, से जेना पुरुख सत्ते हिनक रक्षक होइयनि ।

अनीताकेँ परीक्षा देब' भागलपुर जयबाक रहनि । साँझ धरि ओ घुरि औतीह । ओ अपन जेठ भाय सुजीतकेँ संग चलय कहलखिन । सुजीत जाय नहि चाहैत छल। अपन घरक स्त्रिगणसंगें कतहु जायब ओकरा पसिन्न नहि । की, तँ ओ ऊब आ बन्हन

अनुभव करैत अछि !

मुदा, पिताक आदेश भेलैक तँ सुजीतकेँ चलैए पड़लैक-निखिन्न मनसँ आ अन्यमनस्क भावें ।

सुजीतक पिता प्रियव्रत बाबू हमर परम मित्र । बेर-कुबेर काज आब' बला । खूब बुझनुक आ व्यवहारी । कुल्लम दूटा धिया-पुता । सुजीत मेडिकल कॉलेजमे पढ़ैत अछि । नेनपनेसँ खूब-चन्सगर आ होनहार । ओकर नेनपनक क्रिया-कलाप औखन हमरा मोन अछि । सभ कथूमे ओकर उद्दाम प्रतिभाक परिचय भेटैत छल । आ से एकहि प्रयासमे मेडिकल कइयो गेल । दरभंगामे नाम लिखौलक अछि आ छुट्टी सभ मे वा अनदिनो घर अबैत रहैए ।

मुदा, किछु दिनसँ ओकर क्रियाकलाप बिगड़लैए । पछिला बेर प्रियव्रत बाबू बड़ चिन्तित छलाह । कोना-कोना हम हुनका सम्हारने रही । हम सुजीतकेँ सेहो बहुत समझौने रहिऐक ।

दंगा भेल रहैक । मुसलमान-सभक घर जरा देल गेल रहैक आ लूटि भेल रहैक। एक बूढ़ा खाँ साहेब मारलो गेल छलाह । एहि दंगाबाज सभमे सुजीतो रहय । किछु गोटे तँ कहैए जे सुजीते अगुआ रहय । जे-से । दरोगाकेँ बीस हजा द' क' मामिला सलटौलनि प्रियव्रत बाबू ।

तखन दोसरे कुकांड । पड़ोसिया धोबिक बेटीक संग बलात्कार कयलक सुजीत। बात मुदा बढ़लै नहि । धोबि बेचारे अपन इज्जतिकेँ अपनहि झाँपलक-तोपलक । प्रियव्रत बाबू ओकर बहुत उपकार कयने रहथिन, तकरो थोड़ेक धाख ओ राखलक ।

प्रियव्रत बाबू बड़ा चिन्तित छलाह । कोना-कोना हम हुनका सम्हारने रही । हुनका बुझबा जोग नहि भ' रहल छलनि जे एना किएक भ' रहल छैक ! बेटाक संतुलित विकासमे कत' की चूक भ गेलै जे एना भ' रहल छैक ! ओ अपनहिकेँ देखी मानि रहल छलाह । हम हुनका बुझौलियनि जे बात से नहि छैक ।

ओ एहू दुआरे चिन्तित छलाह जे सुजीत अपन 'कोठलीमे त्रिशूल राख' लागल अछि आ 'नमस्ते, क बदला 'जय श्रीराम' कहय लागल अछि ।

सुजीतकेँ बहुत रास मित्र रहैक-कुलीगिरी कर'बलासँ ल' क' ऑफीसर धरि । आबारा-बेरोजगार तँ सहजहि बहुत । ओ नेनपनेसँ बहुत मिलनसार छल । पिता सेहो तेहने रहथिन । पिताकेँ कोनो शिकाइत नहि रहनि, कारण पहिले प्रयासमे ओ मेडिकल क' क' देखा देने रहय । पिता मानथि जे समूहसँ जुटल रहब सदति श्रेयस्कर होइत अछि ।

नेनपनेसँ सुजीत पूजा-पाठमे खूब रुचि लैत छल । ईहो ओकर पारिवारिक संस्कार रहैक । ओकरा घरमे अगरबत्ती जरा क' रामायण सीरियल देखल गेल रहैक । सुजीतकेँ ई नीक लगैत रहैक ।

सिनेमा देखबाक शौकीन सेहो ओ नेनपनेसँ अछि । मनोरंजन तँ आवश्यके छैक। 'मनोहर कहानियाँ' आ 'फिल्मी कलियाँ' नियमित ओकरा घरमे अबैक । सुजीत तकर नियमित पाठक छल । ओकरा रूटीनमे टी.भी. देखबाक समय सेहो नियमित रहैक।

जहियासँ दंगाबला केस भेलैक, सुजीतक प्रति प्रियव्रत बाबू चौकस भेलाह । ओकर संगी-साथी कम कयल गेलैक । ओकर दिनचर्या पर ध्यान राखल जाय लगलैक, मुदा एही बीच ओ दरभंगा रहय लागल ।

अस्तु, पिताक आदेश भेलैक तँ सुजीतकेँ बहिनिक संग चलैए पड़लैक । भोरुका गाड़ी पकड़ल गेल । दस बजे ओ सभ पहुँचि गेल । बारह बजेसँ अनीताक परीक्षा रहैक । सवा चारि बजेक गाड़ीसँ ओकरा सभकेँ घुरि अयबाक रहैक ।

स्टेशनसँ जहिना सुजीत बाहर निकलल ओकर नजरि सिनेमाक बड़का पोस्टर पर पड़लैक । ओहिमे माधुरी दीक्षित नंग-धड़ंग भेलि नचैत रहय आ दूटा युवती ओकर संग द' रहलि छलैक । ओ 'खलनायक' क पोस्टर छल । ओहि फिल्ममे रहस्योद्घाटन कयल गेल रहैक जे युवती सभक आँगीक तरमे की रहैछै । सुजीतक मोन कसमसा उठलैक । ओ निर्णय कयलक जे सिनेमा ओ अवश्ये देखत । बहिनिक संग ओकर एतय आयब आब ओकरा सार्थक लाग' लागल छलैक ।

अनीता अपना संग दिनुका भोजन अनने रहय । से मुदा सुजीतकेँ पसिन्न नहि। ओ दूनू होटलमे खेनाइ खयलक आ परीक्षा-केन्द्र दिस चलल ।

बाटहिमे ओ सिनेमाहॉल पड़ैत रहैक । सुजीत देखलक जे बहुत भीड़ छै । ओकर खून मुदा अकुलाय लागलै । भीड़मे टिकट ली तखन ने मर्द । अनीता सेहो सिनेमा हॉल दिस ताकलक मुदा ओकर ताकब सुजीतकेँ नीक नहि लगलैक ।

एगारह बजेक करीब अनीताकेँ परीक्षा-केन्द्र पर पहुँचा क' सुजीत बाजल, 'हम चलैछियौ । ठीक तीन बजे आबि जेबौ । तों ठीकसँ परीक्षा दिहें ।'

अनीताकेँ अपन संगी-साथी भेंटि गेल रहैक । ओ ओहिमे लागि गेलि ।

सिनेमाहॉल लग जखन सुजीत आयल तँ ओकरहु एकटा संगी भेंटि गेलैक । ओकरे पड़ोसिया । ओ एही ठाम कालेजमे पढ़ैत अछि । दुनू नगोटिया इयार । सुजीतकेँ नीक लगलैक ।

मुदा, टिकट कोना भेटत ? भीड़ आफन तोड़ि रहल छलै । जते लोकक सीट हेतैक हॉलमे, तकर तिनगुन्ना लोक तँ अवश्ये जुटल होयत । अधिकतर विद्यार्थी ।

[illegible] बयसार नीक। ओहिना एकटा [illegible] छैक, ए सुजीतकेँ ठीक बीढ़ गेलैक
आ एक बहुत नामी कहलक, मुदा पिछलकोसँ टिकट लय [illegible] बीढ़ गेलैक
[illegible] बूझल छैक जे टिकट ब्लैकमे बिकाइ छै। आ सुजीतकेँ कहलक जे सुजीत
बेचार भ' गेल। मुदा, ब्लैकमे सार [illegible] चाहबे। आ एक टिकटक [illegible]
टाका बीस छल। सुजीत पचास टाका लेल तैयार रहय। मुदा, [illegible]
रहैक।

सुजीत लाहरि गेल। अपन उपक्षा ओकरा सहज बीढ़ गेलैक। पुरा [illegible]
व।' आ चीढ़ि दिस चिकरल 'जुलुम हो रहा है, जुलुम! माग टिकट ब्लैकमे [illegible]
रहा है। पब्लिकको की मिलेगा [illegible] कैसे?'

ब्लैकिया पहलवान बाजल, 'ओ सर, अहाँकेँ बीढ़ नवाक ठीक, नै
लिअ। लेकिन हल्ला कैसे करते हो?'

पहलवान ओकरा 'सर' कहलकैक, से आकर आत्मविश्वास आग बीढ़ गेलैक
आ चिकरल, 'हम पुलिसको खबर कर रहे हैं। इसलिए माला नहीं लगा गया ना [illegible]
गया नहीं!'

पहलवान बाजल, 'निकालू पचास। लिय' टिकट।' मुदा, एतबाम ओकरा
आत्मविश्वासक ग्राफ बहुत बीढ़ि गेल रहैक। आ बाजल, 'हम मैनेजर से मिलेंगे'
थफ्फकुइल, ऑफिस आ मैनेजरक चेम्बरमे गेल नैँ आन' कथा नहि छल। सुजीत
फोन उठौलक। नगरथानामे आ एस.पी. क नंबर लेलक। सुजीत एस. पी. केँ फोन
कर' लागल।

पहलवानक संख्या एहि बीच तीन भ' गेल रहैक, जकरा सभक हाथमे डंटा
रहैक। एक पहलवान सुजीतक कालर धयलक आ एक हाथ मारने होयत कि सुजीत
बेदम भ' गेल। एहि बीच शेष दुनू पहलवान ओकरा अपन डंटासँ दचोलक।

सुजीतक संगी अपन जान ल' पड़ा गेल रहैक।

हँ, एकटा थरि सही काज कयलक सुजीतक संगी। ओकरा बूझल रहैक जे अनीताक परीक्षा बारह बजेसँ छैक। ओ दरबर मारने अनीता लग पहुँचल आ समटा खिस्सा कहि सुनौलकैक। अनीता परीक्षा छोड़ि देलक। ओ झट द' सिनेमा हॉल पहुँचल। ओतय ओ देखलक जे भीड़ छौँट रहल छैक आ माझ ठाम बेहोश पड़ल सुजीतक मुह पर माछी भिनभिना रहलैक अछि।

ओ हाकरोस कर' लागलि। आ, मनचला सभ तकर मजा ल' रहल छल।

X X X

हम एही शहरमे एक सरकारी फ्लैटमे रहैछी आ चाकरी करैछी। प्रियव्रत बाबूक

ओहू बच्चाकेँ हमर डेरा बूझल छैक । से, बेहोश सुजीतकेँ रिक्शा पर टाँगने अनीता हमरा डेरा पर ल' अनलकै । अस्पताल हमरे डेराक रस्तामे पड़ैत अछि ।

हम घबरा गेलहुँ । सुजीतकेँ अस्पताल ल' गेलिऐक । ओकरा स्पेशल वार्डमे भरती करौलिऐक । होश आब'मे सात घंटा लागि गेलैक ।

दोसर दिन प्रियव्रत बाबू सेहो हकासल-पियासल दौड़ल अयलाह । हुनका देखि क' लगैत छल जे सुजीत भने बचियो जाय मुदा ई तँ मरिये टा जेताह ।

सुजीतकेँ ठीक हेबामे सात दिन लागि गेलैक । ओहि दिन ओकरा अपना डेरा मे ल' अनलिऐक ।

तकर अगिला भोर सुजीत स्वस्थ आ प्रसन्न छल । हमहूँ ओकरे लग बैसल रही।

हम पुछलिऐक, 'एँ हौ सुजीत, नेनपनमे तँ तों बड़ गंभीर छलह । स्वेट मार्डेन केर पोथीसभ पढ़ैत रहह । एक बेर हमरा कहने रहह जे डाक्टर बनब तँ बरड़केर दबाइ आविष्कार करब । आ, आब तोरा की भ' गेलह अछि ? हाउ शेलोनेस.......छि :......।

सुजीत मूड़ी गोंति लेलक । ओ अपना दहिना तरहथकेँ देख' लागल जे कि ओकरा कोरामे पड़ल छलैक । हमरा लागल जेना ओ हस्तरेखा देखि क' बूझ' चाहैए जे एना किएक भेल ?

अनीता बजलीह , 'नेनपनमे तँ गाम-घरमे रहै छलाह । आब बाहरक हवा लागलनिहें। बाहरक हबे बड़ बिखाह छै कका !'

हम उदास भ' गेलहुँ । एहि तरुणीकेँ बाहरक हबाक केहन हल्लुक आ सपाट ज्ञान छैक ! हम विचार' लगलहुँ—कदाच, एकरे कहल साँच होइत । मुदा नहि, बाहरक हबा तँ आब घर-घर ढुकि गेलैए । सेहो ढुकलैए कहाँ ? लोक बेसाहि-बेसाहि ढुका अनलक अछि ।

भोरेसँ हम चिंतामे रही जे अपन मोनक बात सुजीत लग कोना क' राखी ।

थोड़े कालक बाद अपन जेबीसँ निकालि क' हम दूटा टिकट ओकरा दिस बढ़ा देलिऐक । ओ सिनेमाक टिकट छल, जकरा हम बड़ जोगारसँ मँगबौने रही ।

सुजीत आस्तेसँ पुछलक, 'ई किऐक ?'

हम कहलिऐक, 'खलनायक केर टिकट छियहु सुजीत । दू टा छहु । जाह, देखि आबह । अपनो जाह आ अपन बहिनिकेँ सेहो लेने जाह ।

सुजीत आग्नेय नेत्रसँ हमरा दिस ताकलक । हम तँ ओकरा दिस ताकिये रहल छलहुँ । ओकरा आँखिमे ओतेक धाह किएक रहैक ? ❐

उद्दीपन

बड़ी कालसँ तीनू घूर लग बैसल रहय–छोटन लाल, ढोढ़ाइ आ पहुना । तीनू जातिक डोम । एहि गाममे मिला-जुला क' डोमक एक्कोटा घर । सेहो, लोक कहैत अछि जे एइठाँ डोम रहै थोड़े ? पुरैनियाँसँ आनि क' एक घर बसाओल गेल । ओहो कोनो गाम भेल जतय एक घर डोम नहि हो !

छोटन बूढ़ अछि । वैह आइसँ बीस-बाइस साल पहिने एहि गाम आयल छल। ओकर जुआन बेटा थिकै–ढोढ़ाइ, आ पहुना थिकै जमाय । बूढ़ा बेटी-जमायकेँ अपनहि ओतय बसा लेलक अछि ।

दूनू सार-बहिनोय आधा दिन धरि सुग्गर चरबैत अछि । तखन आँगन आबि डाला-दौरा-सूप बुनैत रहैत अछि । कखनहु फुरसतिमे नहि रहैत अछि । नीक जकाँ गुजर चलि जाइत छैक । कमी नहि रहैछै । मुदा ढोढ़ाइकेँ खुशी नहि छैक । ओ आब कने-कने बुझनुक भेल जाइए । ओना, ई बुझनुक होयबाक प्रक्रिया ततेक स्पष्ट छैक जे बूढ़ा छोटनलाल कहैत छैक, 'सार, तूँ आब बूढ़ि गेलही । हियाँ पर हमरा आउर चारि जुगसँ रहैछी । कहियो कोनाहितो कुच्छो बात नहि भेल । आ तोरा बाबू-भैया लोगके बेबहार गड़ैछौ ? गरदस्सा के बेर एलौ हन सार........।'

ढोढ़ाइ बापकेँ बुझब' चाहैत अछि, 'हौ बाउ, ऊ तोरा आउर के जुग दोसर रह। आब जबन्ना बदलि गेलै हन से तूँ नै बुझहै छहक ?'

'बुझबै की बापक...' ।, बुढ़बा खौंझा जाइत अछि, 'केतनो जबन्ना बदलतै तैयो हमरा आउर सुगरै चरेबै । अँइठे खाएबै । कहै ले तँ लोग एनाहिते कहतै ! लोग के कहला पर चलबह तँ सार मारल जेबह.......।'

ढोढ़ाइकेँ बकटेटी करबाक आदति नहि छैक । आ, एकटा ईहो बात छै जे ओकरा अपन एहि नव संस्कार पर खूब विश्वासो नहि छैक । रहरहाँ ओकरा लागैत रहैत छैक जे बाउ ठीके कहि रहल अछि । पहुना बाउ केर बात पर सहमति द' देल करैत छैक, से ओकर मनोवृत्ति आरो जड़ भ' जाइत छैक । ओ चुप रहि जाइत अछि, आ दिनचर्यामे बन्हा जाइत छैक ओकर जीवन ।

ओकर मनोवृत्ति एहिना बरोबरि जड़ होइत रहैत छैक, आ संस्कार परसँ विश्वास उठि-उठि गेल करैत छैक ।

दू-तीन मास पहिने एक बेर ढोढ़ाइकेँ मोन भेलै जे अपन बेटाक नाम स्कूलमे लिखा देअय । केयो कहने नहि रहैक । अपनहि मोन भेलै जे एक बेर नाम लिखा क' देखैछियै । पढ़ि-लिखि लेतै, तँ ऑफीसर-बड़ा बाबू त नहि जे, चपरासियो बनि गेलै तँ जिनगी सुधरि जेतै । ओ एकटा सपना देखलक-जागल लोकक सपना । ऑफीसमे हाकिम बैसल छै, आ एकर बेटा बीयनि डोला रहल छैक । हाकिम साहेब कहैत छैक , 'सुगनलाल, पानी पिलाओ ।' ओ पानि ढारि क' गिलासमे दैत छैक। हाकिम गटागट पानि पीबि जाइत छैक । हाकिम एक्को बेर नहि सोचैत छैक, ई डोम थिक, एकर छुअल पानि कोना पीब ।

ई सपना ढोढ़ाइकेँ बहुत खुशी देलकैक । ओकर देह आनन्दसँ सिहरि उठलैक। सैह,एहनो भए सकैछै जे आफीसर सब हमरा आउर के भरल पानि पी लैते ? मोन कहलकै, पढ़ल-लिखल लोक छुआछूत नै मानैछै ।

ओ दोसर दिन सबेरियामे स्कूल गेल । हेडमास्टरसँ भेंट कयलक, 'हजूर, हमरा मोन होइयन जे अपनो छोड़ाके नाम लिखाबी । हमरा आउर के खरहू के नाम यहाँ (अहाँ) अपना इस्कूलमे लिखबै ?'

–हँ हौ, किए नै लिखबै ? ई तँ सरकारी इस्कूल छियै । कोनो जातिकेँ अइठाँ छोट थोड़े मानल जाइछै ?

–नामलिखाइ कते लागतै ?

–पाँच टाका लागतहु । आ सरस्वती-चन्दा अलग ।

–हे ई लियौ । आ सुनियौ हजूर, सरोसती मायके दयासँ हमर छौड़ा पढ़ि लेलकै तँ हम यहाँकेँ जोड़ा धोती पहिरैभ । आ, आइ दिनासँ हमरा घर के बनल चीज-बौस यहाँके फिरी मिलत ।

दोसर दिन छौंड़ा स्कूल आयल । क्लासमे विद्यार्थीसब जगह नहि देलकै, 'हे यैह एलौ डोमा । मार सार डोमराकेँ ।' ई लोकनि छला मिथिलाक भावी कर्णधार।

संस्कृत शिक्षक छलाह गौआँ, नाम सहदेव पंडीजी । तरड़ि उठलाह हेड मास्टर पर' 'ई कोन खेल पसारल अछि औ जी ? स्कूलक इज्जति रहय देबै की नहि ? डोम थिक तँ डोमे जकाँ रहय । अइ स्कूलमे एकर पढ़ाइ नै हेतै ।'

हेड मास्टर बुझब, चाहलनि, 'पंडीजी, ई सरकारी स्कूल छियै । आ अहाँ सरकारक नोकर छी । सरकारी कैदा-कानून अहाँ बुझितै छी । तें ई अइ स्कूलमे पढ़त तँ अहाँसबकेँ दुख नहि होना चाही ।'

मुदा, पंडीजी छलाह जिद्दी । गुटबाजी कयलनि । सब शिक्षक पंडीजी दिस।

हेड मास्टर एसगर पड़ि गेलाह ।

ओहि छौंड़ाकेँ रोजे प्राणघातक मारि लाग' लागलैक । अइ लेल सब राष्ट्रनिर्माता एकमत छलाह ।

छोटन लालकेँ सबटा बात पता लगलैक । ओ हेडमास्टरसँ भेंट कयलक ।

–हजूर, हमरा आउरके खरहू नहिये पढ़तै तँ की हेतै ? यहाँकेँ लोग अनेरे तंग करैयन । छौड़ाके नाम काटि दियौ । की हेतै; बाबू-भैयाके बौआ आउर पंढ़तै, सैह बहुत भेल । मालिक-मुक्तारक किरपासँ हमरा आउरकेँ कथीके कमी यन ?

आँगन आबि अपन बेटा ढोढ़ाइकेँ बुझौलक बूढ़ा, 'हौ ढोढ़ाइ ! कोन अनेरबा बात सोचै जाइ छह गन ? अरे, हमरा आउर नहिए पढ़लियै तँ दिन नै जाइ यन ? छौड़ा पढ़िये लेत तँ चान लए लेत गन ? हौ मरदे, ई बूझि लैह जे हमरा आउर के जनम सुग्गर चराबै ले भेल हन । हमरा आउर आरो किच्छ नै कए सकैछी ।'

ढोढ़ाइकेँ ओहू दिन अपन नव संस्कार परसँ विश्वास उठि गेलैक । ओकरा भेलैक जे बाउ ठीके कहि रहल अछि । पहुना बाउ केर बातकेँ ठीक बतौलकै तँ ढ़ोढ़ाइक मस्तिष्क आरो जड़ भ' गेलैक । ओ चुप रहि गेल आ फेर दिनचर्यामे बन्हा गेलैक ओकर जीवन।

एना अनेक बेर भेलैक अछि । अथवा, प्रतिदिन भेल करैत छैक । सुग्गरक झुंड ल' क' सड़क पर जाइत काल एक रत्ती कोनो ठाम दू-चारि टा जानवर अटकल कि चारू कातसँ लोक गारि पढ़य लागल–

–साला डोमा, बापक सड़क छियौ जे सुग्गर अटका देने छें ?

–बहानचो........खच्चर जे अछि ई डोमा । ततेक डाँग मारबहु गोटेदिन जे बूझि पड़तहु सार !

ओ अपसियाँति रहैत अछि । जाधरि सुग्गर दूर गाछी नहि पहुँचि जाइछै, ओकर मोन डेरायल रहैछैक । मुदा, ओ की करत ? ककरा जवाब देत ? कतेककेँ जवाब देत ?

आ, ओ घटना सेहो ओकरा मोने छैक । ढोढ़ाइ एक दिन एसगरे सुग्गर चराब' गेल रहय । एकटा घरक आगूमे मैलाक ढेरी रहैक, से चारि-पाँच टा जानवर ओहिमे लुधकि गेलै । ओ थोड़ेक आगू बढ़ि गेल रहय । चारू कात गन्ध पसरि गेलैक । घरक मालिक बहार भेल तँ सुग्गर देखलक । तामस उठलैक । मारिते रास गारि पढ़लक।

ढोढ़ाइ जबाब द' देलकै ' 'हौ मालिक, कथी ले अनेरो गारि पढ़ै छह । हमरो आउर लोगे छियै । ई जानवर तँ तोरा घरक मैलिये ने साफ करैछह ?'

गृहपतिकेँ तामस उठलनि । सार डोमा, मुह लागल बाजत ? देखिते देखिते आठ-दस लाठी लगा देल । कपार फुटि गेलैक । अस्पताल गेल । दबाइ नै भेटलै । डाक्टरकेँ फीस देलकै तँ सुइया पड़लै । डाक्टर थाना पठौलकै । थाना गेल । दरोगा साहेब

एकर बाते नहि सुनलनि, गरिया क' आपस क' देलनि, 'उलटे साला गन्दो किडीस है और केसो करने आया है । भागता है कि नहीं, तोरी बहीन.........।'

सबटा चेतना भसिया जाइत छैक । बुझैत नहि अछि जन-नायक सभक, क्रान्ति सभक भाषा । भरि दिन बूढ़ा वैह पुरान बात बुझबैत छैक, 'रौ बच्चा, अगुताबी नै। बाबू-भैया आरूके तँ मुह छुट्टा रहै छै । ऊ आउर कुनू बात बोलि दिअय तँ दुख नै मानै के चाही । ऊ तँ संयोग रहै जे दसे लाठी लागलो । ऊ जँ जाने मारि-दितिहो तँ हम-तूँ की करितही ?

ढोढ़ाइकेँ नव संस्कार आह दिन ओकर संग नहि देलकै । थानाक चरित्र ..... लेबर कोर्ट ....अनुसूचित जाति....,देशक संविधान.......किछु ओकरा ठीकसँ बूझल नहि छैक। सत्ताक संस्कृतिपर आ विश्वास अथवा अविश्वास करय, ताहि लेल सभ किछु बुझल रहब तँ आवश्यक छैक । किछु नहि बूझल छैक । बुझबइयाबला कियो नहि छैक। आ, तकर आसारो नहि । पहुना बूढ़ा बातपर फेरो अपन सहमति देलकै । आ, ढोढ़ाइ एसगर पड़ि गेल । ओकरा फेर बुझना गेलैक जे बाउ एकदम्म ठीक कहि रहल अछि। बाउ बड़ ज्ञानी लोक अछि । ओ ठीक नहि कहतै तँ ठीक कहै ले की आब कारू बाबा एतै ?

X X X

से, तीनू गोटे घूर लग बैसि क' येहसभ गप-सप करैत छल । आइ फेर एकटा घटना घटल छलैक—आने कोनो दिन जकाँ । एकटा युवक एकटा फुलडाली लेलक। पहुना पाइ माँगलैक तँ नहि देलक । उनटे गारि पढ़' लागलै पहुना डेरा गेल । बात आगाँ नहि बढ़य, से चाहलक । चुपचाप बिदा भ' गेल । अइ गाममे बेर-बेर एना किए भ' रहल अछि, सैह एकर सभक समस्या छैक । एकर सभक समस्या एतबे नहि छैक । समस्या ईहो छैक जे अइ गाममे बहुत लोक अछि, बहुत जातिक लोक अछि, जकरा सभकेँ बाबू -भैया सभ तंग करैत रहैत छैक ओ सभ मिलि क' किएक ने कोनो डेग उठबैत अछि ? बाबू-भैयासँ झंझटि क' अराड़ि ल' किएक नहि निश्चिन्त भ' क' जीबैए? आ जँ प्रेमेसँ होइ तँ गाँधी महात्मा तँ सेहो पचास बरस पहिनहि मरि-खपि गेलै । हुनकर कएल काज एखनहु किए ने अइ लोककेँ सालै छै ?

ई सभ गप होइते छल कि सहदेव पंडीजी पहुँचलाह । मिडिल स्कूलक संस्कृत शिक्षक, वैह सहदेव बाबू ।

ढोढ़ाइ आ पहुना मूड़ी गोतने बैसल रहल । बूढ़ा छोटनलाल पंडीजीकेँ देखितहि कल जोड़ि लेलक, 'गोड़ लगैछी मालिक !'

पंडीजी एक बेर मूड़ी गोंतने बैसल ढोढ़ाइ आ पहुना दिस आग्नेय नेत्रसँ तकलनि आ अन्यमनस्क-सन बजलाह—

—नीके रह । की हालचाल छौ ?

—अहाँ आउर के किरपासँ सबटा निम्मने छै मालिक । हमरा आउर तँ यहाँ के

पयर तरहक खड़ छिकियै सरकार ! यहाँ आउर नीके रहबै, तहीमे ने हमरो आउर के समेचार ।

पंडीजी ठोर बिचका क' हँसलाह । ठोर तरक तमाकू पच्च द' फेकलनि आ फुटलाह, 'हौ छोटनलाल, एकटा बड़ जरूरी काजसँ आयल छी । सुनह ।'

एहि बेर ओहो दुनू एम्हर ताकलक ।

—हमर नुनूभाइ मरि गेलाह—से तँ बुझिते छह । आइ श्राद्ध थिकियनि ! सौंसे गामकेँ नोत पड़ल अछि । हमरा तँ शास्त्र-पुराण पढ़ल अछि । तें श्राद्धकर्ममे तोरो जातिक महत्व छहु, से जनैत छी । से आइ तोरा तीनू बापूतकेँ हमरा ओत'सँ नोत छहु।

बुढ़बा सुनलक आ गुम्म रहि गेल । ओकरा जीवनमे एहन प्रसंग कहियो नहि आयल छलैक ।

ढोढ़ाइ सुनलक आ अचंभित रहि गेल । एहन ह्रदय-परिवर्त्तन आ से पंडीजीक?

पहुना सुनलक आ डेरा गेल । ओकरा एहिमे कोनो षड्यंत्र बुझना गेलैक ।

बाजल सभसँ पहिने ढोढ़ाइ, 'हमरा आउरकेँ बड़य नोता दै छियै पंडीजी?'

पंडीजीकेँ नहि बुझना गेलनि जे ढोढ़ाइ व्यंग्य क' रहल अछि । ओ धाख जमयबाक प्रयास कयलनि, 'रौ ढोढ़बा, हमसब दोसर ब्राह्मणसँ श्रेष्ठ छी आ धर्म-कर्मकेँ बुझैत छी । सब जाति तँ दू-चारि हमरा ओतय खेबे करत । एक घर डोमे किए बाँकी रहओ? कहैयो लेल तँ हएत ने जे फलाँ झाक भोजमे डोमोकेँ नोत पड़लैक । एकटा दोसरो बात छै । तों सब तँ बुझबें नहि । हमरासभक एकटा धर्मशास्त्र अछि । गरुड़पुराणमे स्पष्ट लिखल अछि जे कोनो भोजमे जा धरि डोम नहि खाय, ताधरि प्रेतकेँ मोक्ष नहि भेटैत छैक ......।'

ढोढ़ाइकेँ ओजह भेटि गेलैक । मुदा, ओकरा मोन रहैक जे इयैह पंडीजी ओकरा छौंड़ाकेँ स्कूलमे पढ़य नहि देलकै । इयैह पंडीजी ओकरा कतेको बेर गरियेलकैए । एकरे बेटा हरकिसुन झा ओकर पहुनाकेँ नस तोड़ि देने छलै ।

आ, ढोढ़ाइकेँ बहुत गर्व आ बहुत सन्तोष भेलै जे ओहो कोनो जोगरक अछि, आ ओकरोसँ पंडीजीकेँ काज पड़ि सकैत छनि ।

ढोढ़ाइ रुद्र भ' उठल । अत्यन्त कठोर आ नव संस्कार-संयुत । ओ बिना आगाँ-पाछाँ सोचनहि फाटि पड़ल :

—जाउ जाउ पंडीजी । हमरा आउर यहाँके नोता नै मानैछी । हमरा आउर कुनू कुकूर नै छी जे कौरा पर दोगल जायब । ई तँ धरकटबा हमर बाप यन जे अखनीयो यहाँ आउर के अँइठ खाइयन । हमरा आउर तँ यहाँ के दूरा पर थूको फेकय नै जाएब।

एतबा कहि ढोढ़ाइ बिलमल । ओकर दम फूलय लागलैक । क्रोधसँ माथ भारी भ' गेलैक । ओ थम्हल आ आबाज दैत थूक फेकलक 'थुह'—जेना धरती पर नहि, पंडीजीक माथ पर थूक फेंकने हो ।

मुदा आश्चर्य ! पंडीजी ई सभ सुनि क' कनिञो विचलित नहि भेलाह । प्राय: धर्म-कर्मक मामिला रहनि, तमसयनें काज नहि चलितनि तें । प्राय: ई बूझि गेलाह जे तमसयनाइ एखन उचित नहि । हुनक तामससँ दोबर पड़तनि ढोढ़बाक क्रोध । बजलाह :

–रौ ढोढ़बा, एहन बात किए बजैछें ? दरबज्जा चढ़ि क' नोत देबय एलियौए आ तों रास गाबैछें ?'

आ, आब ओहूसँ पैघ आश्चर्य ! ढोढ़ाइ एक बेर फेर पहिनहुँसँ बेसी क्रोध आ कठोरतासँ भभकल :

–हे यौ, यहाँ आउर कहैछी जे बिरहामन छी । यहाँ आउर त मनूख नै छी यौ जी, राछस छी, राछस । जे दोसराकेँ लोग नै बुझै से लोग केना भेलै ? हमे पुछैछी हमर छोड़ाकेँ यहाँ इसकुलसँ बैलाय देलिऐ । किऐ बैलियै ? अही दुआरे ने जे ऊ 'डोम' के खरहू रहय । सब दिना यहाँ हमरा आउरकेँ गरियाबैछी । मनूखे नै बुझहै छी । किए नै बुझहैछी ? हुँह....आ आइ यहाँ एलौं हन कहै ले जे नोता यन । डोमा नै खेतै तँ परेतकेँ मोछ नै भेटतै । भगवान करय..., कहियो नै भैटै..ककरो नै मोछ भेटय यहाँ आउरकेँ ।'

आब बूढ़ा छोटनलालकेँ नहि रहल गेलै । ओ उफनि उठल :

–सार, धिचोदाक बेटा ! तोरा बोलैके तमीज नै भेलौ ? कह तँ । बूढ़ा मालिक अपनेसँ अयला हन आ ई बहान....की आर बोलै यन । ठाढ़ रह सार....!

बुढ़बा उठल आ बाँसक फट्टा लए दौड़ल । मुदा तुरंते किछु मोन पड़लै । प्राय: ई जे जुआन बेटा अछि, कहीं हमरे दू डाँग ने लगा दियय । आ कि ई जे भ' सकैए, कहीं एकरे कहनाइ ठीक होइ !

बूढ़ा पंडीजीक पयर दिस झुकल आ कल जोड़ि लेलक 'मालिक, ई साला निरबुद्धी छै । यहाँ आउरके महत्व नै बुझैयन । माफ कए दियौ सरकार ।'

बूढ़ा पंडीजीक पयर दिस झुकल मुदा पयरमे सटल नहि । बूढ़ा बुझैत अछि जे डोम ककरो देहमे नहि सटि सकैत अछि । बूढ़ा ईहो बुझैत अछि जे जबाना कतबो बदलि जाय, डोम कहियो बाभन नहि भ' सकैए । डोम डोमे रहत आ बाभन बाभने।

पंडीजी भभा क' हँसि दैत छथि । बड़ीकाल धरि हँसैत रहैत छथि । बूढ़ा छोटनलाल कल जोड़नहि कहैत अछि :

–जाइयौ गन सरकार । जँ हमरा आउरके खयनेसँ परेतकेँ मोछ मिलि जेते तँ हमरा आउर जरूर खेबै । हमरा आउर तँ यहाँ आउर के पयर तरक धूरा छिकियै मालिक।

X X X

पंडीजी ओम्हर बिदा भेलाह आ बूढ़ा छोटनलाल खूब जोरसँ खास कयलनि आ बुढ़ियाकेँ आवाज देलनि :

–सुनलकै । आइ हमरा आउर अइ गामके सबसँ बड़का लोकके हियाँ नोता खाइ लै जेबै ।

–आँय, की भेलै ?, बुढ़िया घरसँ बहार भेलि आ अकबका क' पुछलक । खुशीमे बाज' लगलाह छोटनलाल :

–अखनी सहदेव पंडीजी एलै रहय । हमरा आउरकेँ नोता देलकै हन । सेहे बुझहक, ओते बड़ा आदमी के मोनमे की फुरलै जे की तँ एतना पैघ भोज होइ छै, तँ एगो डोमे किए बाकी रहतै ? हे, किच्छो कहक, बिरहामन आरूके हिरदय केतना साफ रहैछै ? कनियो टा सोचलकै जे ई अछूत छियै ! आइ कोइ छोटका लोग रहितिहै तँ एना करतिहै ?

ढोढ़ाइक दिमाग एखनहु गरमायले छल । स्वर कड़ा करैत बाजि उठल :

–कथी ले अनेरो अकच्छ करैछह । जइहह, खूब कए कोचि लिहह । कोइ की तोहर अन्न छिनै ले जैतह...!

बूढ़ाकेँ कनियो बेजाय नहि लगलैक । बुढ़िया दिस घुमैत बाजल :

सैहै, अइ बहानचो के देखहक । एतना बड़ो नोता पड़लै हन आ अइ सार के मोन गरमायल छै । हम पुछै छियहु उहे पंडीजीकेँ जे ई बिखिन-बिखिन बात कहलकै उ नै किच्छ केलकै तें ने ? अखनी ऊ जे दस लाठी धराय देतिहै तँ ई सार की करितिहै? एकरा भगमान कहियो गियान नै देतै ।

आ, बूढ़ा छोटनलाल चुप्प भ' गेलाह । मोने-मोन हिसाब लगब' लगलाह जे भोजमे कतबा अन्न छुतायल जाय जे घर भरिक सभ लोकक भोजन प्राप्त भ' जाय बड़ी कालसँ हिसाब लगा क' बुढ़ियाकेँ कहलनि:

सुनैछै ! आइ चुल्ही नै जरतै । सबके अन्न भोजघरेसँ एतै ।

X X X

से, सहदेव पंडीजीक गेलाक बादसँ बड्ड खुशी अछि बूढ़ा छोटनलाल आ ओकरे देखादेखी फ्हुना । खुशी मात्र एही बातक नहि जे अजुका खर्चा बचल । खुशी मात्र एही बातक नहि जे भोज सुतरल अछि । खुशी अछि एहि बातक जे गामक सभसँ पैघ पंडित दरबज्जा चढ़ि क' नोत द' गेल । आब एहिसँ पैघ प्रतिष्ठा आर की हैते? बूढ़ा पैंसठि बरखक भ' गेल । ओकरा जीवनमे ई पहिले अवसर थिकै जे कैयो ब्राह्मण नोत द' गेलैक । दुख छैक तँ मात्र एही बातक जे ई ढोढ़बा पंडीजीसँ झंझटि किए करय लगाल ? हमरा आउरकेँ तँ धन्न भाग मानै के चाही जे बिरहामन दूरा पर आबि कए नोता देलनि ।

ढोढ़ाइ तर्क देब' चाहैत अछि :

–हौ, बाउ, ऊआर अपना आउरके मनुख नै बुझै छह-जानवर बुझै छह । जे जानबर

बुझत, तकर अन्न केना खेबह ?

मुदा, बूढ़ा अपन केस रौदमे नहि पकौने अछि । ओकरा मस्तिष्कमे बहुत रास अनुभव जमा छैक । अपन बेटाक बात सुनि क' बूढ़ा हँसैत अछि । बेटाक नादानी पर हँसैत अछि । आ, हँसिते-हँसिते कहैत अछि :

रौ बच्चा? हम पुछैछियो ! डोमकेँ डोम ने बुझतै, दुसाधकेँ दुसाध नै बुझतै तँ की बिरहामन बुझतै ? सब गोरिन के अपन-अपन इज्जत छै । अइ बात के दुख तँ तूँ बेकारे मानैछें ।

ढोढ़ाइ के एक बेर फेर भ्रम भेलैक । एक बेर फेर लागलैक जे बाउ ठीके कहि रहल अछि । नव संस्कार जवाब द' गेलैक । पहुना बुढ़ाकेँ बात पर डिट्टो देलकै आ ढोढ़ाइ एसगर पड़ि गेल । मुदा, एहि बेर ओकरा लागि रहल छलैक जे भीतरसँ ओ एकदम्मे एसगर नहि अछि ।

X X X

तीनू बापूत सबेरियामे आबि गेल छल । दरबज्जा पर सैकड़ो लोक बैसल रहय। तरह-तरहक गप-सप होइत रहय । चारू कात घूर लागल आ लोक सभ घाँउ-माँउ बिझोक प्रतीक्षामे ।

ढोढ़ाइक मोनमे बिरड़ो उठि रहल छलैक । अपन जाहि नव संस्कारकेँ ओ आइ धरि दाबने रहल, से आइ रहि-रहि उद्दीपित भ' रहल छलैक । बेर-बेर ओकरा आत्मबोध जाग्रत होइ आ ओ आइ अपनाकेँ महत्वपूर्ण बूझि रहल छल । ओ खायत तँ प्रेतकें मोक्ष भेटतै । नहि खायत तँ नहि भेटतै । मोक्ष थिक से ओ नहि जनैत अछि। मुदा, ओ एतबा जरूर जनैत अछि जे मोक्ष एहन वस्तु अवश्य थिक, जाहि लेल पंडीजी उताहुल छथि । आ पंडीजी ओकरा लेल दुनिआक सभसँ घृणित व्यक्ति छलाह ।

ढोढ़ाइक मोनमे बिरड़ो उठि रहल छलैक । ओकरा आब अपना योजनाकेँ अन्तिम रूप देबाक छैक आ तीनू बापूतकेँ बिन खयने एतयसँ आपस चलि जयबाक छैक। नहि तँ ओ अबितय किएक ? बाप धरकट छैक तें ने ?

मद्धिम स्वर मे लोक सभ गपसप करैत रहय कि एकांतमे बैसल ढोढ़ाइ चिकरि क' बाजि उठल :

–यौ बाबू-भैया आउर ! सुनि लै जाइ जाउ गन । हमरा यहाँ आउर नोता दए कए बोलेलौं हन तँ हमरा आउर के जाति-बेरादर के कैदा-कानूनकेँ मानय पड़त । अखनी हमरा आउर यहाँक गामके डोमरा नै छी, डोम राजा छी । बोलू ! डोम राजा के कैदा-कानून मानै जेबै कि हमरा आउर चलि जाइ ?

बूढ़ा छोटनलाल ढोढ़ाइक गप सुनि सकमका उठलाह मुदा किछु बाजलाह नहि। सहदेव पंडीजीक भैयारीलोकनि ढोढ़ाइक गप्प मे रूचि लैत बजलाह ।

–हँ-हँ ! तों अपन जाति-बेरादरक नियम कहह । सभटाक पालन कएल जाएत।

हँ तँ सूनि लिय' गन । सबसँ पहिले यहाँ आउर वेदी-बिरहामनकेँ एक झोंक खियाय लियअ । दोसरा झोंकमे जखनी हम आउर बैठब तँ आरो कोइ नै बैठि सकैछी। आ तेकरा बाद हमरा आउर ओइ अङनामे नै खायम जैमे यहाँकेँ जाति-बेरादर खेता। हमरा आउर कुनू दोसर निरैठ अँगनामे खायम ।

आब किछु आरो लोक एहि गपमे रूचि लेब' लगलाह । ढोढ़ाइ आगाँ बाजल:

—नैबैद दे घड़ी हमरा आउर घीबके ढ़ार देब । तै ले कमसँ कम तीन पौआ घी चाही । तेकरा बाद, कर उठाबैसँ पहिले हमरा आउरकेँ दछिना चाही । दछिना लोग अपन-अपन तागत के मोताबिक दैछै । यहाँ तँ बड़ा आदमी छी । कमसँ कम तीन बीस लागत । आ, कैदा ईहो छै जे जखनी तलीक हमरा आउर खायम, यहाँ आउर के कुनू जलानी आ टेल्हबा अङना नै आबि सकै यन ।

किछु गोटा एहि बात पर हँसि देलनि । ढोढ़ाइ फेर बाजल :

—यौ बाबू आउर, हमर जाति आउर अँइठ-कूठ खाइ यन से अलग बात छिकै। लेकिन, यहाँ आउर, जदी नेम-निष्ठासँ नोता दए कए खियेबै तँ हमरो आउर अपन जतियारी कैदाकेँ मानबै ।

किछु गोटे भभा उठलाह आ किछु गोटे मोनमे सोचलनि—राड़क लग्घीक काज पड़य तँ सेहो महग भ' जाइत छैक । छिनरी भाइ छओ मास लग्घिये नै करत । ढोढ़ाइ एक बेर फेर बाजल :

—आ हे, एगो गप बिसरि गेलौं । हमरा आउर जेतना खायम तेकर पँचगुन्ना छुतैम आ बान्हि कए अँगना लए जायम । ई डोम राजा के कानून छिकै । मानी तँ बड़ बेस नै तँ नोता घुरबै छी ।

सहदेव पंडीजी छोटनलालकेँ पुछलथिन :

—की हौ छोटन, ढोढ़बा ठीके कहै छहु ? यैह नियम थिकियै ?

बूढ़ा मसमसाइत जबाब देलक :

—की बोलू सरकार । नव जुगमे एकरे आउर के जूति ।

पंडीजी कहलनि :

—तँ बेस ढोढ़ाइ, तोरा सभक सभ नियमक पालन कयल जयतहुँ । अगुताबह जुनि।

ढोढ़ाइक कपार पर सत्तरि मोन पानि पड़ि गेलैक । बूढ़ा आ पहुना प्रसन्न भेल।

किछु कालमे वैदिक ब्राह्मण लोकनि खा चुकलाह । नियमानुसार आब डोमक झोंक होइत । बिझो भेल । बूढ़ा आ पहुना उठल । ढोढ़ाइकेँ सेहो उठौलक । मुदा, ढोढ़ाइ ओतय नहि छलै । ओ बिच्चहिमे कतहु पड़ा गेल छल । बहुत ताकलो पर ओ नहि भेटल । ❐

ककरासँ कहती बेटी

जे कथा अहाँकेँ हम कह' जा रहल छी, बहुत जरूरी अछि जे तकर पृष्ठभूमि सेहो हम बताबी। एकरा अहाँ उपकथा कहि सकैछी। परिकथा, आनुषंगिक कथा, सहकथा जानि नहि कते-कते नाम देल जा सकैछ। मुदा, एकरा हम पूर्वकथा कहैत छी।

कतेक बेर एहन होइत छैक जे कथाकार अपन कथाक लेल जतबाटा कैनमास बजबैत अछि, कथा ओतबहि टा मे अँटि नहि पबैछ, आ कैनभाससँ बाहर धरि निकलि जाइत छैक। जेना टी.भी.क चित्रपट परक कोनो आकृति ओहिसँ बहार भ' क' सौंसे घर छिड़िया जाइक। हमरा संग सेहो एतय इयैह समस्या अछि। हमरा बहुत छोट कथा सुनयबाक अछि। प्राय: पाँच-छओ अनुच्छेदमे समाप्त भ' जाएबला। मुदा, जखन आँक' लगैत छी तँ छिड़िया जाइत अछि।

कथाक शिल्पक अपन माँग होइत छैक। शिल्प कहैत अछि जे जेना किसान खेत जोतब सुरूह क' क' क्रमिक रूपें फसिलकेँ रोपब सँ काटब धरिक प्रक्रिया पूरा करैत अछि, तहिना कथा-बीजसँ प्रारंभ क' क' कथाकेँ क्लाइमेक्स धरि पहुँचबाक चाही। मुदा, बड़ मोश्किलमे छी हम। कत'सँ सुरूह करी ? छोट-सन कथा अछि। कथा मात्र एतबे अछि जे चौधरी साहेबक घरमे डकैती भेलनि। अपने दुनू बेकति रूममे बन्द रहलाह, आ बाहर आँगनमे डकैतसभ हुनक जबाब आ कुमारि बेटीक संग

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

कहियो-कहियो जखन अपन व्यक्तित्व जोर मारनि तँ बेटीक जन्मसँ दुखी अवश्य होथि, मुदा तुरन्ते सम्हरि जाथि । बेटाक जन्मक बाद ओहो बेटीकेँ मानय लगलीह।

बेटी पैघ भेलीह तँ नीक स्कूलमे नाम लिखाओल गेल । पढ़'-लिख'मे चन्सगर नहि छलीह मुदा अनेक-अनेक प्रकारक सुविधा पाबि नीक होअय लगलीह । बेटा भोत्थर छलनि । ओकर व्यक्तित्व एकदम विघटित । चौधरीजी बेर-बेर कहल करथि जे बेटी हमर बेटा थिक, आ बेटा हमर बेटी ।

बहुत साफ बात अछि जे बेटा-बेटीक भेद तहियो हुनका मोनमे व्यापकतासँ व्याप्त छलनि, मुदा हुनक संस्कार तकरा दाबने छल ।

ऑफिससँ घुरथि तँ बेटीकेँ सोर पारथि । बाहर जाय लागथि तँ बेटी केँ बजबथि, आ दुलार करथि । खाय लागथि तँ बेटीकेँ संग करथि । सूत' लागथि तँ बेटीकेँ लग क' लैथि । उठथि तँ बेटीक मुह देखि, बैसथि तँ बेटीक नाम लैत । बेटी हुनक दिनचर्या मे चाहमे दूध जकाँ मिझर छलनि ।

बेटी क्रमशः बुझनुक होइत गेलीह । एक मैथिल बालिकाक स्वभाव विकसित होइत गेल । कन्भेन्टमे पढ़' बाली, दुनिया-जहानक फैशन बुझ' बाली बेटी अपन पढ़ाइ सम्पन्न क' माइक गृहकार्यमे मदति करथि, पिताक सेवा करथि, आ नित दिन पूजा-पाठ करथि । पूजा-पाठक हिस्सक चौधरीजीक पत्नी अपना संगे अनने छलीह आ फिनाइलक गन्ध जकाँ सौंसे घरक संस्कारमे पसारि देने छलीह । निश्चित रूपें शह चौधरीजीक रहल होयतनि ।

चौधरीजी आब नायब सुबेदार भ' गेल रहथि आ हुनक पोस्टिंग कलकत्तामे छलनि। बेटी तेरह सालक भ' गेलीह । चौधरीजीकेँ आब लोक चौधरीसाहेब कह' लागलनि। ओहो एहि तरहें साहेब भेलाह जे फेर कहियो 'चौधरीजी' धरि घुरि क' नय अयलाह।

बेटी तेरह बरखक भ' गेलनि । मैथिलत्व जोर मारलकनि तँ निर्णय कयलनि जे बेटीक बियाह करौताह । पत्नी चाहिते छलीह । सौंसे कुल परिवार तैयार भेल। वर पहिनहिसँ ताकल छल । बेटीकेँ ट्यूशन पढ़ब' एक विद्यार्थी आयल करैक, से चौधरी साहेबकेँ बड़ पसिन्न । ओ सुन्नर नहि छल । ओ मेधावी नहि छल । ओ विद्वान् नहि छल । सम्पत्तिशाली नहि छल । मुदा, ओकरामे एकटा अद्भुत गुण रहैक जे चौधरी साहेबकेँ मोहि लेलकनि । ओ हद दरजाक आज्ञाकारी छल । एकदम यसमैन। चौधरी साहेबकेँ एहने लोक पसिन्न । जे हुनक कोनहु बात पर 'नहि' कहि दियय, तकरा ओ देखय नहि चाहताह । उद्दाम अहंकार हुनक शोणितमे श्वेत रक्तकण जकाँ पसरल छल ।

बियाह स्थिर भ' गेल । सभ सरंजाम भ' गेल । चौधरी साहेब हड़बड़ायल छलाह। एत्तेक हड़बड़ायल जे वरक मादे किछु आओर पता लगायब धरि जरूरी नहि बुझलनि। हुनक स्पष्ट निर्णय रहनि जे वरकेँ घरजमाय बनौताह आ बेटीकेँ अपना सँ अलग कहियो होबय नहि देताह ।

सभ सरंजाम भ' गेल कि एक साँझ बेटी बिनु बजौने हुनका लग आबि क' ठाढ़ि भेलीह । हुनक ललाट तेजोदीप्त रहनि । दृढ़ निश्चय हुनक आँखिसँ बहरा-बहरा क' कोठलीमे भनभनाय लागल । हुनक श्वास तेज चलि रहल छल । जरूर मुदा मौन एकदम्म स्थिर । बापक आँखिमे एकटक तकैत बाजलीह, 'पापा, हम बियाह नहि करब ।'

वज्रपात भेल । ज्वालामुखी फूटल । धरती फाटल । मुदा, सभ भेल चौधरी साहेबक भीतरे । बाहरसँ खाली ओ चौंकलाह । जेना सूचना भेटल होइनि जे क्यो एकटा विश्वामित्र जनमि गेल अछि जे दोसर सृष्टि रचय चाहैत अछि । चौधरी साहेब चौंकलाह आ बस एतबे कहलनि, 'एखन तों जाह । ' माने हमरा सामनेसँ तों हँटि जाह ।

बेटी आर दृढ़ निश्चयक संग कहलथिन, 'पापा, एखन हमर बियाह नहि कराउ। हम पढ़य चाहैछी । हम बहुत पढ़य चाहै छी ।'

दोसर दिन भोरे बियाह स्थगित होयबाक फरमान जारी भेल आ कहल गेल जे बेटी जहिया धरि, जतेक पढ़य चाहतीह, पढ़तीह आ तकर बादे हुनक बियाह होयतनि जे चौधरी साहेबकेँ जाने छथि से बतौताह जे ई केहन अद्‌भुत घटना छल । पहिल बेर छल जे ओ अपन निर्णयक विरूद्ध ककरो बात मानि लेने छलाह ।

एहि घटनाक बादो अनेक अनेक बेर चौधरी साहेब अपन निर्णयक विरूद्ध बेटीक बात मानि लेने छलाह ।

बेटीक संस्कार आश्चर्यजनक रूपसँ निर्माणात्मक छलनि । चौधरी साहेबक एकदम प्रतिकूल । जखन कोनो विध्वंसात्मक निर्णय ओ लैथि, बेटी बीचमे पड़ि जाथिन । बेटीक बात ओ नहि काटैत छलाह । हुनका भयंकर तरहें शराब पीबाक हिस्सक, जकरा मादे सभ मानि लेने छल जे हुनका संगहि जयतनि, बेटी सेहो छोड़बा देने छलनि।

वात्सल्य की सभ क' सकैत अछि, कोना-कोना मनुक्खकेँ बदलि दैत अछि, से जँ अहाँ देखय चाहितहुँ तँ एहिठाम देखि सकैत छलहु ।

बेटीक आत्मविश्वास बढ़ैत गेलनि । ओ गर्वित होइत गेलीह । ओ निर्णय कयलनि जे किछु क' देखयबाक अछि । आत्मविश्वासक बसात बेटीक व्यक्तित्वकेँ बड़का बैलून जकाँ फुला देलक ।

नोकरी करैत चौधरी साहेब फिरोजपुर गेलाह, बेंगडुबी गेलाह, बरेली गेलाह । बेटी इन्टर कयलनि । बी. ए. कयलनि आ निर्णय कयलनि जे एल-एल. बी. करतीह। पिताकेँ कहियो आपत्ति नहि भेलनि । आपत्ति भेलनि तँ एक्के बात पर । ठोस पयर पर आगाँ बढ़ैत बेटीक अनेक मित्र होइत गेल । अनेक युवती, तँ अनेक युवक सेहो। युवक सँ मित्रता पर पिताकेँ आपत्ति भेलनि । लगैत अछि जे गामसँ जतेक जे आग्रह ल' क'ओ फौजमे आयल छलाह, से सभटा समाप्त नहि भेल छल ।

बेटी पिताक आपत्तिकेँ दूर कयलनि । कोनो युवक एहन नहि आयल जे धरती

पर सँ उठि क' हुनक हृदयमे समा गेल हो । परिचय बहुतरास छल । गप बहुतरास होअय। मुदा, पिताक आदेश हुनका सदति मोन रहनि ।

पिता बिचारथि जे वर तँ स्थिर कयले अछि । बेटी पढ़ि-लिखि लैथि तँ बियाह भ' जेयतैक । वर सेहो प्रतीक्षा मे छल । एहन सुन्दर संयोग ओकरा कतय भेटैत ? वर मोने-मोने मिस चौधरीसँ प्रेम कर' लागल आ प्रतीक्षा करैत रहल । दुख इयैह जे प्रतीक्षा छोड़ि क' ओ आर किछु नहि कयलक-बी.ए. धरि नहि क' सकल ।

मुदा, तखनहु चौधरी साहेबकेँ कोनो आपत्ति नहि भेलनि ।

चौधरी साहेब आब सुबेदार भ' गेलाह आ लखनऊ आबि गेलाह ।

बेटी एल-एल. बी. क' चुकलि छलीह । मुदा, एकटा काज आओर क' लेने छलीह । हुनक मोनक कोठली जे कि एखन धरि सुन्न आ भकोभन्न छल, तकरा ओ बसा लेने छलीह । ओ एकटा युवक छल, जे हुनका जिनगीमे एक बेर आयल तँ फेर कहियो नहि गेल ।

बी. ए. मे पढ़ैत छलीह तँ पहिल बेर ओहि युवककेँ देखने छलीह । युवक सेहो बी. ए. मे पढ़ैत छल । पहिल दर्शनक वर्णन करैत बेटी एकटा विचित्र बात कहैत छथि । हुनका अनुसार ओहि युवकक मुखमंडलक चारूकात हुनका प्रभामंडल पसरल देखायल छलनि । युवक चौधरी साहेबक्र अपने कुटुम्ब समूहमे सँ छल । मुदा, एहन परिवारक जे सुरूहेसँ हुनका-पसिन्न नहि छलनि । ओहि युवकसँ बेटीक बियाह ओ सोचियो नहि सकैत छलाह । कारण छल युवकक व्यक्तित्व । ओ व्यक्तित्ववान् लोक छल । युवक हुनक बेटीसँ एक साल छोट छल, सेहो एक बात ।

मुदा, बेटी निश्चिन्त छलीह । पिताकेँ ओ अवश्ये मना लेतीह । पिताकेँ मानहि पड़तनि । बेटी व्यक्तित्व लग झुकए चाहैत छलीह, व्यक्तित्वहीनकेँ अपना आगाँ झुकबैत रहब हुनका पसिन्न नहि छलनि । मुदा, अपन प्रखर आत्मविश्वास बेटीकेँ पिताक प्रति आश्वस्त करैत छल ।

बेटी जा-जा एल-एल.बी. कयलनि ताधरि युवक एम. ए. क' गेल आ एकटा प्रतिष्ठित कॉलेजमे ओकरा नोकरी लागि गेलैक ।

बेटी एहि बीच अनेक-अनेक विद्यामे निपुण होइत गेलीह । ओ मोटर चलायब सिखलनि । ओ घोड़ा पर चढ़ब सिखलनि । बन्दूक रिवॉल्बर चलायब सिखलनि, आ फौजी व्यक्तिक सभ गोटे संस्कार प्राप्त करैत गेलीह ।

चौधरी साहेब सुबेदार मेजर भेलाह । पूना गेलाह । ओहि ठामक कोर्टमे बेटी ओकालति कर' लगलीह । पिताक प्रतिष्ठा अपन चरम सीमा पर छल । बेटीक प्रतिष्ठाक दौर सुरूह भ' रहल छल ।

बेटीक नजरिमे बहुत-बहुत पुरुष आयल । बड़का-बड़का रैंक आ पदबला ।

मुदा, हुनका ओहि युवक-सन कियो नहि लगलनि । युवकक प्रभामंडल दिनो दिन बढ़ैत गेल आ बेटी ओहिमे चकमकाइत रहलीह । मनहि युवकक दैहिक संसर्ग हुनका एकदम्म प्राप्त नहि भेल रहनि । युवक मिथिलाक एकटा शहरमे चाकरी करैत छल, आ चौधरीजीक बेटीक प्रतीक्षामे छल ।

आ, एहिनामे एकदिन चौधरीजी रिटायर्ड भेलाह ।

x x x

कथाक दोसर भाग एतहिसँ सुरूह होइत अछि । रिटायर्ड सुबेदार मेजर चौधरी साहेब मिथिलाक अपन शहरमे घुरलाह ।

आलीशान बंगला बनबौलनि । अतिथिगृहक विशिष्ट इन्तिजाम कयलनि । गामसँ जुटलाह । लोक 'आब' जाय लागल । सामाजिक समस्यासभक निपटारामे प्रधान पंच बनलाह । मुदा, रोज-रोज काज भेटनि नहि तँ तास आ शतरंजक मजलिस जमायब सुरूह कयलनि ।

चौधरी साहेबक विध्वंसात्मक प्रवृत्ति बहुत जल्दी अपन रंग देखबय लागल । लोक बुझनुक होअय लागल छल । लोक निर्माण चाहैत छल । लोक साहेब-लोकनिसँ डरायब छोड़' लागल छल । तीस बरख पहिनेक गाम-घरक जे नक्शा चौधरी साहेबकेँ बूझल छलनि से बदलि गेल छल । चौधरी साहेब नहुएँ-नहुएँ फेंकाइत गेलाह । हुनक प्रतिष्ठा कम होइत गेलनि । हुनक अतिथिगृह भकोभन्न होअय लागल ।

बेटी निर्माण चाहैत रहथिन । बेटीक निश्चित लक्ष्य छलनि । बेटी समाजकेँ बूझ' चाहैत रहथिन आ जे बेजाय छल, तकरा बदल' चाहैत रहथिन । बेटी जमैत गेलीह। बेटीक प्रतिष्ठा बढ़ैत गेलनि । बेटी स्थानीय कोर्टमे ओकालति सुरूह कयने छलीह। ओकालति जमि गेलनि । बुझनुक रहथि । साहसी आ परिश्रमी रहथि । रूचिक काज चुनने रहथि । जमि गेलनि । खूब प्रतिष्ठित होअय लगलीह । सरकारक विभागसभ हुनका कानूनी सलाहकार चुनलकनि । जनता हुनका हुलसि क' धएलक ।

चौधरी साहेब जखन एसकर पड़य लागल छलाह, तखनहि बेटीक चहुँदिस लोकक भीड़ बढ़य लागल छल । चौधरी साहेब लक्ष्य करथि जे बेटीसँ सलाह लेब' आयल बेगरतूत लोकसभ हुनकासँ गप करबासँ कतियाबय । कहियो-कहियो ओ बेटीक मजलिसमे जा बैसथि । कोनो-कोनो समस्या पर बिनु मँगनहि अपन विचार देबय लागथि। मुदा, हुनका अपनहु लागनि जे ओ जमि नहि रहल छथि । लोक हुनक बातकेँ गंभीरतासँ नहि लैत अछि । चौधरी साहेबकेँ होइनि जे जबाना अधलाह भेल जा रहल अछि आ तेँ हुनका-सन अनुभवी लोककेँ अनठाओल जा रहल अछि ।

बेटी हुनकर प्राणप्रिय छलखिन, से पाठकलोकनिकेँ फेरसँ बुझायब आवश्यक नहि अछि । बेटी नीक पाइ कमाय लागलि रहथिन, आ से हुनका-सन लोकक लेल अतिरिक्त प्रसन्नताक बात छल । मुदा, आब ओ बेटीक उन्नतिसँ अन्यमनस्क होब' लागल रहथि।

तकर कारण छल हुनक उपेक्षा । तकर कारण छल हुनक बातकेँ महत्वहीन बूझल जायब, मुदा तकर मूल कारण छल बदलैत जुगक नाड़ीकेँ नहि चिन्हि सकबाक असावधानी । एक दिन तँ हदे भ' गेल । बेटीक मजलिसमे बैसल छलाह। कोनो गंभीर विमर्श भ' रहल छलैक । अनेक मोकिल छल आ बेटीक अतिरिक्त एक ओकील साहेब आरो छलाह । चौधरी साहेब अपनाकेँ रोकि नहि सकलाह–ओ अपन विचार देलनि । ओकील साहेब हुनक बातमे मीन-मेख निकालैत ओकर प्रतिवाद कयलनि। चौधरी साहेबकेँ बेजाय लगलनि । ओ आरो जोर दैत अपन पक्ष रखलनि। नव संस्कारक ओकील साहेब आरो सतर्कताक संग काट रखलनि । चौधरी साहेब बाज' लगलाह– धुरझार बाज' लगलाह कि झनाक !!! 'ई की उलजलूल बकैछी पापा! जाउ ओम्हर रूममे जा क' ताश खेलाउ ।'

सब टूटि गेल । एक्के धक्कामे सब चकनाचूर भ' गेल । चौधरी साहेब तामसें थरथर काँप' लगलाह । आँखि उनट' लगलनि । दम फूल' लगलनि । मुदा आश्चर्य जे एक्को शब्द नहि बजलाह । चुपचाप उठलाह आ भीतर चलि गेलाह ।

ओहि राति निन्न नहि भेलनि । महाकालीक विकट रूप धयने बेटी भरि राति कलेजाकेँ दाउन करैत रहलनि । कण्ठ सुखनि । ओहि राति पच्चीसो बेर उठि-उठि पानि पीलनि।

चौधरी साहेबक व्यक्तित्त्व जोर मार' लगलनि । यसमैन चाही हुनका । हुनका छोट लोक चाही । ई बेटी वंशकुठार भ' गेलनि । वंशबुड़ाओन । मुदा, चौधरी साहेब चुप रहलाह । बेटी प्राय: आब एतेक पैघ भ' गेलि छलनि जे ओकरा खिलाफ ओ जे मोन हो से बाजि नहि सकैत छलाह ।

चौधरी साहेब अगिला राति दारू पीलनि–दस बारह बरखक बाद । बेटीकेँ पता चललनि । ओ बजलीह, 'पापा, अहाँ की प्रोमिस कयने छलहुँ, बिसरि गेलहुँ ?'

चौधरी साहेब जबाब देलनि, 'गे दाइ, आब तों पैघ लोक भेलह ; जाह, अपन राज काज सम्हारह गय ।'

बेटी कान' लगलीह । चौधरी साहब हँसैत रहलाह ।

बेटी ठुनकैत बजलीह, ' हमरा जतेक गारि देब से दिय' । जतेक मारब से मारू, मुदा अहाँ दारू नहि पीबू पापा ।'

'हम दारू पीब तँ ताहिसँ तोरा की ?', विचित्र स्वर आ भंगिमामे चौधरी साहेब प्रतिप्रश्न कयलनि ।

बेटीक आँखिसँ नोर खस' लगलनि । ओ आगाँ बजलाह–'हम भने मरि जायब। से तँ तोरा लेल आर नीके होयतहु । तों खूब निचैनसँ छिरहरा खेलिहह ।'

बेटीकेँ छक्क द' लगलनि । ओ पिताक निहितार्थ बुझलनि । एम्हर भेल ई छलैक

जे बेटीक सपनाक ओ युवक, जे एतहि रहैत छल, प्राय: प्रतिदिन ओकरासँ भेंट कर' आयल करैक । बेटीकेँ नीक लगैक, कहब आवश्यक नहि । पिताकेँ अधलाह लागनि, सेहो कहब आवश्यक नहि । कहब आवश्यक ई जरूर जे एहि भावकेँ ओ कहियो बेटी लग व्यक्त नहि करैत छलाह । किएक नहि करैत छलाह ?

भरि राति बेटीकेँ निम्न नहि भेलनि । भरि राति रोगाह आ अथबल पिता सपनामे हकमैत रहलाह । ओहि राति ओ पच्चीसो बेर उठि-उठि क' पानि पीलनि ।

तहिया सँ परिवारक शान्ति भंग होब' लागल । एकोटा बात एहन नहि होअए, जाहि पर चौधरी साहेब कटाह व्यंग्य नहि छोड़थि ।

बजार जाइत काल बेटी कहथिन, 'पापा; एकटा बोरोलीन ल' लेब ।' पिता बाजथि, 'खटाय लैह । ताहि दिनुका सुबेदार मेजन चौधरी साहेबकेँ मोन पाड़ह दाइ ।' बेटी गुम्म भ' जाथि आ चुपचाप कान' लागथि ।

एक दिन पत्नी कहलकनि, 'दूटा काँटी आनि दिय' । अलगनी बनाब' लेल कील ठोकबाक अछि ।'

चौधरी साहेब बजलाह, 'एहि मकानक लेल आब हम एक्केटा चीज आनब-डायनामाइटक छड़ आ कोनो राति स्वाहा.....।'

एक दिन नोकर कहलकनि, 'मालिक, ककर दनक बकरी एकटा फूलक गाछ खाए गेल ।' चौधरी साहेब उठि क' बहरयलाह आ एक-एक क' सभटा फूलक, फलक, तरकारीक गाछ उखाड़िक फेकि देलनि ।

बेटी बहुत डिस्टर्ब रह' लागलि छलीह । एकदम फिरिशान । एकदम अस्तव्यस्ता। अपन युवकक जरूरति हुनका बहुत बेसी-बहुत बेसी अनुभव होअय लागल छलनि। युवक पाँचो मिनटक लेल नित्तह आबय । ओकरे टा संग ओ अपनाकेँ संयत पाबथि। ओ दूनू सोच' लागल छल जे आब बियाह अबस्से क' लेबाक चाही । मुदा, बात उठेबाक उचित अवसर भेटि नहि रहल छलैक ।

कि एही बीच अनर्थ भेल । एक दिनक खिस्सा । बेटी पलभरिक लेल अपन स्वर्गमे छलीह—माने युवकक आलिंगनमे, कि तखनहि चौधरी साहेब पहुँचलाह । ओ साफ-साफ देखि गेलाह । अनर्थ भेल । मुदा, हो-हल्ला नहि भेल । लड़ाइ-झगड़ा, उठा-पटक, कहा-सुनी किछुओ टा नहि भेल । युवककेँ कहि देल गेल जे ओ भल चाहय तँ एतय नहि आबय । दोसरे दिन चौधरी साहेब बाहर गेलाह । तीन दिनमे घुरलाह तँ बेटीक बियाह स्थिर कयनहि । कलकत्तो गेल छलाह मुदा ओ यसमैन एहि बेर हुनका पसिन्न नहि पड़लनि । लग-पासक गाम सभमे जे सभसँ भयंकर जाहिल बुझयलनि, तकरा ठीक क' अयलाह । बियाहक दिन ठीक भेल । बियाहक संरजाम

होब' लागल । सामान सब आब' लागल । बैंकसँ टाका बहार भेल । तहखानाक गहना-गुड़िया बहरायल । भाँति-भाँतिक लोक सभ आब'-जाय लागल । कार्ड छपि गेल। बँटाय लागल ।

कार्ड देखि क' बेटी जनलनि जे हुनक बियाह भ' रहल छनि । बेटी पिता लग गेलीह–'पापा, ई अहाँ की क' रहल छी ? ई बियाह हम नहि करब ?'

सटाक् ! बेटीक गाल पर जोरदार थापड़ पड़ल ।

'अहाँ हमरा काटि दिय' पापा, मुदा ई बियाह हम नहि करब ।'

सटाक् ! दोसर गाल पर ओहूसँ जोरदार थापड़ पड़ल ।

बेटी धुस्स द' बैसि गेलीह । बेटीक आगू अन्हार पसरि गेल । ओ कानियो नहि सकलीह । नोर बाजल–कानबह तँ कानह, हम तँ बहार नहिये हेबह ।

चौधरी साहेब घरसँ बहरा गेलाह । तीन घंटाक बाद घूरि क' अयलाह ।

बेटीक आत्मविश्वास आरो प्रखर भ' गेल छलनि । ओ बजलीह, 'हमर निर्णय सुनि लिय' पापा ! हम करब तँ ओही युवकसँ बियाह करब ।'

चौधरी साहेब घर गेलाह । आ अपन लाइसेन्सी बन्दूक बहार कयलनि, 'अइ बन्दूक मे दू गोली भरल छैक । तोहर जे उँचगर-उँचगर छाती छौक, ओहि दुनूक लेल एक्के बन्दूक काफी अछि ।'

कहब मोश्किल अछि जे चौधरी साहेब 'छाती' कहने छलाह कि एकर बदला कोनो आन अश्लील उच्चारण कयने छलाह ।

बेटी मुदा, सहज रहलीह । बहुत शान्तिपूर्वक बजलीह, 'हम ओकरे टा छियै पापा। ओकरा सिवा दोसर कियो पुरुख हमरा छुबियो नहि सकत । अहाँ हमरा मारी नै मारी, हम अपनहि मरि जायब ।'

एहने 'तनावपूर्ण मुदा नियंत्रणमे' बला स्थिति चलि रहल छलैक, जकरा अगिला सात दिन धरि चलबाक छलैक, कारण बियाहक दिन अयबामे एखन सद्यः सात दिनक देरी छल ।

X X X

तँ हे पाठकबन्धु ! एतय धरि छल हमर कथाक पृष्ठभूमि, माने पूर्वकथा । आब हम कथाक तेसर ओ अन्तिम भाग सुरूह करैत छी । एहने-सन परिस्थिति छल जखन चौधरी साहेबक घरमे डकैती भेल छलनि । डकैती एक दिन हेबाके छलैक । जेहन सुन्न-मसान जगह पर चौधरी साहेब मकान बनौने छलाह, डकैती हेबाके छलैक । मोहल्लाक एक्को घर बाँचल नहि छलैक । डकैतसभ जँ देरी क' रहल छल तँ बुझू जे उचित समयक प्रतीक्षामे छल जे कि आब आबि गेल रहैक–माने कि चौधरी साहेब

बेटीक बियाह क' रहल छलाह ।

कुल्लम बाइसटा डकैत छल । बड़ ओरियाओनसँ भीतर ढुकल छल । मेन गेटक केबाड़ स्क्रु ड्राइवरसँ खोलि क' हटा देल गेल आ सभ भीतर ढुकल । डकैत सभकेँ भीतरक पूरा नक्शा बूझल छलैक । ओ सभ जनैत छल जे तमाम माल-असबाब कोम्हर अछि । ओही घरमे चौधरी-चौधराइनि सुतल छलाह । डकैत सभक मुख्य लक्ष्य ओम्हरे छलैक ।

चौधरी साहेब निसभेर सूतल छलाह । चौधराइनि सेहो । बेटी सूतलि नहि छलीह। ओ जागलि छलीह आ मुक्तिक बाट सिरजि रहलि छलीह । बेटीकेँ आहट लगलनि। ओ अपन पेस्तौल निकाललनि । गोली भरलनि । खिड़कीक भूरसँ बाहर देखलनि। केबाड़ खोललनि आ फायर........

मुदा फायर नहि सुतरलैक । उनटे भेलैक ई जे पन्द्रहटा डकैत बेटी दिस झपटल।

बेटी अड़ि गेलीह–'तूँ सब हमरा घरसँ बहराइ जो, नहि तँ एक्को टा जिन्दा नहि बचबें ।'

चारिटा डकैत बेटीक टाँग-हाथ ध' लेलक । एकटा मुस्टंड बेटीकेँ पँजियौने रहलनि। बेटी हाथ-पायर घीचैत रहलीह आ जतेक जोरसँ चिकरि सकैत छलीह, चिकरैत रहलीह। जतेक गारि, जतेक कुबोल बाजि सकैत छलीह, बजैत रहलीह ।

डकैत सरदार बाजल, 'देखू दाइ, अहाँक जोर लगयलासँ किछु होना-जाना नै छै। अहाँसँ हमरा सबकेँ कोनो झगड़ा नहि अछि । अहाँ चुपचाप अपन रूममे जाउ आ केबाड़ बन्न कए लियऽ ।'

बेटी ओहिना अनघोल मचबैत रहलीह । गारि-सराप दैत रहलीह । चैलेंज करैत रहलीह । आ डकैतसभक हाथमे दाँत कटबाक कोशिश करैत रहलीह ।

बेटीकेँ चुप करयबाक लेल डकैतसभ हुनका पीटब सुरूह कयलकनि ।

ओम्हर दूटा डकैत चौधरी जीक केबाड़ पिट' लागल आ क्रोधपूर्वक बाजल, 'खोल रौ साला चौधरिया, केबाड़ खोल ।'

बेटीकेँ ओ स्वर चिन्हार लागलैक मुदा ओकर मुह करिया कपड़ासँ झाँपल छलैक। ओहि स्वरमे चौधरी साहेबक प्रति अथाह घृणा भरल रहैक ।

अथाह घृणा बाजल, 'खोल रौ मादरचोद ।' अथाह घृणा पाँच बेर बाजल, दस बेर बाजल, पच्चासो बेर बाजल, केबाड़ नहि खुजलैक । केबाड़ बज्जर-सन सक्कत छलैक । तोड़ैमे भरि राति लागि जाइत । स्क्रूड्राइवर कोनो काज क' नहि सकैत छलैक एतय । अथाह घृणा फेर बाजल । फेर बाजल । आ अन्तमे बाजल, 'खोल रौ सार, नै तँ बेटीकेँ बेइज्जति कए देबौ ।'

अथाह घृणा 'बेइज्जति कए देबौ' बाजल आ कि कोनो आन अश्लील क्रियापद

बाजल, कहब कठिन अछि, मुदा केबाड़ नहि खुजल ।

'अथाह घृणाक अन्तिम वाक्य सुनि क' सभ डकैतक मिजाज पर बिजली चमकि उठलैक ।

सुरूह कयलक वैह । बताह जकाँ सनसनायल आयल आ बेटीक कपड़ा नोच' लागल । चिकस्य से अलग । बेटी चीत्कार क' उठलीह । भयानक चीत्कार ! दारुण! चौधरी साहेब खूब नीक जकाँ जागि गेल छलाह आ भयावह चीत्कारक आस्वादन क' रहल छलाह ।

चीत्कार करैत बेटी चिकरलीह–'पापा !' चौधरीक साहेबक कानमे सुनना गेलनि–'हम ओकरे टा छियैक । ओकरा सिवा दोसर केयो पुरुख हमरा छुबियो नहि सकत ।'

चौधरी साहेब, जे अवस्से निसाँमे रहल हेताह, मुस्कियेलाह ।

अथाह घृणाक बाद दोसर डकैत आक्रमण कयलक ।

चीत्कार । दारुण । भयावह ! 'पापा !'

चौधरी साहेबकेँ सुनना गेलनि–'अहाँक आनल वरसँ हम बियाह नहि करब।' ओ फेर मुस्कियेलाह ।

तेसर डकैत आयल । चीत्कार । 'पापा !'

भीतर चौधराइनि कलेजा पीट' लगलीह आ जोर-जोरसँ कान' लगलीह । डकैतसभ साफ सुनलक जे चौधरी साहेब अपन पत्नीकेँ धोपि रहल छथि ।

डकैत सभ साकांक्ष भेल । आब अबस्से केबाड़ खुजत आ एक बेर फेर गोली चलत । मुदा, एम्हर जे मोका छलैक तकरो केयो छोड़य नहि चाहैत छल ।

बेटीक चीत्कार मद्धिम पड़ैत गेलै । चौधराइनिक कानब तेज होइत गेलै । चौधरीक धोपन बढ़ैत गेलै ।

डकैतसभ हबर-हबर कर' लागल ।

मिरमिरायल स्वरमे अन्तिम बेर बेटी चिकरलीह, 'पापा !'

आ दारुक निसाँमे मतंग चौधरी साहेबकेँ सुनना गेलनि, 'अहाँ हमरा मारी नै मारी, हम अपनहि मरि जाएब, पापा !'

प्राय: एही अन्तरालमे ई भेलैक जे चौधरीजीक केबाड़ झटकासँ खुजल । नि:शस्त्र चौधराइनि बहरयलीह । डकैत सभ चौधरी साहेबक रूम दिस दौगल । पड़ले चौधरी साहेब पकड़ा गेलाह । चारिटा डकैत हुनका थूर' लागल आ बाँकी माल-असबाब समेट' मे लागि गेल ।

हाक्रोश करैत चौधराइनि बेटी लग गेलीह । बेटी बेहोश छलीह । ❐

आवागमन

टेंगर मंडलक ई पुरान हिस्सक रहनि । जे केयो नबका अफसर जिलामे आबय, ओ दौगल दर्शन करय जाथि । कलक्टर आबथि तँ दौड़थि, मछुआ (फिशरी) अफसर आबय, तैयो दौड़थि ।

से, हुनका जहिना पता लागल जे नबका सी. ओ. अयलाह अछि, ओ अंचल ऑफिस पहुँचलाह ।

चैम्बरमे सी. ओ. बैसल रहथि । परदा लटकल । बहारमे लोकसभक भारी भीड़ । टेंगर मंडलकेँ भेलनि जे कोनो झगड़ा-झाटीक मामिला थिक । ओ थकमकयलाह । कने काल बिलमि क' ओ अखियासलनि । बहारमे जे लोकसभ रहय, से सुच्चा रैयतसभ । अपन-अपन बखेड़ा ल' क' सी. ओ. लग अरदास करय पहुँचल छल। टेंगर मंडलकेँ छगुन्ता लगलनि । सैयो बेर ओ एहि ऑफिस आयल छथि, मुदा ई दृश्य नहि देखलनि । एन-मेन कलक्टरबला हिसाब-किताब । बाहजी सहैब-बहादुर ! टेंगर मंडलके हृदयमे एक बेर फेरसँ आशा केर ज्योति जागल ।

ओ देखलनि-लोक जाए, अपन झमेला बताबए, दरखास देअय, आ सी. ओ. समाधान करय लागथि । बाह जी बाह, मिठ-बोलिया केहन, मधु चूबय जेना मुहसँ। तुरत घंटी बाजैक-इसको बुलाओ, उसको बुलाओ । ओ, जमीन दाब लिया है, अमीन को बुलाओ । दाखिल-खारिज क्यों नहीं अभी तक हुआ ? रेकर्ड लाओ, अभी, तुरत।

टेंगर मंडलक पार अयलनि । ओ भीतर पैसलाह । कतेक अफसरसँ ओ भेंट कयलनि, एहन हुदहुदी कहियो नहि पैसनि !

'परनाम हजूर !' , टेंगर मंडल बजलाह । हुनका शैलीमे खन्दानी गुलामबला विनम्रता रहनि । आ, ओ अपन दरखास बढ़ा देलखिन ।

सी. ओ. दरखास पढ़लनि । दरखासमे वैह पुरान बात सभ लिखल रहैक : रघुवीर यादव हमारा जमीन दखल कर लिया है । हमारा फसिल भी काट लिया है । फासिल दिलाइये, जमीन दिलाइये ।

–खेत में कौन चीज का फसल लगा था ?, सी. ओ. पुछलथिन ।

–गहूम लगा था ।

–कितना दिन पहिले काटा ?

–सत्तरह दिन पहिले ।

थाना को खबर किया ?

–खूब खबर किया । हमारा बात कोंइ नै सुनता है । सब गरीब का दुश्मन है। घूस खाता है । हम फेनो पटना जायगा । एको ठो को नहीं छोड़ेगा ।

सी. ओ. टेंगर मंडल दिस तकलनि । सत्तरिक उमेर । कारी धथुर चाम । अथबल आ झमारल देह । चेथरी-चेथरी उड़ल चिक्कट धोती आ पचहत्तरि ठामसँ मोचरल-सोचरल नीपनक नूर सन केर अंगा । महाग भयोओन आकृति । सी. ओ. मोन पाड़' लगलाह जे एहिसँ पैघ दरिद्रछिम्मरि की कहियो ओ देखनहु छथि ?

मुदा ताहि लोकक एहन हेकड़ी ? एकोठो को नहीं छोड़ेगा ?

हुनक दरखास पर सी. ओ. किछु लिख' लगलाह । टेंगर मंडल निपट अनपढ़, मुदा ततेक उठा-पटक देखलनि जे अक्षर-जगत् केर माया हुनका बुझौअलि बुझाइन। रहस्यमय आ मारक जकाँ ।

टेंगर मंडल पुछलनि सी. ओ. सँ–'इस पर क्या लिखा ?'

सी. ओ. केँ आश्चर्य भेलनि । मुदा बाह जी अफसर ! ताकलनि एक बेर टेंगर मंडल दिस आ मुसकिया क' पुछलनि, 'आप क्या चाहते हैं ?'

–हमको फसिल दिलाइए । जमीन दिलाइये । हम भुक्खल मरता है । कोइ देखनेबाला नहीं है ।

सी. ओ. बजलाह–'एकदम ठीक । हम आपको फसल भी दिलाएँगे और जमीन भी दिलाएँगे । आप जरा-सा इन्तजार कीजिए । हम कर्मचारी से रिपोर्ट लेते हैं । कल हम कर्मचारीको जमीन पर भेजेंगे ।'

'आप ही माय-बाप हैं ।' –टेंगर मंडल बजलाह आ बहार निकलि गेलाह ।

ओही दिन साँझुका पहरक गप छिऐक । सी. ओ. अपन डेराक बरंडामे दू-चारि गोटेक संग बैसल छलाह । तखनहि ओहि ठाम टेंगर मंडल पहुँचलाह ।

'कहिये, कहिये टेंगर मंडलजी ! किधर आए ? ', सी. ओ. हुनका देखितहि

बजलाह।

टेंगर मंडलकेँ खुशी भेलनि । ओना, ई स्वागत-सत्कार हुनका लेल पुरान बात रहनि । जाहि अफसर लग जाथि, सब नीक बोल कहनि । मुदा, ई मरदे सी. ओ. तँ नामो इयादि रखने अछि ।

—गाम से आया था । बड़ी दूर गाम है ! गाड़ी छूट गिया ! राति-बीच यहीं पर रहेगा । आपका खाना खायगा । कल करमचारी के साथ जायगा ।

सी. ओ. किछु सोच-बिचार कर' लगलाह । फेर बजलाह, 'ठीक है, ठीक है। आप वहाँ पर बैठिये ।' आ नोकरकेँ बजा क' कहलखिन जे मंडलजीकेँ भोजन आदि करा देल जाइनि ।

ईहो टेंगर मंडलक पुरान हिस्सक रहनि । ओ अपन काज लेल जाहि अफसर लग जाथि, रातिमे ओकरे ओहिठाम टिकथि आ भोजन करथि ।

दोसर दिन भोरे ठीके कर्मचारी जाँच लेल बिदा भेल आ टेंगर मंडल सेहो ओकरहि संग गाम गेलाह ।

चारि-पाँच दिनुका बाद कर्मचारीक रिपोर्ट सी. ओ.केर टेबुल पर राखल गेल । सी. ओ. प्रतीक्षेमे छलाह । ओ रिपोर्ट पढ़' मे तल्लीन भ'\गेलाह । मुदा सी. ओ. केँ झटका लगलनि । कर्मचारी अपन रिपोर्टमे लिखने छल जे जमीन पर गहूमक फसिल टेंगर मंडल नहि लगौने छलाह । गहूम रघुवीर यादव लगौने रहय । रघुवीर यादवक जमीनक जमाबंदी चलि रहल छलैक आ ओ अपन उचित जमीन पर खेती क' रहल छल । कर्मचारी ईहो लिखने रहैक जे टेंगर मंडल केर जमीन ओहि जगह पर कहियो छलैके नहि । रघुवीर यादवक अरिया सभ जे जमीन पकड़ने अछि; सेहो ओकरा सभक रसीदक अनुसार ठीक छैक । निष्कर्ष रहैक जे टेंगर मंडलक आवेदनपत्र अनुचित आ मिथ्या अछि ।

सी. ओ. केँ झटका लगलनि । टेंगर मंडल सन आदमी आ से एहन फूसि लिखत! ओ घंटी बजौलनि । चपरासी आयल । कर्मचारीकेँ बजा अनबाक हुकुम भेलैक ।

सी. ओ. क मोनमे विचित्र गुनधुन व्याप्त रहनि ! टेंगर मंडल के रसीद तँ कटि रहल छै ! तखन जमीन कतय गेलै ?

कर्मचारी आयल । सी. ओ. पुछलनि, 'ये रिपोर्ट जो आपने दिया है, इसको देखिए।'

अपने लिखल रिपोर्टकेँ कर्मचारी देख' लागल । ओकरा भेलैक जे रिपोर्टमे किछु त्रुटि रहि गेल होयतैक । ओ ध्यानसँ देखलक मुदा सभ किछु ठीक बुझयलैक । रिपोर्टक किछु पाँतीकेँ सी. ओ. रेखांकित कयने रहथि, तकरा कर्मचारी बेर-बेर देखलक । मुदा, सभ किछु ठीक बुझयलैक ।

सी. ओ. पुछलनि, 'क्या ये बात सही है ?

—जी सर !

–आप स्पॉट इनक्वाइरी कर लिए हैं ?

–जी सर, पहले भी कई बार किये हैं ।

–टेंगर मंडल का केस क्या पहले से चला आ रहा है ?

–जी सर, करीब सतरह बरस से टेंगर मंडल मुकदमा लड़ रहे हैं ।

–अच्छा ! तो फिर मामला क्या है ?

मामिला किछु अलग रहैक । टेंगर मंडल अपन आठ बीघा खेतसँ बेदखल छलाह, ई बात एकदम सही । सतरह बरससँ ओ जमीन पयबाक कोसिसमे छलाह, मुदा, हुनक विचित्र स्वभाव । कोनो अफसरकेँ वा कोर्टकेँ ओ ई नहि कहथिन जे जमीनसँ बेदखल छथि । ओ कहथिन जे फसिल लूट लिया है, खेत दाब लिया है । जाँच होइक । रिपोर्ट आबय जे बात असत्य थिक । आ, मामिला समाप्त भ' जाय ।

–अच्छा, रघुवीर यादव कैसा आदमी है ?

–ओहो गरीब आदमी अछि, सर । भला लोक अछि । टेंगर मंडल ओकरा नेस्त-नाबूद कए देलकै । आठ-नओ किता केस एखनहु ओकरा पर चलि रहल छै। फसल लूटि आ डकैती केस ।' कर्मचारीक कहनाइ रहैक ।

–पहले कभी जमीन की नापी हुई है ?

–जी. सर ! तीन चारि बेर नापी भेलैए । पछिला रेकार्ड देखल जाय ।

सी. ओ. पछिला रेकर्डसभ मँगौलनि आ निचैनसँ अध्ययन करबाक लेल डेरा ल' अयलाह ।

दू-तीन दिन आरो बीतल । तखन एक दिन टेंगर मंडल सी. ओ. क चेम्बरमे पहुँचलाह।

–परनाम हजूर ।

सी. ओ. कन्हुआ क' हुनका दिस ताकलनि :

–झूठ-फूस बात आप लिखते हैं ? वो आपका फसल लूटा है? बूढ़ा हो गए हैं आ शरम नहीं आता है ?

टेंगर मंडल पर मुदा तकर कोनो असरि नहि । बड़े सहज भावसँ ओ बजलाह:

–हम झूठ-फूस नहीं लिखा है । जो सही था, सो लिखा । आपका जाँचमें क्या निकला ?

–जाँच में निकला है कि दरखास झूठ है । फसल नहीं लूटा है । हम दरखास खारिज कर रहे हैं ।

टेंगर मंडलकेँ अथाह लागलनि । हौ बाबू, के एकरा कहैछै जे नीक सी. ओ. अछि ! ई मरदे तँ नापियोटा कराबय तैयार नहि भेल । पहिनहि दरखास खारिज !

मुदा, टेंगर मंडल चतुर लोक छथि । चतुर आ अनुभवी । अफसरसभ लग एतेक दौड़ैत-दौड़ैत हुनका बहुत भाँज सभ बुझल भ' गेलनि अछि । ओ अपन रूप बदललनि:

—काहे दरखास खारिज करेगा ? अपने मन सैं कि कानून के मन सैं ? गरीब के पारलगैया के बनेगा ? हम जाएगा पटना । सब अफसरी हम घोसाड़ देगा । नौकरी खा जाएगा ।

आ, ओ थमलाह । अखियास कयलनि जे सी. ओ. पर बातक की असरि पड़लैक अछि !

सी. ओ. गंभीर छलाह । बजलाह, 'ठीक है, आप बाहर जाइए । जो करना है, कीजिए ।'

टेंगर मंडल भारी मोश्किलमे पड़लाह । एना तँ कहियो नहि भेल । ईसभ बात सुनि क' तँ अफसर आदरसँ बैसबैत रहनि ।

ई मरदे त बहार निकालि रहल अछि ! ओ चिकरय लगलाह :

—काहे हमको बहार करते हैं ? कहाँ जायगा ? कोइ देखनेवाला नहीं है । गरीब मर जाएगा ? अइ राजमे यही होता है? हमको फसिल दिलाइए । जमीन दिलाइये। बहार काहे करता है ?

सी. ओ. सेहो मोश्किलमे पड़ि गेलाह । की फुरलनि की नहि, घंटी बजौलनि। चपरासी आयल । कहलनि, 'इनको बाहर ले जाइये।' चपरासी टेंगर मंडलकेँ बहार क' देलकनि ।

बहार जा' क' टेंगर मंडल ततेक अव्यवस्थित भ' गेलाह जे चुप्प भ' गेलाह ।

ओहू दिन साँझखन फेर वैह भेलै । सी. ओ. अपन बरंडामे बैसल छलाह कि टेंगर मंडल हाजिर भेलाह । सी. ओ. किछु नहि पुछलनि । टेंगर मंडल बजलाह, 'ग्राम बड़ी दूर है । गाड़ी छूट गिया । राति बीच यहीं पर रहेगा । हजूर के खाना खाएगा।'

आ जे टेंगर मंडल चाहलनि, सैह भेल ।

दोसर दिन, बिनु किछु कहने-सुनने टेंगर मंडल चलि गेलाह । मुदा, एम्हर सी. ओ. निचैन नहि भेलाह । जानि नहि, एहि केसमे हुनका कत' की देखायल रहनि, ओ तक्काहेरीमे लागल रहलाह ।

टेंगर मंडलक खेतबला ओ इलाका सत्ते बहुत दूर छल । गंगा नदीक पेटमे । शुद्ध दियारा भूमि । प्राय: सभ साल बाढ़ि आबैक । भीषण कटाओ होइक । जतय आइ भरल-पुरल बस्ती बसल अछि से काल्हि बालूक टीला बनि जाय वा हहरैत नदी-धारा । जकर जमीन कटि जाइक से रातारातीं दरिद्र बनि जाय । मुदा, जकर खेतमे नबका माटि पड़ैक, वा बरार होइक, ओकर ओ समय उत्सव-काल भेल करैक । हास-रुदन केर अद्‌भुत मिलान छल । किसान-मजूरसभ भयोवह उद्यमी । इलाकामे अधिकतर गरीब लोकसभ बसैत छल मुदा ओकरा सभकेँ कथूक कमी नहि रहैत छलैक।

जाहि बेर, जाहि कोनो काजसँ सी. ओ. ओहि इलाकामे जाथि, सभ बेर टेंगर मंडलक मादे अवश्य पूछाहेरी करथि ।

एक बेर हुनका एकटा वृद्ध बतौने रहनि :

–टेंगर मंडल जे अछि हजूर, से जुलुम बहादुर रहय । अंगरेजके जबानामे ओकरा तगमा भेटल रहै । की की ने करय ! कते सुग्गर मारलक, कते भालु । बाघसँ लड़ैबला करेज रहै । तगमा भेटलै तँ राजा साहेब कहलखिन जे रे टेंगर, हमर सिपाही बन । एहन कड़ा-दिमाग नै दखलौहें । राजा कहथिन चाट तँ टेंगर मारय लाते-लात। देहो-दसा रहै ! टेंगरके डरे हमसब कहियै जे भूत भागै छै !

दोसर बेर कोनो दोसर व्यक्ति कहलकनि :

–टेंगर मंडल-सन स्वामीभक्त होअय नहि । असंभवकेँ संभव करयबला आदमी रहय । राजो साहेब खूब मान करथिन । सौंसे परिवार आनन्द करय । जखन, राजा साहेब जाय लगलाह तऽ कहलखिन, 'हौ जी टेंगर ! लैह ई तोहर बकसीस।' आ आठ बीघा जमीन केर परचा हाथकेँ देलखिन । ई वैह जमीन छियै हजूर । कागत भेटि गेलै मुदा दखल नहि भए सकलै । जा राजा साहेब जिलखिन ता टेंगरकेँ कोनो कमी नहि रहलै । आब तँ दोसर जुग छै ।

तेसर गोटे कहियो कहलखिन :

–टेंगर जा कर्मठ रहै, खूब जमीन जोतय, बटेदारीमे । बेटा-पुतोहुकेँ कोनो कमी नहि होअय देलकै । मुदा आब सकै कहाँ छै ? बेटासब जे अछि ओकर, से सब महाग कोढ़ियाठ ! के जमीन देतै ?

आ, एक बेर टेंगर मंडलक पड़ोसिया भुजंगी मंडल ईहो खिस्सा सुनौलकनि:

–सतरह बरखसँ टेंगर जमीनक कोशिशमे लागल रहय । कोन-कोन अफसर लग नहि गेल । मुदा, कोनो फल नहि । तखन एक बेर टेंगरकेँ केयो कहलकै जे हौ जी मरदे, सोनार के सय, लोहार के एक । तों सीधे मुख्यमंत्री लग जाह । गरीबक बात खूब सुनै छै । एक बेर नजरि ताकि देलकह तँ तरि जेबह । आ, टेंगर मंडल मुख्यमंत्री सँ भेंट करय गेलाह ।

मुख्यमंत्रीसँ भेटक खिस्सा टेंगर मंडल एहि तरहें सुनबै छथिन :

–गरमी का समय रहा । हम गाड़ी पकड़ा । रस्तामे टी०टी० पुछा, टिकस कहाँ है ? हम कहा, हमारा नाम टेंगर मंडल है । गाम देहारी, परगाना तेलियागाढ़ी । राजा बहादुर का अरदली है। मुखमंत्री से भेंट करने को वास्ते जाता है । बस, एतना बोला कि टी. टी. गाँड़ गुड्डुम हो गया । बड़ा शान से पटना पहुँचा । मुखमंत्री बोला, कहो जी टेंगर, क्या माँगता है ? जो माँगता है सो माँग ला । सो हजुर हम भी सत-बत करा न लिए । मुखमंत्री बड़ा परेमसे सत-बत किहिन, एक सत दू सत ब्रह्मा बिसुन सत, जे अपन कहल काटे सो अस्सी कोस नरकमें जाकर गिरे । तब हम बोले,

आपके राजमे जुलुम होता है हजुर, गरीब भूखल मरता है । फसिल लूट लिया है, जमीन दाब लिया है । कोइ सुनबैया नै है । कतय कतय नै गिया । मुखमंत्री बड़ा खुशी हुआ। हमको एक लंबर खाना खिलाया । डेढ़ सौ रुपिया दिया ।

मुदा एतबा धरि सुनयलाक बाद ओ उदास भ' जाथि, 'लेकिन हजुर, हमारा जमीन नहीं ऊपर हुआ, हमको एक्को कनमा फसिल नै मिला ।'

एहि केसक सम्बन्धमे सी.ओ. अपन मातहत कर्मचारी सभसँ सेहो पुछताछ कयलनि। सी० आई. बतौलक जे टँगर मंडल जखन मुख्यमंत्री लग गेलाह तँ मुख्यमंत्री कलक्टरकेँ फोन कयलखिन सीधा आदेश रहैक–सात दिन के अंदरमे टेंगर मंडल केँ फसिल आ जमीन दियाओल जाय । कलक्टर एस डी. ओ. केँ कहलखिन । एस. डी. ओ. सी. ओ. केँ आदेश देलखिन । गली-गली मे टेंगर मंडलक, खोज होअय लगलै–कहाँ गया टेंगर मंडल, किधर गया टेंगर मंडल ? टेंगर धरि पटनासँ घूरल नहि छलाह । पटनामे रमल रहथिन । एम्हर जाँच भेल । जाँचमे इयैह बात पाओल गेलै–टेंगरकेँ तँ कहियो जमीन पर दखले नहि रहलैक । मुदा मुख्यमंत्रीक कड़ा हुकुम। सी.ओ. साहैब नापीक आदेश देलखिन । अगल-बगल केर पन्द्रह-बीस रैयतकेँ नोटिस भेलै। सभ अपन-अपन कागत-पतरक संग नापी कालमे हाजिर । मुदा जुलुम बात देखल गेल । सभक जमीन अपन-अपन कागतक हिसाबसँ पूरल रहैक । सभ रैयत सही-सही जमीन पकड़ने रहय । टँगर मंडलकेँ जमीन नहिञे भेटि सकलनि ।

दिन बीतल, सप्ताह बीतल, मास बीतल । सी. ओ. एहि केसकेँ बिसरि नहि सकलाह। ओ सोचा-विचारीमे लागल रहलाह जे टेंगर मंडलकेँ न्याय कोना भेटतै ?

ओहि मौजाक एक-एक रजिस्टर ओ उनटा गेलाह । सभ बेर इयैह बुझेलनि जे टेंगर मंडलक जमीन वाजिब थिक आ से ओकरा भेटबाक चाही ।

ओहि इलाकाक सर्वे एखन धरि भेल नहि रहैक । ने खतियान बनल रहैक, ने नक्शा । जमीन केर कोनो नंबर ठहराओल नहि गेल छलै । परंपरानुसार निर्णय होइक जे ककर जमीन कतय अछि । इलाकामे किछु चतुर लोक होयबाक सेहो संभवना रहैक जे एक कागत पर दू-दू तीन-तीन ठाम जमीन पकड़ने हो । इहो संभव रहैक जे फरजी जमाबंदी कायम क' देल गेल हो आ टेंगर मंडलक वाजिब जमीन निपत्ता भ' गेल हो । संभावना अन्ततः एहू बातक कम नहि रहैक जे जमींदार ओकरा झुठ बतौने होइक जे तोहर जमीन रघुवीर यादवक आरिमे छहु । संभवना बहुत भ' सकैत छलैक ।

सभसँ पहिने सी. ओ. जमाबंदी बहीक जाँच कयलनि । एक्को टा जमाबंदी फरजी नहि बहरयलैक । तखन ओ अमीन कर्मचारीसँ पुछलनि जे एहन बात तँ नहि छै जे एक्के कागत पर रैयत दू-दू तीन-तीन ठाम जमीन जोतैत अछि । कर्मचारी कहलकै जे एखर धरि प्राप्त सूचनाक आधार पर से बात नहि अछि ।

आ अन्ततः सी. ओ. निर्णय कयलनि जे सौँसे मौजाक नापी कराओल जाय। ई

बड़ भारी निर्णय रहैक । एहि नापी अभियानमे दू-अढ़ाय मास समय लगबाक संभवना रहैक । सी. ओ. कलक्टरसँ गप कयलनि । सभ बात बतौलखिन । कलक्टर सेहो सहमत भेलाह । मुदा, कानूनी अड़चनसँ बचबाक लेल कलक्टर सलाह देलखिन जे आम नापी 'स्वो मोटो ' नहि कयल जाय , पब्लिक पेटिशन पर कयल जाय ।

टेंगर मंडल बजाओल गेलाह । सी. ओ. कहलखिन– 'देखिए, टेंगर मंडल जी, आज तक आपका जमीन नहिये न निकल सका ? हम लेकिन निकाल कर रहेंगे। चाहे जो हो जाए । आप एक ठो दरखास लिखिए । दरखासमे लिखिए कि 'हम जमीन से बेदखल हैं, इसलिए प्रार्थना है कि आम नापी करके जमीन निकाल दिया जाय ।'

मुदा टेंगर मंडलकें ई बात पसिन्न नहि । ओ अड़ि गेलाह, 'झुठ बात हम काहे लिखेगा ? हमको तो मालूम है जो जमीन कहाँ पर है । रघुवीर जादव दाबा है । गहूम काट लिया है । एक सय दस मोन गहूम हुआ है । हम भूख मरता है । ऊ मौज करता है ।'

सी. ओ. बुझेबाक चेष्टा कयलखिन, 'रघुवीर यादवक जमीन उचित छैक। ओकरा सही कागत छैक । ओ जमीन तोरा नहि भेटतह । हम निकालि दै छियह, जे पकड़ने हेतह तकरासँ छोड़ा क' तोरा द' देबह । हमरा एहिमे बहुत मेहनति पड़त, बहुत काज हरज होयत । मुदा कोनो बात नहि । तोहर जमीन हम निकालि देबह ।'

बहुत समझेलखिन सी. ओ. मुदा टेंगर मंडल टस्ससँ मस्स नहि भेलाह । ओ कहैत रहलाह– 'हम हजूर पाकल आम हैं । केतना दिन जीने सकता है ? फसिल नै मिलेगा तो क्या फैदा होगा ? कोनो उपाय कीजिए । रघुवीरे जादव दाबा है हजूर । पक्का कहता है ।'

टेंगर मंडलकें सी. आइ. समझेलखिन, कर्मचारी समझेलखिन, मुखियाा-सरपंच प्रमुख समझेलखिन, मुदा ओ टससँ मस नहि भेलाह । ओ दरखास देबाक लेल तैयार नहिये भेलाह।

एम्हर, आम नापीक नाम सुनि इलाकामे हलचल मचि गेल रहैक । बड़का-बड़का लोकक पैरवी आबय लागल रहैक । एम. पी., एम. एल. ए. नहि चाहैत रहय जे आम नापी हो । एस. डी. ओ. साहैब सेहो इशारा कयने रहलथिन जे 'अनुत्पादक श्रम मे क्यों समय गँवाते हो , सी. ओ. साहब ।'

सी. ओ. फेर कलक्टरसँ भेंट कयलनि । कलक्टर सी. ओ. से फेर सहमत छलाह। सी. ओ. स्वो मोटो घोषणा क' देलखिन जे आम नापी होयत ।

आम नापीक तैयारी होअय लागल ।

मुदा, अंचलमे की एक्के टा टेंगर मंडल बसैत छलाह जे सी. ओ. हुनकहिमे बाझल रहताह ? बहुत लोकक बहुत-बहुत समस्या रहैक । सी. ओ. ओहि सभमे ओझरायल रहलाह । नापीक कार्यक्रम ससरैत गेलै । इलाकामे कैक ठाम अगिलगी भेलै, सी.

बड़ भारी निर्णय रहैक । एहि नापी अभियानमे दू-अढ़ाय मास समय लगबाक संभवना रहैक । सी. ओ. कलक्टरसँ गप कयलनि । सभ बात बतौलखिन । कलक्टर सेहो सहमत भेलाह । मुदा, कानूनी अड़चनसँ बचबाक लेल कलक्टर सलाह देलखिन जे आम नापी 'स्वो मोटो ' नहि कयल जाय , पब्लिक पेटिशन पर कयल जाय ।

टेंगर मंडल बजाओल गेलाह । सी. ओ. कहलखिन– 'देखिए, टेंगर मंडल जी, आज तक आपका जमीन नहिये न निकल सका ? हम लेकिन निकाल कर रहेंगे। चाहे जो हो जाए । आप एक ठो दरखास लिखिए । दरखासमे लिखिए कि 'हम जमीन से बेदखल हैं, इसलिए प्रार्थना है कि आम नापी करके जमीन निकाल दिया जाय ।'

मुदा टेंगर मंडलकेँ ई बात पसिन्न नहि । ओ अड़ि गेलाह, 'झुठ बात हम काहे लिखेगा ? हमको तो मालूम है जो जमीन कहाँ पर है । रघुवीर जादव दाबा है । गहूम काट लिया है । एक सय दस मोन गहूम हुआ है । हम भूख मरता है । ऊ मौज करता है ।'

सी. ओ. बुझेबाक चेष्टा कयलखिन, 'रघुवीर यादवक जमीन उचित छैक। ओकरा सही कागत छैक । ओ जमीन तोरा नहि भेटतह । हम निकालि दै छियह, जे पकड़ने हेतह तकरासँ छोड़ा क' तोरा द' देबह । हमरा एहिमे बहुत मेहनति पड़त, बहुत काज हरज होयत । मुदा कोनो बात नहि । तोहर जमीन हम निकालि देबह ।'

बहुत समझेलखिन सी. ओ. मुदा टेंगर मंडल टस्ससँ मस्स नहि भेलाह । ओ कहैत रहलाह- 'हम हजूर पाकल आम हैं । केतना दिन जीने सकता है ? फसिल नै मिलेगा तो क्या फैदा होगा ? कोनो उपाय कीजिए । रघुवीरे जादव दाबा है हजूर । पक्का कहता है ।'

टेंगर मंडलकेँ सी. आइ. समझेलखिन, कर्मचारी समझेलखिन, मुखियाा-सरपंच प्रमुख समझेलखिन, मुदा ओ टससँ मस नहि भेलाह । ओ दरखास देबाक लेल तैयार नहिञे भेलाह।

एम्हर, आम नापीक नाम सुनि इलाकामे हलचल मचि गेल रहैक । बड़का-बड़का लोकक पैरवी आबय लागल रहैक । एम. पी., एम. एल. ए. नहि चाहैत रहय जे आम नापी हो । एस. डी. ओ. साहैब सेहो इशारा कयने रहलथिन जे 'अनुत्पादक श्रम मे क्यों समय गँवाते हो , सी. ओ. साहब ।'

सी. ओ. फेर कलक्टरसँ भेंट कयलनि । कलक्टर सी. ओ. से फेर सहमत छलाह। सी. ओ. स्वो मोटो घोषणा क' देलखिन जे आम नापी होयत ।

आम नापीक तैयारी होअय लागल ।

मुदा, अंचलमे की एक्के टा टेंगर मंडल बसैत छलाह जे सी. ओ. हुनकहिमे बाझल रहताह ? बहुत लोकक बहुत-बहुत समस्या रहैक । सी. ओ. ओहि सभमे ओझरायल रहलाह । नापीक कार्यक्रम ससरैत गेलै । इलाकामे कैक ठाम अगिलगी भेलै, सी.

आ. ओहिमे बझलाह । तखन, बाढ़ि अयलै, सी. ओ. ओहिमे फँसलाह । तखन, वृद्धावस्था पेंशनक व्यापक जाँच । तखन, योजना सभकेँ तुरन्त पूरा करबाक सरकारी आदेश । तखन, लगान वसूली अभियान । तखन, सरकार कहलकै जे सभ रैयतकेँ जमीनक पासबुक देल जायत, सी. ओ. ताहिमे लगलाह । समूचा अंचल कर्यालय एहि सभमे अस्त-व्यस्त रहल ।

आ ई सभ बितलै तँ लोक-सभा निर्वाचनक घोषणा भ' गेलै । चारि मास आब एहीमे ।

ई निश्चित छल जे मौजाक आम नापी हेतै, मुदा से कहिया हेतै, तकर निश्चय नहि छल ।

आ, ई सभ कथू पूरा क' लेलाक बाद एक दिन सी. ओ. अपन चेम्बरमे बैसल छलाह । एक व्यक्ति दाखिल भेल । उमेर चालीस-पैंतालिस । गरीबीसँ झमारल कारी धथूर देह । फाटल-फुरान सड़ल-गन्हायल वस्त्र । ओ व्यक्ति सी. ओ. केँ प्रणाम कयलक । सी. ओ. पुछलखिन, 'कहिये, क्या बात है ?'

ओ व्यक्ति बहुत घबराहटिमे छल । श्वास तेज चलि रहल छलै । मुँहसँ आवाज नहि बहराइक । सी. ओ. लक्ष्य कयलनि जे ई देहाती व्यक्ति पहिले बेर कोनो हाकिम लग आयल अछि ।

सी. ओ. स्नेहपूर्ण शब्दमे पुछलखिन, 'आप कहाँ से आए हैं ?'

–देहारीसँ हजूर ।

–अच्छा-अच्छा । क्या दिक्कत है आपको ?

–हजूर, हमरा कोनो दिक्कत नै छै । हम टेंगर मंडल के बेटा छियै ।

–ओ । ठीक है । टेंगर मंडल का समाचार कहिये ।

– हमर बाप तँ मरि गेलै हजूर । दू महिना भए गेलै ।

– ओ.......ह......। – सी. ओ. उदास भ' गेलाह । बड़ी काल धरि अपसोच करैत रहलाह ।

किछु काल धरि चुप रहलाक बाद फेर वैह व्यक्ति बाजल- 'हजूर । बाप तँ हमर पाकल आम रहै, तुबि गेलै । आब हम अपन मोकदमामे दौड़बै । अहीं माय-बाप छियै । हमर कागत-पत्तर कनी देखि लियौ ।'

सी. ओ. ओकर कागत-पत्तर देखलखिन । ओहिमे जमिन्दारक देल परचा रहैक, बीस-बाइस बरखक लगान-रसीद रहैक, मुदा ताहि संग संग अस्पतालक पुरजा सेहो रहैक आ खादी भंडारसँ चद्दरि किनबाक कैशमेमो सेहो ।

सी. ओ. ओहि व्यक्ति दिस ताकलनि ।

ओ धीर गंभीर हिमालय जकाँ कल जोड़ने ठाढ़ छल । ❑

विवेक-वध

'जिनगीमे बहुत दुख अछि मठाधीश जी, जतय जायब-दुख मात्र दुख भेटत। रोगक जीवाणु जकाँ दुख बढ़ैत अछि । जतबा दुख अछि अहाँ लगमे, आ जतबा शक्ति अछि दुख सहबाक, निश्चित रूपसँ अहाँ एसकर अपन सबटा दुख नहि पीबि सकैत छी। मठाधीश जी, संसारक सभ धर्ममे पड़ोसीकेँ एतेक महत्त्व, एतेक गरिमा किऐक देल गेलैए ? ओ अहाँक दुख बँटैत अछि । ओ बैकवार्ड थिक कि फोरवार्ड-कोनहु फर्क कहाँ पड़ैत अछि ? अहाँ हमरा कहू मठाधीश जी ।'

मुदा, मठाधीश जी हँस' लगलाह । यैह हिस्सक छनि । जखन लगतनि जे समक्ष बैसल व्यक्तिक प्रश्नक उत्तर देबामे ओ समर्थ नहि छथि, हँस' लगताह । जखन अनुभव करताह जे संवेदनाकेँ बुद्धिसँ आ विवेककेँ कुटिल चालिसँ परास्त करबाक अछि, ओ हँस' लगताह । अद्भुत अछि हुनक हँसी । एक बेर कियो बन्धु मजाक कयलखिन-'मठाधीश जी, अहाँक हँसी एन-मेन रावण जकाँ अछि ।' मठाधीश हँस' लगलाह । हँसैत बजलाह-'गलत कहलहुँ अहाँ । सत्य तँ ई थिक जे रावणक हँसी हमरा जकाँ छलैक । ओना, सत्य सेहो नहि थिक । हम वस्तुतः चाणक्य जकाँ हँसबाक अभ्यास करै छी......'

मठाधीश हँस' लगलाह, मुदा सिंह जी निराश नहि भेलाह । ओ प्रायः ठानि लेने छलाह जे आइ मठाधीशसँ एहि मादे गप करताह-'सुनू मठाधीश जी, अहाँ तँ ईश्वरपर विश्वास करैत छी । की अहाँकेँ लगैए जे बैकवार्ड-फारवार्डक विचार ईश्वरक बनाओल अछि ?'

मुदा, ताधरि घंटी बाजि गेलैक । आब मठाधीशकेँ क्लास जयबाक छनि । ओ

क्लास जा क' छत्राकें पढ़ेताह, से नहि । दोसर क्षण रहितैक तँ ओ एतेक जल्दी नहि उठितथि । मुदा, एखन उठि गेलाह । सिंह जीसँ मुक्तिक एखन यैह एक उपाय । मुदा, चुपचाप नहि उठलाह मठाधीश । कहैत उठलाह–बेर-बेर शंका होइए जे अहाँ ज्ञानी लोक छी सिंह जी । मुदा, से अहाँ छी नै । एतेक छोट बात अहाँक समझमे किए नै अबैए जे चाउरमे मडुआ नै फेंटल जा सकैछै आ ने किरासन तेलमे पानि। भावुकतामे बहैछी सिंह जी । बुधियारीसँ काज लिय। विवेकवादी बनि क' रहब तँ कोयो काज नै देत । जाहि बैकवार्ड सभक अहाँ प्रवक्ता छी, ओ सभ घुरियो नहि ताकत । अहाँ हमरा बताउ,गाँधीजी अपन प्राण किएँ गमौलनि ? जकरा सभक ओ हिमायती छलाह, से हुनका किए काज नै देलकनि ?'

कठिन अछि मठाधीशकें चीन्हब । कतेक सहजतासँ एखन ओ जातिवादीसँ हिन्दुवादी भ' गेलाह । बहुत सूक्ष्म सूत्र अछि । बहुत गँहीर कुण्ड अछि ।

मठाधीश क्लास दिस विदा भेलाह । बाटमे भेटलनि उपाध्याय जी । हुनका कहलकनि–'ई सार सिंहबा पक्का हरामी अछि । राजपूतक नामपर कलंक अछि–कलंक !'

एहने एक आर कलंक अछि एहि स्कूलमे मंडल जी । ओ बैकवार्ड छलाह, मुदा मनुक्ख निकलि गेलाह । जेना लोक बड़ आशासँ अनरनेबा लगबैत अछि, आ पैघ भ' क' जँ ओ गाछ मुनसरबा निकलि जाय, तँ दुखी होइत अछि, सौंसे बैकवार्ड समुदाय मंडल जीसँ दुखी अछि । मंडलजीकेँ सेहो बीच-बीचमे दौरा पड़ैत छनि आ ओ बैकवार्ड समुदायक बन्धुलोकनिकेँ आ नेता जादव जीकें समझाब' लगैत छथिन–अहाँ लोकनि अपन-अपन छातीपर हाथ राखि क' कहै जाउ भाइलोकनि, आइ अहाँ जतय धरि पहुँचल छी, एहि विकासमे अहाँक जाति अहाँकेँ कते सहयोग केलक अछि ? हम जनै छी जे जँ अहाँ इमनदारीसँ सोचब तँ मोश्किलमे पड़ि जायब। ककरो जाति ओकरा परेशानी टा क' बाधेटा उत्पन्न क' सकै छै, से इतिहास-सिद्ध अछि । तें अहाँ सभ इमानदार होयबासँ बच' चाहैत छी। सुनू जादबजी, मनुक्ख होयब जादब आकि कुर्मी होयबासँ बहुत महान होइछ । मनुक्ख बनू, जादव जी मनुक्ख बनू।' जिनगीमे बहुत दुख अछि जादव जी, बहुत सन्ताप अछि । जे अहाँक दुख बाँटि सकय, सैह अप्पन थिक । पड़ोसीकेँ जानू जादव जी, मनुक्ख बनू ।'

मुदा, लोक मनुक्ख होयबासँ तहिना डेराइत अछि, जेना एड्स होयबासँ । आ बैकवार्ड दलक नेता जादव जी बादमे फतवा जारी करैत छथि–'ई सार मंडलबा कलंक थिक, कलंक । जरूर एकर माय कोनो फोरवार्डसँ फँसल होयत....'

X X X

जाहि ठामक ई खिस्सा थिक, से स्कूल एहि इलाकाक सर्वश्रेष्ठ शिक्षण-केन्द्र मानल जाइत छल । लोक एहि स्कूलमे अपन नेनाक एडमिशनक सेहन्ता करैत छल। आन-आन शिक्षण-संस्था एहि स्कूलसँ प्ररेणा लैत छल, आ कार्यप्रणाली सिखैत छल। अपना-अपना विषयक निष्णात शिक्षकलोकनि एतय पठाओल जाइत छलाह। एतेक सुखद वातावरण छलैक जे लोक एतुक्का शिक्षक होयबामे गौरवक बोध करैत छल। समाजमे शिक्षकलोकनिक अपूर्व सम्मान छलनि ।

एतय साठि गोट शिक्षक छलाह । के कोन जातिक छथि, से बुझबामे ने तँ किनकहु रुचि छलनि, ने आवश्यकता । ओना, किछु गोटे तहियो मुखर छलाह–जेना मठाधीश, जेना यादवजी । मुदा अरुण प्रकाश, मलय कुमार, विमल प्रसाद, शोभा श्री कोन जातिक छथि–के कहि सकैत छल ? आब पुनर्गठन भेल । दू दल बनल। दूनू दल अद्भुत रूपसँ संतुलन कायम कयने अछि । गड़बड़ी एक्केटा भेल जे एकटा तेसरो दल बनि गेल–सिंहजी आ मंडल जीक दल । दुनू दल एहि द्विसदस्यीय तेसर दलसँ घृणा करैत अछि, आ जातिक नामपर कलंक सिद्ध करैत अछि ।

पहिने खूब पढ़ाइ होइत छलैक । बुद्धिजीवी शिक्षकलोकनि एकरा अपन धर्म बूझथि । आब अधिकांश समय राजनीति करबामे चलि जाइत अछि । जँ अहाँ पढ़ाइक मादे चर्चा करी तँ झाजी जबाब देताह–'औ जी, हमरेलोकनिसँ अहाँ किए उम्मीद करैछी जे बरद जकाँ खटैत रही ? भाइ साहेब, पहिने अपन अस्तित्व-रक्षा, तखन सरकारी काज । अहाँ ऊपर ताकू । देशक प्रधानमंत्री देशक लेल की क' रहल अछि ? अप्पन कुरसी बचेबाक अतिरिक्त आर कोन बातमे हुनक रुचि छनि–हमरा समझाउ ।'

एक दिन मंडल जी, गुप्ता जीसँ निवेदन केलखिन–'भाइजी, स्कूलक विद्यार्थी अहाँक अपने बच्चा थिक । ओकरा मोनसँ पढ़ायल करियौ ।'

गुप्ता जी तरङि उठलाह– 'अहाँ जुलुम करै छी औ महाराज । हमरा ई बुझाउ जे स्कूलक विद्यार्थी हमर अप्पन बच्चा कोना भेल ? हम की ककरो माय लग जा कए सूतल रहियै ?'

ठाकुर जी एहि बातकेँ कने दोसर अंदाजमे समझाबैत छथिन–'मजूर सभ कमाइ लेल पंजाब जाइए । जाइए की नै ? हमहूँ सभ अपन गाम-घर छोड़ि क' एहि परदेसमे कमाइ लेल आयल छी । आयल छी की नै ? आ कमाइ-शास्त्रक एकटा साधारण नियम थिक जे कम मेहनति क' कए बेसी पाइ अर्जित करबाक स्कोप ताकल जाय। अछि की नै ? तँ औ बाबू, हम सब से करैछी तँ कोन बेजाय ?'

मुदा, ई सत्य नहि थिक जे कोनहु शिक्षक कोनहु छात्रकेँ नहि पढ़बैत छथिन। बड़ जतनसँ मठाधीश आ यादवजी स्कूलक छात्रसभकेँ दू वर्गमे बाँटलनि । एहि लेल दीर्घगामी योजना बनल आ जोर-सोरसँ प्रयास भेल । पूर्ण सफलता तँ एखनहुँ नहि भेटल छनि, मुदा स्कूलक छात्रसभ आब बुझ' लागल छैक जे कोन टीचर हमर अप्पन थिकाह, कोन अदना । किनका प्रणाम करबाक अछि, आ किनका देखि क' व्यंग्य करबाक अछि । किनका क्लासमे हल्ला करबाक अछि, किनका चॉक मारबाक अछि।

एक दिनुका स्टाफ-मीटिंगमे सिंह जी बजलाह– 'बहुत दुखक बात थिक जे अहाँ लोकनि कोमलमति नेना सभक दिमागमे जहर भरि रहल छी । अहाँ सभ एहि देशक भविष्य चौपट क' रहल छी ।'

मठाधीश जबाब देलकनि–'ठीक छै । जँ हमसभ चौपट क' रहल छी, तँ अहाँ तिरपट करू । भारतक भविष्य-निर्माण करबासँ केयो अहाँकेँ रोकैए ?'

एक मीटिंगमे मंडल जी अपन क्षोभ व्यक्त कयलनि–'होनहार गाछ सभक जड़ि अहाँसभ काटि रहल छी । बड़ पाप हएत । नरक-भोग भोगै जाएब ।'

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

*   *   *

[illegible]

यादव जी जबाब देलकनि–'अहाँ नबका–नबका होनहार गाछ रोपू । के रौकैए। बचल नरक जेबाक गप्प, तँ अहाँ तँ स्वर्ग जेबे करब । चिट्ठी लिखैत रहब । स्वर्गक हाल–चाल मालूम होइत रहत ।'

से, एहि भावनाक सार्वजनिक अभिव्यक्ति तखन भेल, जखन सीनियर क्लासक विद्यार्थीसभकेँ फेयरवेल देल जयबाक छलैक । जे छात्रलोकनि एहि समारोहक आयोजक छलाह, ओहिमेसँ अधिकांश बैकवार्ड छलाह, आ तँ परम्परानुसार जखन एहि समारोहमे शिक्षकलोकनिकेँ आमंत्रित कयल गेल तँ सिंह जीकेँ छोड़ि एक्कोटा फोरवार्ड शिक्षक एहि समारोहमे नहि गेलाह । बहुत घोल–फचक्का मचल । सप्ताह भरि स्कूल अशान्त रहल । बहुत टेन्सन छल । लगैत छल कखनहु लाठी–लठौबलि भ' जायत । प्रिंसिपल चिन्तित भेलाह । एना जँ खुलेआम युद्ध सुरूह भ' जाय, तँ हुनकहु बचब कठिन भ' जयतनि । प्रिंसिपल बहुत मेंही लोक छथि । औ बैकवार्ड थिकाह, मुदा अपन बैकवार्ड होयबकेँ नुकबैत रहैत छथि । ओ अपनाकेँ आम शिक्षकसँ ऊपर मानैत छथि । आ तें, ओ नहि चाहैत छथि जे शिक्षकक लगाओल आगिमे प्रिंसिपल झरकय ।

बेर–बेर प्रिंसिपल पर आरोप लगाओल जाइत रहल अछि । की कारण अछि जे एन.सी.सी. ऑफिसरक पद बैकवार्डकेँ भेटल ? की कारण अछि जे एक्जामिनेशन–कनट्रोलर बैकवार्डकेँ बनाओल गेल ? की कारण अछि जे इन–सर्विस–कोर्समे बेर–बेर बैकवार्डकेँ पठाओल जाइत अछि ? मुदा, प्रिंसिपल बहुत मेंही छथि । किछु करबासँ पहिने ओ तर्क ताकि लेल करैत छथि । ओ बहुत सधल बजन्ता छथि । बाजि क' अहाँकेँ निरुत्तर क' देताह । एक बेर हुनकापर आरोप लागल–'अहाँक चैम्बरमे खाली बैकवार्ड टीचर सभ किए बैसैत अछि ?' ओ झट द' उत्तर देलनि–'जाहि फोरवार्डकेँ हम बैस'सँ मना केने होइयनि हुनका बजाउ । अरे मरदे, अहाँकेँ आत्मबल रहत, तखन ने हमरा लग आबि क' बैसब ? हिम्मति करै जाउ, हिम्मति करै जाउ........हिम्मति–मर्दे मद्दते–खुदा........'

मुदा, एहि फेयरवेलमे जखन फोरवार्ड टीचरलोकनि खुलेआम स्कूल–प्रशासनक दुर्गति कयलक तँ प्रिंसिपल थोड़ेक स्पष्ट भेलाह । मुदा, बहुत कम । एतेक कम जे बैकवार्ड नेता यादव जी आ किछु आन सदस्यक अतिरिक्त आन केयो प्राय: लक्ष्यो नहि क' सकलाह । हँ, बीच–बीचमे मठाधीश अवश्य चिकरैत रहलाह– 'हम तँ उड़ल कौआकेँ चिन्हैछी । सब जानैछी हम । एहि स्कूलक अन्त आब आबि गेल अछि। एहिठाम से हएत जे कहियो नै भेल छल......,

X X X

एहि स्कूलमे नओ गोट शिक्षिका सेहो छथि, आ हिनकालोकनिक मादे जँ नहि लिखल जाय, तँ ई खिस्सा अपूर्ण रहत । ई प्रक्रिया सुरूह होयबाक बहुत दिन बाद धरि महिलालोकनि महिलेलोकनि रहलीह, बादमे पुरुखाहि होब' लगलीह । एकटा छलीह–मधुच्छन्दा । छात्रजीवनमे दू-चारि गोट निबंध अखबार सभमे छपि चुकल छलनि । ओ नारीक सम्बन्धमे सोझरायल विचार रखबाक दावा करैत छलीह ! एक दिन महिला स्टाफ रूममे बजलीह–'नारी सभ दिनसँ गुलाम रहल अछि, आइयो अछि।

कतबो पढ़ि-लिखि ली, नारीक ई गुलामी एखनहु कहाँ टूटल अछि ! देखू संगीताजी, जैह पुरुख कहैए, सैह हमरा लोकनि मानैत रहबा लेल अभिशप्त छी। थोड़ेक ठंढा दिमागसँ सोचू मंजू मैडम, नारीक जे स्थिति बनल अछि, अपन अतमाक सप्पत कहू सुमन, की अहाँ अनुभव करैछी जे फोरवार्डक बहु 'फोरवार्ड' होइछै ? ओ 'ताड़नक अधिकारी' आ 'नरकस्य द्वारम्' नहि होइछै ?'

प्रतिवाद कयलथिन मंजु सिंह। कद्दावर महिला। लँबा कद। सोंटल पुष्ट शरीर। उमेर पैंतीसक आसपास। बहुत गरम मिजाज। ओ डाँटलनि मधुच्छन्दाकेँ। आजुक बाद चुप रहबाक हिदायत देलनि, नहि तँ बेजाय होयबाक धमकी। इहो कहलनि जे जँ बड़ बुधियारि छी तँ स्टाफ रूममे नहि बैसलि करू।

मंडल जी आ सिंह जीक दलक तेसर सदस्य भ' सकैत छलीह मधुच्छन्दा, मुदा से हिम्मति नहि जुटलनि। ओ परदेसी थिकीह। आ, मंजू सिंह राक्षसी थिक। ओ जे कहलक अछि, से क' गुजरत। मधुच्छन्दा एक्को शब्द बाजब बन्न क' देतीह।

संगीता देवी बैकवार्ड दलक अगुआ थिकीह। फोरवार्ड दलक नेत्री मंजू सिंहसँ हुनका बहुधा झड़प भ' गेल करैत छनि। ओ सह' नहि जनैत छथि। ओ विचारकेँ पचब' सेहो नहि जनैत छथि। एक दिन बहुत उग्र छलीह। बजलीह-'ई आब नै चलत। बहुत शोषण कयलक अछि फोरवार्ड सभ। पाँच हजार बरखसँ चुसलक अछि, आब किन्नहु नहि चलत। अय मंजू सिंह, हमरालोकनि जखन लालटेन जरबैत रही, तँ अहाँसभ तकरा कहियै ढिबरी। आ, अपन 'डिबिया' केँ साबित करियै पेट्रोमैक्स। हमर चाउर भेल मड़ुआ आ अहाँक मकइ भेल बदाम। आँखि खोलि क' देखि लेब मंजू सिंह, भारतक शोषित-पीड़ित जनता जल्दिए सिंहासनपर कब्जा करत, आ अहाँसभ टिटियाइते रहि जायब।'

मंजू सिंह चुप नहि रहलीह। मुदा हुनक स्वर कुटचालिसँ भरल रहैत अछि। हुनका हँसैए अबैत छनि। क्रोध आ मुस्कीक मणिकांचन योग हुनका थोड़-बहुत साधल छनि। ओ सहज भावसँ कहैत छथि-'अहाँ संगीता जी, अधैर्ज जुनि होउ ! जे होइत आएल अछि, सैह होइत रहत। अहूँ देखि लेब। हमर तँ स्पष्ट विचार अछि संगीता जी, जे अइ देसक लेल लोकतन्त्र यथार्थ वस्तु नहि थिक, ई सपना थिक, सपना। ई कोना भ' सकैत अछि जे अलग-अलग जाति आ संस्कारक दू आदमीकेँ एक्के समान दरजा देल जाय। सरकारकेँ देबाक होइ तँ दौक, मुदा ई समाजमे नै चलत। अहाँकेँ ई उक्ति नहि सुनल अछि संगीता जी 'सवा लाख से एक लड़ाऊँ।' तें, अहाँ जे सोचै छी से कहियो नहि हएत।'

एम्हर, किछु दिन पहिने एक दुखद घटना घटलैक। सुशीला देवीक पतिकेँ हार्ट अटैक भ' गेलनि। सुशीला जी बुजुर्ग छथि, आ फोरवार्ड दलक सदस्या छथि। ई खबरि जखन स्कूल आयल तँ बैकवार्ड दलक महिलासभ हँस' लगलीह। संगीता देवी बजलीह-'बुढ़िया बेसी दूहि लेने हेतैक बुढ़बाकेँ।' 'हे देखै नहि छियै, एहू उमेरमे ओ कतेक सेक्सी लगैत अछि। हाय रे टीप-टॉप !'

एहिना, एक बेर एकटा बैकवार्ड सदस्याक बालक आपसमे झगड़ा करैत आहत

भ' गेल। ओकर कपार फूटि गेलैक। ओ बेहोश भ' गेल। दर-दर खून बहैत रहलैक। ओहि द' क' फोरवार्ड-नेत्री मंजू सिंह गुजरलीह। नेनाकेँ देखलनि, चिन्हलनि आ चुपचाप अपन काजमे लागि गेलीह। सम्हारब तँ दूर, ककरो खबरि धरि नहि कयलनि।

मुदा, एकरे अहाँ कम बात नहि कहबैक जे एते भेलाक बादो महिलालोकनि एक्के स्टाफ रूममे बैसैत छथि। पुरुख सभमे तँ सेहो नहि रहल। स्टाफ रूम बैकवार्ड सभ दफानि लेलक। फोरवार्डलोकनि की तँ फिजिक्स-लैबमे बैसैत छथि, अथवा यत्र-तत्र। फिजिक्स लैबक इंजार्ज थिकाह मठाधीश। मठाधीश हुनक नामं नहि थिकियनि, उपाधि थिकियनि। हुनक नाम थिकनि सत्य प्रकाश मिश्र। दलक नेता होयबाक कारण हुनका मठाधीश कहल जाइत छनि। ओ बहुत दिनसँ ई उपाधि धारण कयने छथि। जानि नहि, पहिल बेर हुनका के एहि नामे बजौने होयतनि!

मठाधीश जमि क' ट्यूसन करैत छथि। पाँच हजार टाका महिना धरि कमा लैत छथि। ट्यूसन करबाक सभटा गुर हुनका अबैत छनि। जे छात्र हुनकासँ नहि पढ़त, तकरा पासे नहि होब' देताह। अटेन्डेन्स-फॉल करबा देथिन। परीक्षा रोकि देथिन। क्लासमे मुरगा बनौथिन। आ, तखन हुनक प्रिय शिष्य दलाललोकनि ओहि छात्रकेँ बुझौतनि जे सब दुखक एक्के इलाज अछि-हुनकासँ ट्यूसन पढ़ू।

मुदा, एम्हर एक विचित्र फिरिशानी आबि गेलनि अछि- मठाधीशकेँ। ओ फँसि गेलाह अछि। एही ट्यूसनक चक्करमे पछिला परीक्षामे ओ सीनियर क्लासक एक छात्रकेँ फेल क' देलनि। ओ नामी बदमास बैकवार्ड बहरायल। बैकवार्ड शिक्षकलोकनि ओहि छौंड़ाक पीठ पोछि देलथिन, आ आब ओ दू-चारि गुंडाक संग कत्तहु मठाधीशकेँ घेरि लैत अछि आ दस टा गारि पढ़ि दैत अछि। संभव थिक, कोनहु दिन मारि बैसय। कम शक्तिशाली नहि छथि मठाधीश, मुदा ओहि नबालिग गुंडा लोकनिसँ मुठभेड़क तागति हुनका नहि छनि। आ, परोक्ष रूपसँ एहिमे स्कूलक समस्त बैकवार्ड शिक्षकलोकनिक भूमिका सेहो छनि।

से, एम्हर फिरिशान आ भयभीत रह' लगलाह अछि मठाधीश, आ अपन आत्मबल पुख्ता करबाक निमित्त बीचबीचमे चिकरि देल करैत छथि-'एहि स्कूलक अन्त आब आबि गेल अछि। एहि ठाम से हएत, जे कहियो नहि भेल छल.......'

X X X

मुदा, एही वाक्यक प्रभाव कहू अथवा दुर्योगक चक्कर-एक दिन मठाधीशकेँ मारि लागिये गेलनि। ओ छौंड़ा दस-बारह टा गुंडाक संग आयल आ निज स्कूलक गेटपर मठाधीशकेँ थूड़ि देलकनि।

घटना जेना घटल, ताहि रूपमे नहि घटि क' थोड़ेक परिवर्तित रूपमे घटल रहैत तँ कदाचित् एतेक भयानक नहि होइत। जेना, ओ छौंड़ासभ स्कूल-गेटपर ई कांड नहि क' क' कतहु आन ठाम सून-बिसूनमे मठाधीशकेँ मारने रहितनि, तँ एकर एतेक दूरगामी प्रभाव नहि पड़ल रहैत। अथवा, स्कूल-गेटपर ई कांड होइत काल जँ पाँच-सात गोट बैकवार्ड शिक्षक उत्साहवर्द्धक बनल नहि रहितथि, तँ घटना एहन मोड़ नहि लैत।

अथवा, ओ छौंड़ासभ जँ अपनहि बलपर अपने अवयस्क बुद्धिसँ निष्कर्ष निकालि मठाधीशकेँ मारने रहितनि तँ कदाचित् एकरा ट्यूसन-धर्म-प्रभाव मानि क' ओ चुप भ' गेल रहितथि । मुदा दैवदुर्विवाकसँ एहिमे सँ कोनहु टा विकल्प घटित नहि भेल।

मारि खेलाक तीन दिन बाद धरि मठाधीश स्कूल नहि अयलाह । सी. एल. पर रहलाह । हुनका निवासपर प्रतिदिन भोर-साँझ फोरवार्ड शिक्षक सभक मिटिंग होइत रहल । रण-नीति तय कयल जाइत रहल । शिकार मारबाक योजना बनैत रहल । नव-नव प्रस्ताव आयल । क्रिया-प्रक्रियाक नीति तय कयल गेल । मेंही-सँ मेंही बिन्दुपर घंटो विचार-विमर्श होइत रहल ।

स्कूलमे एहि मध्य भयावह शान्ति पसरल रहल । बैकवार्ड-फौरवार्ड शिक्षक सभक मध्य सभ प्रकारक संवाद बन्न रहल-केयो ककरहुसँ गप्प धरि नहि करय । बैकवार्ड लोकनि सेहो संक्षिप्त मीटिंग कयल करथि, आ आगामी संकटसँ जुझबाक उपाय ताकल करथि । सभ केओ जनैत छल जे किछु भयंकर होयबाक अछि, मुदा की होयबाब अछि, से केयो नहि जनैत छल ।

चारिम दिन जखन मठाधीश स्कूल अयलाह, तँ ओ एकदम्म सामान्य छलाह । हुनका मुखमंडलपर वैह तेज आ ठोरपर वैह हँसी व्याप्त रहनि । ओ क्लासो गेलाह। जेना कि सूचना अछि, छात्रलोकनिकेँ 'पढ़ेबो' कयलनि । मुस्किया-मुस्किया क' ओ कैक गोटेसँ गप-सप कयलनि । हुनक ई रूप देखि क' बैकवार्ड सभ चौकस भ' गेलाह । एतेक मारि खाइयो क' मठाधीश सामान्य अछि, आ मुस्किया रहल अछि-जरूर कोनो अनहोनी होयबाक अछि । बैकवार्डलोकनि शिकारी बिलाड़ जकाँ चौकस भ' गेलाह-अन्दाज लगब' लगलाह जे ओ अनहोनी की भ' सकैत अछि, आ निर्णय कर' लगलाह जे ओहि अनहोनीक काट की भ' सकैत अछि !

दैनिक अध्यापन-धर्मक पालन कयलाक पछाति मठाधीश प्रिंसिपलक चैम्बरमे ढुकलाह । बहुत स्नेहिल मुस्कीक संग नमस्कार कयलनि, आ एकटा दरखास्त बढ़ा देलनि । ओहि दरखास्तमे लिखल रहैक जे बैकवार्ड दलक किछु शिक्षकसभ जातीय द्वेषक कारण हुनकर बेइज्जती कयलकनि अछि, मारलकनि अछि, आ से स्कूल-कैम्पसमे भेल अछि, तें एहि शिक्षकसभपर विभागक दिससँ अनुशासनात्मक कार्रवाइ कयल जाय, आ एकर सूचना कार्यालयीय स्तरपर पुलिसकेँ सेहो देल जाइक।

प्रिंसिपल बजलाह-'घटनाक सम्बन्धमे अहाँ जे विवरण देने छी, से तँ सत्य नहि अछि।'

मठाधीश बजलाह-'घटना हमरा संग घटल अछि, तें हम जे विवरण देब, सैह टा सत्य भ' सकैत अछि ।'

प्रिंसिपल पुछलथिन्-'केयो गबाह अछि ?'

मठाधीश बजलाह-'एक-दू नहि, बाइस गोट टीचर गबाह छथि-प्रत्यक्षदर्शी गबाह.....।'

प्रिंसिपल एक क्षणक लेल चुप भेलाह, तखन कहलथिन-'मुदा, हम विभागीय कार्रवाइ नहि क' सकै छी, आ ने एहि लेल ऊपर लिखि सकैत छी, कारण हम नीक

जकाँ जनै छी जे अहाँक विवरण शत-प्रतिशत फूसि अछि । आ दोसर बात ई घटना स्कूल-कैम्पसमे नहि, नगरपालिकाक सड़कपर घटल अछि । जहाँ धरि पुलिसकेँ खबरि करबाक बात अछि, सेहो हम नहि करब । करबाक हो तँ अहाँ स्वयं करू....।'

'देखू सर !', मठाधीश बजलाह–'अहाँक इमन्दारी पर विश्वास क' क' हम एखन धरि पुलिस केस नै कयलहुँ अछि ।'

नहि 'अहाँ गलत कहै छी । पुलिस केस जँ अहाँ नै केलहुँ अछि, तँ तकर कारण हमर इमन्दारीपर विश्वास नै थिक । तकर असली कारण ई थिक जे पुलिस आ न्यायालयक काज अहाँ स्वयं कर' चाहै छी ।'

मठाधीश हँस' लगलाह । वेह रावण-टाइप हँसी । हँसैत-हँसैत बजलाह–'वंडरफुल सर ! अहूँ उड़ल कौआकेँ खूब चिन्हैत छी ।'

'नहि मठाधीश जी, उड़ल कौआकेँ तँ अहाँसभ चिन्हैछी । हमरालोकनि तँ मुइल कौआकेँ चीन्हि लेल करै छी ।'

बैकवार्ड प्रिंसिपलक ई तीक्ष्ण व्यंग्य-बाण मठाधीशकेँ बेधि देलकनि । मुदा, ओ मुस्कियाइत रहलाह । बजलाह–'सर, अहाँ हमर केसकेँ सीरियसली नहि ल' रहल छी । अहाँपर बैकवार्ड दलक फेभर करबाक चार्ज आबि सकैत अछि ।'

प्रिंसिपल चट द' जवाब देलथिन–'चार्ज जँ आबिये जाय तँ हम की क' सकै छी ?'

मठाधीश किछु बेसी उन्मुक्तताक संग मुस्कियाइत जवाब देलथिन–'एहना स्थितिमे सर, जँ पुलिस आ न्यायालयक भूमिका निमाहैत हमरालोकनि अहूँकेँ दण्डक अधिकारी बूझी, तँ दोख नहि देब ।'

X X X

मठाधीशक संग घटल एहि घटनासँ जँ केयो एक व्यक्ति सभसँ दुखी आ क्रोधित छल, तँ से छली फोरवार्ड दलक महिला अध्यक्षा मंजू सिंह । ओ साक्षात् दुर्गा बनलि छथि। हुनका मोन-मिजाजमे एक्के टा बात चौबीसो घंटा घुरियाइत रहैत छनि जे एकर बदला कोना चुकाओल जाय ! ओ प्रतिहिंसाक धुधुआइत आगिमे जरि रहलि छथि, व्याकुल छथि आ बदला लेबाक हेतु किछुओ क' सकबाक हूतु तैयार छथि ।

मंजू सिंहकेँ ई घटना किऐक एतेक मथि देलकनि, तकरा संबंधमे एक्के टा बात कहल जाइछ जे मठाधीशसँ हुनक अति निकट मधुर संबंध छलनि ।

आब सबाल छल जे बदला ककरासँ लेल जाय? मंजू सिंह मठाधीशसँ पुछैत छथिन्ह–'ककरासँ ?'

मठाधीश कहैत छथिन–'एक दिन थम्हि जाउ ।'

दोसर दिन मंजू सिंह पुछलथिन–'ककरासँ ?'

मठाधीश थोड़ेक गंभीर होइत कहलथिन–'एक दिन आर थम्हि जाउ ।'

मंजूक फेर प्रश्न–'ककरासँ ? कहिया ? '

मठाधीशक फेर उत्तर–'एक दिन आर.......।'

एहिना एक सप्ताह बीति गेलैक । मठाधीश एखनहु नहि कहलथिन–'ककरासँ। हुनका एक गोटेक प्रतीक्षा छनि । ओ आबि जाय, तखने किछु करब उचित होयत। ओ व्यक्ति थिक बैकवार्ड दलक नेता–यादव जी ।

यादव जी एखन छुट्टीपर छथि । गाम गेलाह अछि । हुनक प्रतीक्षा छनि मठाधीशकेँ । ओ चाहैत छथि जे एक्के तीरमे ओ अपन सभटा प्रमुख शिकारकेँ मारि खसाबथि। आर सभ छथि । यादव जी नहि छथि । मठाधीश हुनक प्रतीक्षामे छथि।

बारह दिन बीति गेल । आगि सेरायल जाइत अछि । मंजू ठंढा जेतीह तँ सभ गड़बड़ भ' जायत–मठाधीश सोचैत छथि, आ मंजू सिंहकेँ कहैत छथि–'अथ शुभारम्भः ।'

मंजू सभ योजना बना चुकलीह अछि । अपन हथियार ताकि चुकलीह अछि। हुनक हथियार थिकियनि–दशम कक्षामे पढ़' बाली सोलह बरखक एकटा कन्या-श्वेता सिंह । कहब आवश्यक जे स्कूलक अस्सी प्रतिशत छात्रा सभपर मंजू सिंहक अद्‌भुत पकड़ छनि । मंजू मैडम जे कहती, स्कूलक अधिकांश छात्रा सैह करतीह । बैकवार्ड दलक छात्रासभ सेहो मंजू मैडमकेँ इग्नोर नहि क' सकैत अछि ।

श्वेते सिंहकेँ किएक हथियार बनाओल गेल–तकर पहिल कारण तँ ई जे ओ फोरवार्ड दलक छात्रा अछि, दोसर ई जे ओकरामे नाटक करबाक अद्‌भुत क्षमता छैक। स्कूल छात्रक राष्ट्रीय नाटक प्रतियोगितामे ओ पुरस्कार जीति चुकलि अछि ।

आ निज चौदहम दिन भोरे श्वेता सिंहकेँ संग लेने मंजू मैडम एस. पी. लग उपस्थित भेलीह आ एस. पी. सँ श्वेता कानि-कानि क' , करुणाद्र भ' क', शोचनीय मुद्रा बना क' विलाप क', क' कहलक–'हमरा संग सामूहिक बलात्कार कयल गेल अछि।'

आ बलात्कारी शिक्षक सभ भेलाह–प्रिंसिपल, मंडल जी, गुप्ताजी आ सिंह जी। सिंह जी आ मंडल जी एहि दुआरें जे ओ ने बैकवार्ड छलाह, ने फोरवार्ड । मठाधीश जकाँ मंजू सिंहकेँ सेहो ई कचोट छैक जे बैकवार्ड नेता यादव एखनहु छुट्टीपर अछि ।

एस. पी. एक्शनमे अयलाह । मंजू मैडमकेँ कहल गेलनि जे आब श्वेताक मेडिकल टेस्ट होयत ।

मंजूकेँ सभ बूझल छलनि । मुदा, अबोध श्वेताकेँ से नहि बूझल रहैक ।

मंजू सभ तैयारी क'-क' राखने छलि ।

एस. पी. केँ कहल गेलनि जे श्वेता बहुत कनैत अछि । बहुत दुखी अछि । बहुत दर्दमे अछिं । मेडिकल टेस्टसँ पहिने एकरा कम-सँ-कम आधा घंटाक रेस्ट देल जाइक।

एस. पी. मानि गेलाह । मंजूक लेल इयैह आध घंटा कठिन परीक्षाक काल छल।

अबोध श्वेताकेँ पहिने समझाओल गेल जे मेडिकल टेस्टमे असत्य साबित भेलापर

की-की सभ भ' सकैछ ? ओकरा बताओल गेल जे जखन ओ बदनाम भइये चुकल अछि, तँ एहीमे कोन हर्ज ? तखन, रिक्शापर ओकरा उत्तेजक गप्प सभ कहल गेल। संवेदनशील अंग सभकेँ भोम्हरल गेल । श्वेताक लेल ई सभ नव छलैक । ओ तैयार भ' गेलि ।

मैडमक घरमे दू गोट युवक पहिनहिसँ उपस्थित छल । ओ दूनू फोरवार्ड छल। ओकर फोरवार्ड होयब दू कारणसँ जरूरी बुझल गेल—पहिल तँ ओ एकरा अपन पवित्र जाति-रक्षा-धर्म बूझि क' मिशनरी स्तरपर सम्पन्न करत, दोसर ई सम्पूर्ण वृत्त अन्त धरि गुप्त रहत ।

मेडिकल टेस्ट भेल । पुलिस स्कूलमे छापा मारलक । प्रिंसिपल आ मंडल जी गिरफ्तार क' लेल गेलाह । सिंह जी ओहि दिन सी. एल. मे छलाह, डेरापर हेताह। पुलिस हुनक डेरा ताकय चलि गेल ।

श्वेता सिंहक पिता वीरेन्द्र सिंह पैघ लोक छलाह । सम्पत्तिवान आ लठिगर । अपन पुत्री संग भेल ई घटना हुनका बताह क' देलकनि । ओ बन्दूक बहार कयलनि आ विदा भेलाह—जुलुम तामस आ आगिमे धधकैत । बाटमे पता लागि गेलनि जे प्रिंसिपल आ मंडल गिरफ्तार भ' चुकल अछि । वीरेन्द्र सिंह सिंह जीक ओतय विदा भेलाह । एक-एक मिनटक समय रोमांच सँ भरल बीति रहल छल ।

पुलिसकेँ पहुँचबासँ पहिनहि श्वेताक पिता ओतय पहुँचि चुकल छलाह । एक सिंह जी दोसर सिंह जीकेँ गोली मारि देने छलथिन । आ, खूनसँ लथपथ लहास आ कनैत-खिजैत घरबैयाकेँ छोड़ि ओही क्रोधमे अपना घर दिस बिदा भ' चुकल छलाह। पुलिस हुनकहु पकड़ि लेलकनि ।

साँझ पड़ि गेल छल । अन्हरिया पखक कारी साँझ । जानि नहि कैक टा घर उजड़ि चुकल रहैक । ओह, केहन पतझड़ छैक आ केहन दारुण स्वरमे कुहकि रहल अछि कोइली । ओह......।

एही अन्हार साँझमे मंजू मैडम श्वेता सिंहक निवासपर अयलीह । हुनका देखितहि सभ केयो चीत्कार कर' लगलीह ।

बड़ी काल धरि ओतय रहलीह मैडम । बिच्चहिमे एक बेर एकान्त पाबि श्वेताकेँ निर्देश देलथिन—'जे भेल तकर उपाय ताकल जेतै । मुदा, बातकेँ गुप्ते राखिहें । एहीमे तोहर खानदानक कुशल छहु !'

श्वेता कान' लागलि । जानि नहि किऐक कान' लागलि । किछु क्षणक बाद जखन ओ चुप भेलि तँ मंजू सिंहसँ कहलक—'मैडम, अहाँ तँ कहने रहियै जे ओ सभ निरोध लगा क' करत । मुदा मैडम, से तँ ओ सभ नहि केलक । आब जँ किछु भ' जाय तखन ....?'

आ मैडम हँस' लगलीह—'बताहि छह तों श्वेता ! निरोध लगा क' जँ ओ सभ करितय, तँ मेडिकल टेस्ट सफल कोना होइतै ?'

श्वेता फेर कान' लागलि । मैडम मुस्किएलीह । ❒



तारानन्द वियोगी

1979 मे पहिल रचना 'मिथिला मिहिर' मे प्रकाशित भेलनि । पहिल पोथी **'अपन युद्धक साक्ष्य'** (गजल संग्रह) 1991 मे प्रकाशित। अन्य पुस्तक **'हस्तक्षेप'** (कविता-संग्रह), **'अतिक्रमण'** (कथा-संग्रह) तथा **'शिलालेख'** (लघुकथा-संग्रह)। रमेशक संग सम्पादित कथा-संग्रह **'श्वेतपत्र'** विशिष्ट मानलगेल । राजकमल चौधरीक कथाकृति **'एकटा चंपाकली एकटा विषधर'** क संपादन कयलनि।

साहित्यो काल हिन्दी मे लिखैत छथि । अपन हिन्दी कविताक लेल 1995 मे **'मुक्तिबोध पुरस्कार'** सँ सम्मानित । मैथिलीक श्रेष्ठ साहित्य केँ राष्ट्रीय धरातल पर अनूदित-प्रसारित करबा मे विशेष रूचि। पं० गोविन्द झाक महत्वपूर्ण उपन्यास **'भनहि विद्यापति'** तथा **'मैथिली की प्रतिनिधि कहानियाँ'** अनूदित-संपादित । एक संपादित कृति **'राजकमल चौधरी : सृजन के आयाम'** । समय-समय पर मैथिली-हिन्दी मे कैक गोट पत्रिका संकलनक/संपादन कयलनि । किछु रचना **बंगला, तेलुगू, अंग्रेजी** मे अनूदित भेलनि अछि ।

12 मई 1966 केँ महिषी (सहरसा) मे जन्म । पिता श्री बद्री महतो, माता श्रीमती बदामी देवी । 1981 मे श्रीमती कर्पूर सँ विवाह। दू पुत्र नीलाभ पंकज आ सुरमय रंजन छनि ।

संस्कृत साहित्य मे आचार्य, एम० ए०, पी-एच० डी० आदि कयलाक पछाति केन्द्रीय विद्यालय मे अध्यापक भेलाह । सम्प्रति बिहार प्रशासनिक सेवा मे राजस्व अधिकारी।

स्थायी सम्पर्क—**महिषी, सहरसा**—852216



तारानन्द वियोगी

1979 मे पहिल रचना 'मिथिला मिहिर' मे प्रकाशित भेलनि। पहिल पोथी **'अपन युद्धक साक्ष्य'** ([illegible]) 1991 मे प्रकाशित। अन्य पुस्तक **'हस्तक्षेप'** (कविता-संग्रह) [illegible] गाथा' (कथा-संग्रह) तथा **'शिलालेख'** (लघुकथा-संग्रह) [illegible] क संग सम्पादित कथा-संग्रह **'श्वेतपत्र'** विशिष्ट [illegible] राजकमल चौधरीक कथाकृति **'एकटा चंपाकली एकटा विषधर'** क संपादन कयलनि।

कहियो काल हिन्दी मे लिखैत छथि। अपन हिन्दी कविताक लेल वर्ष 1995 मे **'मुक्तिबोध पुरस्कार'** सँ सम्मानित। मैथिलीक श्रेष्ठ साहित्य केँ राष्ट्रीय धरातल पर अनूदित-प्रसारित करबा मे विशेष रूचि। पं० गोविन्द झाक महत्वपूर्ण उपन्यास **'भनहि विद्यापति'** तथा **'मैथिली की प्रतिनिधि कहानियाँ'** अनूदित-संपादित। एक संपादित कृति **'राजकमल चौधरी : सृजन के आयाम'**। समय-समय पर मैथिली-हिन्दी मे कैक गोट पत्रिका संकलनक/संपादन कयलनि। किछु रचना **बंगला, तेलुगू, अंग्रेजी** मे अनूदित भेलनि अछि।

12 मई 1966 केँ महिषी (सहरसा) मे जन्म। पिता श्री बद्री महतो, माता श्रीमती बदामी देवी। 1981 मे श्रीमती कर्पूर सँ विवाह। दू पुत्र नीलाभ पंकज आ सुरमय रंजन छनि।

संस्कृत साहित्य मे आचार्य, एम० ए०, पी-एच० डी० आदि कयलाक पछाति केन्द्रीय विद्यालय मे अध्यापक भेलाह। सम्प्रति बिहार प्रशासनिक सेवा मे राजस्व अधिकारी।

स्थायी सम्पर्क—**महिषी, सहरसा—852216**